ISSN 2349-6614

फरवरी 2023

मूल्य 50 रु

प्रत्यूष

हिन्दी मासिक पत्रिका

ओम तत्पुरुषाय
विद्महे महादेवाय
धीमहिं तन्नो
रुद्रा प्रचोदयात्

उदयपुर कलेक्टर तारावंद मीणा को 'मानगढ़ धाम गौरव पुरस्कार' प्रदान करते मुख्यमंत्री अशोक गहलोत

vedanta
transforming for good

HINDUSTAN ZINC
Zinc & Silver of India

हिन्दुस्तान ज़िंक

की ओर से आपको और आपके परिवार को

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ

हम आज़ादी के 75 वर्ष पूरे होने पर अमृत महोत्सव मना रहे हैं,
हिन्दुस्तान ज़िंक हमारे दैनिक जीवन के प्रत्येक तत्व में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हुए,
मजबूत राष्ट्र निर्माण हेतु प्रतिबद्ध है

Hindustan Zinc Limited
Yashad Bhawan, Udaipur -313004 Rajasthan, India
T: +91 294 6604000-20 | www.hzlindia.com

www.facebook.com/HindustanZinc
www.linkedin.com/company/hindustanzinc
www.instagram.com/hindustan_zinc
www.twitter.com/Hindustan_Zinc
www.twitter.com/CEO_HZL

फरवरी 2023 वर्ष: 20, अंक: 10

प्रत्यूष

मूल्य 50 रू
वार्षिक 600 रू

'प्रत्यूष' के प्रेरणा स्रोत मात श्रीमती प्रमिला देवी शर्मा एवं
तात श्री आनन्दी लाल जी शर्मा
प्रत्यूष परिवार का शत्-शत् नमन चरणों में पुष्प समर्पण

अंदर के पृष्ठों पर...

सामयिक
बढ़ती आबादी को साधन बनाएं
पेज 06

प्रदूषण

फेफड़ों के जरिये दिमाग तक पहुंच रहा ज़हर
पेज 10

सम्मान

आदिवासी क्षेत्रों के समग्र विकास का संकल्प
पेज 18

मेवाड़ गौरव
सियाचीन की बर्फ पर शिवा के कदम
पेज 14

स्मृति शेष
थम गई लय, बिखर गए घुंघरू
पेज 20

शोध

विलुप्ति के कगार पर 42,000 प्रजातियां
पेज 32

प्रधान सम्पादक विष्णु शर्मा हितैषी

सम्पादक रेणु शर्मा

विपणन प्रबंधक नितेश कुमार, नंदकिशोर मदन, भूमिका, उषा चन्द्रप्रभा, संगीता

टाइप सेटिंग जगदीश सालवी

सलाहकार मण्डल
गोपाल शर्मा (गोपजी), वैभव गहलोत
पवन खेड़ा, नीरज डांगी
कुलदीप इंदौरा, कृष्णकुमार हरितवाल
धीरज गुर्जर, अभय जैन
लालसिंह झाला, ओम शर्मा
अजय गुर्जर, आदित्य नाग
हेमंत भागवानी, डॉ. राव कल्याणसिंह
अशोक तम्बोली, सुंदरदेवी सालवी

चीफ रिपोर्टर : उमेश शर्मा

जिला संवाददाता
बांसवाड़ा - अनुराग चेलावत
चित्तौड़गढ़ - संदीप शर्मा
नाथद्वारा - लोकेश दवे
डूंगरपुर - सारिका राज
राजसमंद - कोमल पालीवाल
जयपुर - राव संजय सिंह
मोहसिन खान

प्रत्यूष में प्रकाशित सामग्री में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं, इनसे संस्थापक-प्रकाशक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।

प्रत्यूष
हिन्दी मासिक पत्रिका

प्रकाशक - संस्थापक :
Pankaj Kumar Sharrma
''रक्षाबंधन'', धानमण्डी, उदयपुर-313 001

कार्यालय पता : 2, 'रक्षाबन्धन' धानमण्डी, उदयपुर (राज)
दूरभाष एवं फैक्स: 0294-2427703 वाट्सएप 9414077697
मोबाइल : 94141-57703(विज्ञापन), वाट्सएप 75979-11992(समाचार-आलेख), 98290-42499(वाट्सएप), 94141-66737
Email:pankajkumarsharma2013@gmail.com, Visit us at: www.pratyushpatrika.com

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, संस्थापक, स्वामी पंकज शर्मा की ओर से मुद्रक आशीष बापना द्वारा मैसर्स पायोनाइट प्रिन्ट मीडिया प्रा. लि. एम.आई.ए., उदयपुर से मुद्रित तथा 'रक्षाबन्धन' धानमण्डी उदयपुर से प्रकाशित।

Sandeep
Director
94142 45355

Kapil, Director, 77377 07447

D.S. Paneri
Director
92146 88612

Sleepwell

Quality in Reasonable Price

All Kind of Home Furniture

शुभम् फर्नीचर प्लाजा व मानसी फर्निशिंग एंड डेकोर

An ISO 9001-2008 Certified Co.

Tekri Madri Main Road, Near 100 Fit Subcity Centre Road, Udaipur (Raj.)
E-mail: shubham.furnitureplaza@gmail.com

हार्दिक शुभकामनाओं के साथ

भारत टेंकर ट्रांसपोर्ट कम्पनी

प्रोपराईटर : पंडित लक्ष्मीनारायण गौड़

पण्डित एण्ड संस कोन्ट्रेक्टर्स

सभी प्रकार के एसिड व केमीकल के ट्रांसपोर्टेशन का कार्य टेंकरों द्वारा समस्त भारत में करते हैं।
भारी मशीनरी व एक्सीडेन्टल गाड़ियों को उठाने के लिये क्रेनें हर समय उपलब्ध रहती हैं।
हैवी अर्थमूविंग मशीनें (टाटा-हिटाची, एल. एण्ड टी.-सी.के.-90, पोकलेन, डोजर, डम्पर) किराये पर उपलब्ध हैं।

35–ए, सेन्ट्रल एरिया, आवरी माता मंदिर के सामने, उदयपुर (राज.)
दूरभाष : 2584501, 2583334 (ऑ.) 2584502 (नि.) केबल : पंडित जी

ब्रांच : बडौदा, वापी, अंकलेश्वर

फिर बिछी चुनाव की चौसर

वैसे तो साल भर किसी न किसी तरह की चुनावी तैयारियां होती रहती हैं, लेकिन इस साल नौ राज्यों और उसके बाद 2024 में लोकसभा चुनावों के दृष्टिगत 2023 हर राजनैतिक दल विशेषकर भाजपा और कांग्रेस के लिए अत्यंत व्यस्त और महत्वपूर्ण कहा जा सकता है। नेताओं ने चश्मा चढ़ाकर कैलेण्डर को उलटना-पलटना शुरू कर दिया है, ताकि वे अपना टाइम-टेबल इस तरह तय कर सकें कि निजी और व्यावसायिक कार्य भी आसानी से निबटा सकें। ऐसा करना उनके लिए इसलिए जरूरी है कि कई नेताओं को लम्बी अवधि के लिए चुनावी राज्यों में डेरा डालना पड़ेगा। इस बीच संसद व विधानसभाओं के सत्र भी होंगे।

साल 2024 में होने वाले लोकसभा चुनाव के पहले चालू वर्ष राष्ट्रीय राजनीति के लिए बहुत निर्णायक रहने वाला है। इस साल फरवरी से दिसम्बर के बीच मेघालय, नगालैंड, त्रिपुरा, कर्नाटक, छत्तीसगढ़, मध्यप्रदेश, मिजोरम, राजस्थान और तेलंगाना विधानसभाओं के चुनाव होने हैं। चुनाव आयोग के अनुसार त्रिपुरा में 16, नगालैंड व मेघालय में 27 फरवरी को मतदान होगा और 2 मार्च को परिणाम घोषित किए जाएंगे।

पिछले वर्ष दिसम्बर में गुजरात, हिमाचल और एमसीडी के चुनावों के ठीक 2 माह बाद तमाम राजनैतिक दल एक बार फिर अपनी-अपनी रणनीति के साथ चुनाव मैदान में उतरने वाले हैं। भारतीय लोकतंत्र की इसे विशेषता मानें या कमी कि जनता हमेशा किसी न किसी चुनाव में व्यस्त रहती है। नववर्ष की दूसरे ही माह में पूर्वोत्तर के सात राज्यों में से तीन में चुनावी रण सजने लगा है। इनमें से त्रिपुरा को भारतीय जनता पार्टी ने प्रचंड बहुमत के साथ जीता था, पर मेघालय और नगालैण्ड में उसकी सरकारें उसके कुशल राजनैतिक 'प्रबंधन' की ही देन थीं। मेघालय में कांग्रेस 21 सीटें जीतकर सबसे बड़ी पार्टी के तौर पर उभरी थी, मगर सरकार बनाने से चूक गई। त्रिपुरा में वामदलों की सन् 2018 में भी जीत पक्की मानी जा रही थीं, वहां माणिक सरकार जैसा ईमानदार छवि का नेता मुख्यमंत्री था। पिछले 25 वर्षों से वहां वामदल अपनी सरकार बनाए बैठे थे, लेकिन उनका किया- दिया चुनाव परिणामों ने मटियामेट कर दिया। भारतीय जनता पार्टी ने यहां बहुमत के जादुई आंकड़े 31 से अधिक 35 सीटें हासिल कर तहलका मचा दिया। कांग्रेस यहां एक भी सीट हासिल नहीं कर सकी। उसे एक बार फिर अस्तित्व की लड़ाई मुस्तैदी से लड़नी होगी।

राजस्थान में भी हिमाचल प्रदेश की तरह नेतृत्व परिवर्तन की परम्परा रही है। लेकिन जिस तरह से यहां भाजपा कई गुटों में बंटी आपसी खींचतान की शिकार है, उसे देखते हुए राजनीति के चतुर खिलाड़ी-जादूगर मुख्यमंत्री अशोक गहलोत इस परम्परा पर विराम लगा दें तो आश्चर्य नहीं। सन् 2018 में कांग्रेस ने यहां बीजेपी से सत्ता छीनी थी। उसके पहले 2013 में भाजपा ने कांग्रेस से यहां की सत्ता छीनी थी और 200 में से 163 सीटों पर जीत का परचम फहराया था। दोनों ही बार वसुंधरा राजे मुख्यमंत्री रहीं लेकिन उनके दूसरे कार्यकाल में न सिर्फ जन-मन में उनके प्रति नाराजगी दिखाई दी बल्कि पार्टी और सरकार में वरिष्ठ नेताओं की भी उनसे अनबन रही। अब तक भी यह तय नहीं है कि भाजपा यहां चेहरे के साथ मैदान में उतरेगी।

छत्तीसगढ़ में 2018 में कांग्रेस ने भाजपा का सूपड़ा साफ कर दिया था। जब उसने 90 में से 68 सीटे जीतकर भाजपा के 15 साल के शासन को समाप्त कर दिया। मध्यप्रदेश में जीतकर भी कांग्रेस को सरकार खोनी पड़ी थी। ज्योर्तिरादित्य सिंधिया के साथ दर्जनभर से ज्यादा विधायकों के भाजपा से जा मिलने के बाद भी कांग्रेस वहां अब भी काफी ताकतवर है। हालांकि दिग्विजय सिंह और कमलनाथ जैसे वरिष्ठ नेताओं में यहां समन्वय व वाणी संयम जरूरी होगा।

कर्नाटक में सत्तारूढ़ भाजपा विंध्य के दक्षिण के अपने मज़बूत सियासी किले में मई में होने वाले चुनाव में पूर्ण बहुमत के साथ वापसी की रणनीति में जुटी है तो कुछ राज्यों की सत्ता तक सिमटी कांग्रेस कर्नाटक में जीत के सहारे राष्ट्रीय फलक पर वापसी की दस्तक देने को तैयार खड़ी है। दोनों राष्ट्रीय दलों के सत्ता संघर्ष के बीच जनता दल-एस तीसरी ताकत के तौर पर उभरने और किंगमेकर बनने की कोशिश में जुटा है। संभावित सत्ता विरोधी लहर का मुकाबला करने के लिए भाजपा वोक्कालिंगा बहुल पुराने मैसूरू क्षेत्र में नई राजनैतिक जमीन तलाशने की कोशिश में जुटी है। इस क्षेत्र में अभी तक कांग्रेस व जनता-एस का दबदबा रहा है। यहां राहुल गांधी की भारत जोड़ो यात्रा को अच्छा समर्थन मिला था। जहां तक तेलगांना का सवाल है, वहां अभी चुनाव में देरी है, दिसम्बर में होने वाले चुनाव के लिए भाजपा व कांग्रेस को हालांकि अभी से अपनी रणनीति कायम कर काम शुरू करना होगा क्यों कि ये दोनों ही दल वहां कमजोर हैं। टीआरएस की पकड़ अच्छी है। मुख्यमंत्री के चन्द्रशेखर राव ने अभी से लोगों में पैठ मजबूत करने की दृष्टि से कल्याणकारी योजनाओं के नाम पर नि:शुल्क सुविधाओं का झुनझुना बांटना शुरू कर दिया है। नौ राज्यों के इन विधानसभा चुनावों को अगले साल होने वाले लोकसभा चुनावों का सेमीफाइनल भी कहा जा सकता है। लेकिन लोकसभा चुनावों के नतीजे सेमीफाइनल के उलट भी हो सकते हैं। दिल्लीके बाद पंजाब में अपनी सरकार बनाने वाली आम आदमी पार्टी ने एमसीडी से भाजपा को बाहर कर दिया है और गुजरात में पहली बार उपस्थिति दर्ज कराई है। ऐसी स्थिति में कांग्रेस-भाजपा दोनों को इससे लोहा लेने के लिए भी माकूल रणनीति पर काम करना होगा, अन्यथा ये खेल बिगाड़ सकती है। कांग्रेस को राहुल गांधी की भारत जोड़ो यात्रा से जहां अपेक्षाएं हैं, वहीं उसे राज्यों में नेताओं के आपसी टकराव को भी रोकना होगा। विपक्ष एकदम कमजोर है, यह लोकतंत्र के लिए ठीक नहीं है। एक मजबूत विपक्ष की कवायद पर भी अपने-अपने स्वार्थ त्याग कर सोचना समय की मांग है।

बढ़ती आबादी को साधन बनाएं

अमित शर्मा

विश्व की आबादी का आंकड़ा आठ अरब तक पहुंच गया है। बढ़ती जनसंख्या चुनौती है, तो अवसर भी। दरअसल अगर यही आबादी साधन बन जाए तो एक देश के लिए इससे बड़ा अवसर और कोई नहीं, लेकिन अगर यह आबादी जिम्मेदारी या बोझ बनने लगे तो चुनौती ही साबित होती है। हम मानव सभ्यता के विकास का असली उत्सव तभी मना सकेंगे, जब पर्यावरण के साथ संतुलन बिठाते हुए सबको स्वास्थ्य, शिक्षा, पौष्टिक आहार व बुनियादी सुविधाएं उपलब्ध करा सकें।

संयुक्त राष्ट्र के अनुसार विश्व की आबादी का आंकड़ा आठ अरब तक पहुंच गया है और इस साल के अंत तक भारत आबादी के मामले में चीन को भी पीछे छोड़कर दुनिया का सबसे अधिक आबादी वाला देश बन सकता है। जिस वक्त आबादी ने इस विराट आंकड़े छुआ है वैश्विक अर्थव्यवस्था महामारी की मार से उबरने के लिए जद्दोजहद कर रही है और एक विशाल आबादी बढ़ती महंगाई व गहराते खाद्यान्न संकट से जूझ रही है। भारत आबादी के मामले में चीन को पीछे छोड़ने की स्थिति में पहुंचता है तो यह कोई उपलब्धि की बात नहीं होगी, बल्कि भारत के लिए चुनौती ही खड़ी करेगी। इस चुनौती का मुकाबला करने के लिए अपनी आबादी के नियोजन के लिए तत्काल प्रभाव से ठोस प्रयासों की जरूरत है। हमारी आबादी का एक बड़ा हिस्सा युवाओं का है, इसलिए इसके लिए विशेष उपाय करने होंगे कि उन्हें समुचित शिक्षा और रोजगार के पर्याप्त अवसर मिलें। इसी तरह कृषि क्षेत्र पर भी ध्यान देना होगा।

हालांकि विगत दशकों में विभिन्न योजनाओं के माध्यम से नए रोजगार जुटाने के कार्यक्रम चलाए गए, लेकिन बढ़ती आबादी के कारण ये सभी ऊंट के मुंह में जीरा ही साबित हुए। बढ़ती जनसंख्या के कारण ही देश में आबादी और संसाधनों के बीच असंतुलन बढ़ रहा है। तेजी से बढ़ती आबादी के कारण ही हम सभी तक शिक्षा और स्वास्थ्य जैसी बुनियादी जरूरतों को पहुंचाने में पिछड़ रहे हैं। इसलिए जनसंख्या नियंत्रण कार्यक्रमों की सफलता के लिए सर्वाधिक जरूरी यही है कि घोर निर्धनता में जी रहे लोगों को परिवार नियोजन कार्यक्रमों के महत्व के बारे में जागरूक करने की ओर और रोजगार उपलब्ध कराने की ओर खास ध्यान दिया जाए, क्योंकि जब तक इन कार्यक्रमों में लोगों की भागीदारी नहीं होगी, तब तक लक्ष्य की प्राप्ति संभव नही है।

वर्ष 2050 तक दुनिया की 50 फीसदी आबादी भारत समेत आठ देशों में होगी

संयुक्त राष्ट्र की रिपोर्ट के अनुसार, वर्ष 2050 तक दुनिया की आबादी का आधा से ज्यादा हिस्सा आठ देशों में होगा। इनमें भारत, पाकिस्तान, फिलीपींस, मिस्र, कांगो, नाइजीरिया, तंजानिया और इथियोपिया शामिल हैं। इसके अलावा 61 देशों में आबादी घटने का अनुमान लगाया गया है। इनमें सबसे ज्यादा देश यूरोप के होंगे। फिलहाल 46 देशों की आबादी सबसे ज्यादा तेजी से बढ़ रही हैं, जिनमें से 32 देश सब सहारा अफ्रीका के हैं।

बढ़ती बेरोजगारी

पीपुल्स कमीशन की अध्ययन रिपोर्ट में हाल ही में यह चौंकाने वाला खुलासा हुआ है कि देश में चार प्रकार की बेरोजगारी है, ढूंढने के बावजूद काम नहीं मिल पाने वाले लोग, निराश होकर काम ढूंढना बंद कर देने वाले, सप्ताह में केवल एक दिन काम पाने वाले और ऐसा छद्म रोजगार पाने वाले, जिनका काम उत्पादकता बढ़ाने में मददगार नहीं होता। देश में ऐसे लोगों की तादाद करीब 27.8 करोड़ है। इस रिपोर्ट में यह भी बताया गया है कि देश में प्रतिवर्ष करीब 2.4 करोड़ नए किशोर श्रम बाजार में उतरते हैं, लेकिन उनमें से महज पांच लाख को ही संगठित क्षेत्र में रोजगार मिल पाता है। अर्थशास्त्रियों के अनुसार अगर देश में 27.8 करोड़ बेरोजगारों को पर्याप्त कार्य मिल जाए तो इससे देश की जीडीपी में करीब पन्द्रह फीसद की बढ़ोतरी होगी। केन्द्र सरकार ने नई शिक्षा नीति को लागू अवश्य किया है, पर उसके सकारात्मक परिणाम आने में समय लगेगा। देश की आबादी 1.4 अरब के

आसपास पहुंच चुकी है। आने वाले कुछ वर्षों में देश में बुजुर्गों की भी आबादी बढ़ेगी और वह भी एक चुनौती होगी। इन बुजुर्गों की देखभाल और विशेष रूप से उनके इलाज के लिए अभी जो ढांचा है, वह पर्याप्त नहीं हैं। जैसे-जैसे संयुक्त परिवार समाप्त हो रहे हैं और छोटे परिवार बन रहे हैं, बुजुर्गों की समस्याएं बढ़ती जा रही हैं। वृद्धाश्रमों और अस्पतालों में उनके लिए आवश्यक विशेष सुविधाएं अभी नगण्य ही हैं। भारत की बढ़ती आबादी के मामले में कुछ यह तर्क भी सामने आ रहे हैं कि आने वाले समय में जिन देशों की आबादी तेजी से गिर रही है, वहां पर कुशल और अकुशल कामगारों की मांग बढ़ेगी और भारत इस मांग को आसानी से पूरा कर सकता है, लेकिन यह तभी होगा, जब भारत की युवा आबादी को बेहतर तरीके से कौशल प्रशिक्षण दिया जाएगा। अभी कौशल विकास को लेकर जो कदम उठाए गए हैं, वे विकसित देशों की जरूरतों को देखते हुए पर्याप्त नहीं हैं। इसी कारण हमारे कामगार अन्य विकासशील देशों के कामगारों के सामने टिक नहीं पाते। स्पष्ट है, जनसंख्या अपने आप में समस्या नहीं है। यह मुश्किल तब पैदा करती है, जब हाथों को काम नहीं मिलता। इससे निर्भरता औसत बढ़ जाता है। जापान, कोरिया जैसे देशों में जनसंख्या-घनत्व हमसे ज्यादा है, पर वे इससे कहीं अधिक समृद्ध हैं, क्योंकि उन्होंने हर हाथ को उत्पादक बना दिया है। वहां आबादी संपदा के रूप में देखी जाती है, जबकि भारत में सबसे अधिक बेरोजगारी 15 से 29 आयु वर्ग में ही है।

प्रदूषण का खतरा

दुनिया के उन क्षेत्रों की स्थिति अधिक खराब है, जहां जनसंख्या अधिक है तथा प्रदूषण से निपटने के लिए वित्तीय और सरकारी संसाधन सीमित हैं। शहरों के विकास के साथ-साथ प्रदूषण भी बढ़ता जाता है। गरीब इलाकों में प्रदूषण से होने वाली मौतें बढ़ रही हैं। वायु प्रदूषण दक्षिण एशिया में असमय होने वाली मौतों का प्रमुख कारण है और इन मौतों में हो रही वृद्धि के आंकड़े इस बात का संकेत देते हैं कि विषाक्त उत्सर्जन बढ़ रहा है। प्रदूषण को कम करने के लिए निजी वाहनों की जगह सार्वजनिक वाहनों के उपयोग पर बल दिया जाना चाहिए, क्योंकि सडकों पर जितनी अधिक गाड़ियां चलेंगी, प्रदूषण उतना ही अधिक बढ़ेगा। बिजली बनाने के लिए जीवाश्म ईंधन का उपयोग किया जाता है, जिससे निकलने वाला धुंआ वातावरण को दूषित करता है। इससे बचने के लिए घरों में अधिक से अधिक सौर ऊर्जा का उपयोग करना होगा। इलेक्ट्रिक वाहनों और सौर ऊर्जा से चलने वाले वाहनों का उपयोग भी अधिक से अधिक बढ़ाना होगा। वातानुकूलन यंत्रों का प्रयोग कम से कम किया जाना चाहिए, तभी हम अपने और दूसरों की जिंदगी बचा पाएंगे।

देवीलाल डांगी
9414164094
9001229362

चन्दनवाड़ी फार्म

मांगलिक कार्यों हेतु 35000 वर्गफीट का हरा-भरा लॉन, मनमोहक फव्वारे, आकर्षक विद्युत साज-सज्जा, पार्किंग की पूरी व्यवस्था, अत्याधुनिक केटरिंग व्यवस्था, बर्तन व पुष्प सज्जित स्टेज, दिन भर पानी, बंगाली साज-सज्जा व ठहरने की उचित व्यवस्था।

प्रेम नगर, रूप सागर रोड, युनिवरसिटी, उदयपुर (राज.)

करन फार्म

मांगलिक कार्यों हेतु 32000 वर्गफीट का हरा-भरा लॉन, 80 व 60 फीट मेन रोड, आकर्षक विद्युत साज-सज्जा, पार्किंग की पूरी व्यवस्था, अत्याधुनिक केटरिंग, बर्तन व पुष्प सज्जित स्टेज, खाना बनाने हेतु पानी एवं अन्य सुविधाएं उपलब्ध

महावीर नगर, न्यू भूपालपुरा, उदयपुर (राज.)

राजस्थान सरकार

#मॉडल_स्टेट_राजस्थान

बेहतर शिक्षा. नए अवसर.

सेवा ही कर्म, सेवा ही धर्म

- लगभग 1 लाख प्रतिभाशाली बच्चों को टैबलेट दिये जायेंगे।
- 69681 अध्यापकों की नवीन भर्ती लगभग 90 हजार शिक्षक पदों पर भर्तियाँ प्रक्रियाधीन।
- राज्य में 1658 महात्मा गांधी अंग्रेजी माध्यम स्कूलों में गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा।
- 10 हजार अंग्रेजी माध्यम शिक्षकों का नवीन काडर।
- राज्य के सभी सेकेण्डरी स्कूलों को सीनियर सेकेण्डरी स्कूल में क्रमोन्नत करने का निर्णय।
- प्रतिवर्ष 20,000 छात्राओं को स्कूटी वितरण
- बालिका शिक्षा प्रोत्साहन के लिए बालिका प्रोत्साहन योजना, आपकी बेटी योजना एवं गार्गी पुरस्कार के तहत **180.69 करोड़ रुपये** की प्रोत्साहन राशि जारी।
- आरटीई के तहत **1274.78 करोड़ रूपये** की राशि का पुनर्भरण।

- यूनीक आईटी इंस्टीट्यूट - राजीव गांधी फिनटेक डिजिटल इंस्टीट्यूट, जोधपुर में प्रस्तावित, कुल लागत **600 करोड़ रुपये**
- मेडि-टेक, क्लाइमेट टेक एवं एग्रीटेक आदि की उन्नत तकनीकों पर रिसर्च के लिए - राजस्थान इंस्टीट्यूट ऑफ एडवांस्ड लर्निंग, जयपुर।
- जयपुर, जोधपुर एवं कोटा में राजीव गांधी नॉलेज इनोवेशन हब कुल लागत **200 करोड़ रुपये**
- फिनिशिंग स्कूल: राजीव गांधी सेंटर ऑफ एडवांस्ड टेक्नोलॉजी (R-CAT),जयपुर
- गत 4 वर्षों में 211 नवीन महाविद्यालय खोले गए। इनमें से 94 कन्या महाविद्यालय ।
- जिन विद्यालयों में 500 से अधिक छात्राएं वहां कन्या महाविद्यालय खोलने की घोषणा।
- प्रतिवर्ष 200 बच्चों की विदेश में पढ़ाई का खर्च राज्य सरकार द्वारा वहन।
- गत 4 वर्षों में 42 नवीन कृषि महाविद्यालय।

"राज्य में शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए अथक प्रयास किये गये हैं। इसके फलस्वरूप आईआईटी, आईआईएम, आईआईआईटी, एनआईएफटी, एफडीडीआई, एम्स, एनएलयू, आयुर्वेद विश्वविद्यालय, हरिदेव जोशी पत्रकारिता एवं जनसंचार विश्वविद्यालय तथा डॉ. बी.आर. अम्बेडकर विधि विश्वविद्यालय जैसे प्रतिष्ठित शिक्षण संस्थान आज राजस्थान में संचालित हैं। राज्य में तकनीकी और मेडिकल शिक्षा को प्राथमिकता दी जा रही है। सभी जिलों में मेडिकल कॉलेज खुल रहे हैं। निजी क्षेत्र में विश्वविद्यालय खोले जाने की अनुमति से राज्य में शिक्षा का वातावरण बना है और विश्वविद्यालयों की संख्या 6 से बढ़कर 89 हो गई है। इससे राज्य के विद्यार्थियों को अन्य प्रदेशों में जाने के स्थान पर प्रदेश में ही गुणवत्तापूर्ण शिक्षा मिल रही है। साथ ही मुझे प्रसन्नता है कि राज्य के राजकीय शिक्षण संस्थानों में छात्राओं का नामांकन छात्रों से अधिक हो गया है। बालिका शिक्षा के लिए किए गए कार्यों से आज हमारी बेटियां शिक्षा जगत में नए आयाम स्थापित कर रही हैं एवं उनमें गजब का आत्मविश्वास है।"

अशोक गहलोत, मुख्यमंत्री, राजस्थान

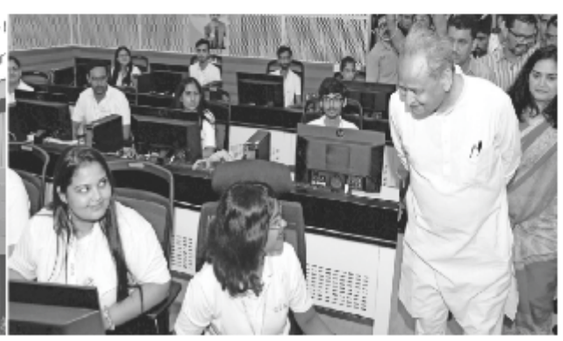

अधिक जानकारी के लिए 181 पर कॉल करें या https://jankalyan.rajasthan.gov.in पर विजिट करें

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, राजस्थान

09 फरवरी 2023

फेफड़ों के जरिए दिमाग तक पहुंच रहा ज़हर

डॉ. सुनील शर्मा

अमूमन हर साल जाड़े के मौसम की शुरुआत के साथ ही शहरों- महानगरों की हवा में प्रदूषण घुलने लगता है और इसे लेकर चिंता व्यक्त की जाने लगती है। इसकी वजहें भी सुर्खियों में रहती है और सरकारें इन पर काबू पाने के लिए काम करने का दावा करती हैं। लेकिन विचित्र यह है कि हर अगले साल फिर वैसे ही हालात का सामना करना पड़ता है और सरकारों की ओर से पुराने आश्वासन और दावे दोहराए जाते हैं। यो हर दिवाली के बाद दिल्ली की हवा के बेहद प्रदूषित हो जाने की खबरें कोई नई नहीं हैं, इसलिए इस साल भी अगर यहाँ प्रदूषण से दम घुटने की खबर आने लगी है तो यह हैरानी की बात नहीं है।

फरवरी के शुरू में कोहरे का प्रकोप हालांकि शहरों में कम जरूर हुआ है, लेकिन पहाड़ी क्षेत्रों व उनमें समीपवर्ती इलाकों में अब भी अपना असर दिखा रहा है। कोहरे में धूल-धुआं मिल कर सेहत के लिए परेशानी की वजह बन जाते हैं। इन दिनों महानगरों में वायु प्रदूषण का स्तर काफी बढ़ गया है, जिसके चलते लोगों में सांस संबंधी तकलीफ भी काफी देखी जाती है। कोरोना संक्रमण का खतरा भी फिर मंडराने लगा है। सरकार ने लोगों से सावधानी बरतने की अपील की है। ऐसे में सांसों के जरिए फैलने वाले संक्रमण से बचने के लिए कुछ उपाय बहुत जरूरी हो गए हैं।

सांसों का रखें खयाल

प्रदूषित हवा में सांस लेने से फेफड़ों से जुड़ी बीमारियों का खतरा अधिक रहता है। इसकी वजह से फेफड़े और दिल से जुड़ी तकलीफें हो सकती हैं। लंबे समय तक प्रदूषित हवा में सांस लेने से ब्रोंकाइटिस से लेकर दिल और फेफड़े से जुड़ी कई गंभीर बीमारियां पैदा हो सकती हैं। इसलिए प्रदूषण से बचने के लिए सबसे पहले तो यह ध्यान रखना चाहिए कि साफ हवा आपके शरीर में जाए। इसके लिए जरूरी है कि जब भी बाहर निकलें, तो मुंह और नाक को अच्छी तरह ढंक कर चलें। अच्छी गुणवत्ता का मास्क जरूर पहनें। धूल-धुएं वाली जगहों पर ज्यादा देर न रहें। इस मौसम में बहुत सारे लोग ठंड से बचने के लिए घर में या बाहर अलाव जलाते और उसके आसपास देर तक बैठे रहते हैं। अलाव से निकलने वाला धुआं फेफड़ों के लिए बहुत हानिकारक होता है। उससे बचना चाहिए। अगर संभव हो तो बाहर निकलते समय चश्मा भी जरूर पहनें, ताकि आंखों में धूल-धुआं मिश्रित कोहरा न जाने पाए।

इस मौसम में बाहर निकलने पर आंखों में कोहरा पड़ता है, तो मिर्ची-सी जलन होने लगती है। सांस लेने में परेशानी के कारण लोगों का हाल बेहाल है। खासकर जो लोग दमा आदि से ग्रस्त हैं, उनके लिए तो सर्दी का मौसम बहुत ही खतरनाक है। सामान्य लोगों को भी इस प्रदूषित हवा में सांस लेने से अस्थमा, खांसी और श्वसन तंत्र से जुड़ी कई गंभी बीमारियां हो सकती हैं। इसलिए प्रदूषण की मार से बचने और फेफड़ों को सुरक्षित रखने के लिए आपको विशेष ध्यान देने की जरूरत है।

बीमारियों का भी कारण

प्रदूषण जहां सांस संबंधी बीमारियों, दिल का दौरा व कैंसर आदि बीमारियों का कारण माना जाता है, वहीं ये दिमाग को भी प्रभावित कर रहा है। हाल ही में हुए एक शोध के अनुसार कहा गया कि प्रदूषित कण दिमाग संबंधी बीमारियों का कारण बन रहे हैं।

दिमाग को शरीर का कंम्यूटर माना जाता है। जैसे कंम्प्यूटर में वायरस आ जाने से उसकी कार्यक्षमता ठप हो जाती है, वैसे ही दिमाग को कई चीजें प्रभावित करती हैं। इनमें सबसे बड़ा कारण है प्रदूषण। प्रदूषित हवा जब फेफड़ों में जाती है, तो रक्त प्रवाह के साथ जहरीले कण पूरे शरीर में घूमते हैं और

दिमाग संबंधी रोग व इम्यून सिस्टम पर घातक असर डाल सकते हैं। वायु प्रदूषण बुजुर्गों से लेकर गर्भ में पल रहे शिशुओं की खराब सेहत के लिए जिम्मेदार है। देश में पांच साल से कम उम्र के बच्चों की मौत के करीब नौ फीसदी मामलों की वजह वायु प्रदूषण है।

प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाएं

सर्दी की मार उन लोगों पर अधिक पड़ती है। जिनका शरीर कमजोर होता है। यानी जिन लोगों की प्रतिरोधक क्षमता कमजोर होती है, उन्हें किसी भी प्रकार का संक्रमण जल्दी होता है। इसलिए प्रदूषित हवा से फैलने वाली बीमारियों का सामना करने के लिए जरूरी है कि शरीर की प्रतिरोधक क्षमता को दुरुस्त रखा जाए। इसके लिए खानपान में नियमितता और पौष्टिक आहार लेना जरूरी है। भोजन में विटामिन सी की पर्याप्त मात्रा वाले फलों को जरूर शामिल करें। आजकल अमरूद और संतरा जैसे फल बहुतायत में उपलब्ध हैं।

वायु प्रदूषण छोटे बच्चों के साथ-साथ गर्भ में पल रहे शिशुओं को भी नुकसान पहुंचाता है। शोधों में पाया गया है कि वायु प्रदूषण से बच्चे अस्थमा और सांस की अन्य बीमारियों से पीड़ित होते हैं। शरीर के अन्य अंग भी इससे प्रभावित होते हैं।

-प्रोफसर एस.काबरा,
(पीडियाट्रिक विभाग एम्स, दिल्ली)

नये साल की गीतों भरी बधाई

वेदव्यास

नये साल की लाया हूं मैं, गीतों भरी बधाई।
रंग बिरंगे सपनों वाली, धरती की जय भाई।।
अभी दूर है मंजिल अपनी
मिलकर कदम बढ़ाओ
तीन रंग की विजय पताका
दिशा-दिशा फहराओ
गर्मी, सर्दी, वर्षा तो है, ऋतुओं की परछाई।
साथ समय के चलने वाली, भारत की तरुणाई।।
नहीं किसी से बैर भाव
हम न्याय चाहने वाले
एक डाल पर हंसते गाते
हम पंछी मतवाले
जान सका है कौन भला, मानव मन की गहराई।
साहस वाले लांघ सकेंगे, विपदाओं की खाई।।
नये-नये संकल्प हमारे
नये देश की वाणी
आपस के झगड़ों से बढ़कर
मातृभूमि कल्याणी
अपनी ढपली सभी बजाते, समझो पीर पराई।
आजादी की गंगा देखो, गांव-गांव में आई।।

निःशुल्क नेत्र सेवा प्रकल्प

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

सोमवार से शनिवार

तारा संस्थान

के नेत्र चिकित्सालय तारा नेत्रालय में निःशुल्क

PHACO पद्धति द्वारा मोतियाबिन्द ऑपरेशन,

नेत्र परीक्षण एवं लेन्स प्रत्यारोपण तथा चश्मे के नम्बर

236, सेक्टर 6, हिरण मगरी (जे.बी. हॉस्पीटल के पास वाली गली),
उदयपुर-313002 (राज.) भारत (+91) 9549399993, 9649399993

आस्था की जीत

महिम जैन

झारखंड के गिरिडीह में पारसनाथ पहाड़ी क्षेत्र में इको- टूरिज्म विकसित करने और पर्यटन को बढ़ावा देने की योजनाओं में केन्द्र ने संशोधन करना स्वीकार कर लिया है। उसने राज्य सरकार से उस क्षेत्र में इको सेंसिटिव जोन नोटिफिकेशन के प्रावधानों के कार्यान्वयन पर तत्काल रोक लगाने को कहा है। ऐसा जैन समाज की मांग पर किया गया है। इससे पहले झारखंड सरकार ने भी केंद्र को पारसनाथ स्थित सम्मेद शिखर जी की पवित्रता बनाए रखने के लिए जैन अनुयायियों से मिले आवेदनों को देखते हुए समुचित निर्णय लेने की अपील की थी। देश भर में जैन समाज ने अपने प्रमुख तीर्थस्थल सम्मेद शिखरजी की पवित्रता बनाए रखने की मांग को लेकर कई दिनों से तक आंदोलन किया। असल में पारसनाथ पहाड़ी जैनों के 24 में से 20 तीर्थकरों की निर्वाणभूमि होने के कारण दुनिया भर में फैले जैन समाज के लिए विशेष रूप से पूजनीय क्षेत्र रहा है। यहां बड़ी संख्या में जैन समाज के लोग वंदना यात्रा पर आते हैं। निर्जल रहकर और नंगे पैर चलकर 27 किलोमीटर की यह कठिन यात्रा 14-15 घंटे में पूरी करते हैं। क्षेत्र को पर्यटन स्थल के रूप में विकसित करने के फैसले ने पूरे जैन समाज को उद्वेलित कर दिया था। उन्हें लगा कि इस से इस तीर्थ स्थल की पवित्रता भंग होगी जैन समाज ने विरोध प्रदर्शन में जिस तरह की एकजुटता दिखाई वह इस बात का संकेत था कि इस पूरे समुदाय की आस्था को इस फैसले से चोट पहुंची है। एक जैन साधु ने मरण समाधि भी ली। केंद्र सरकार ने अपने कदम वापस लेकर एक अच्छा काम किया है। लोकतंत्र में निर्वाचित सरकार को जनभावनाओं का ख्याल रखते हुए ही आगे बढ़ना चाहिए। विकास जरूरी है लेकिन आखिरकार वह समाज के ही लिए तो है। इस क्षेत्र के साथ एक खास बात यह भी है कि जैनों का तीर्थस्थल होने के साथ-साथ यह संथाल जनजाति की आस्था और संस्कृति से भी जुड़ा है। वे इसे मारंग बुरु के रूप में पहचानते हैं। ये पूरी श्रद्धा से पर्वत पर स्थित जुग जाहेर थान का पूजन करते हैं। हर साल फरवरी और अप्रैल में धूमधाम से अपना पारंपरिक त्योहार मनाते हैं। संभवत: इसी बात को ध्यान में रखते हुए केंद्र सरकार ने संशोधित इको सेंसिटिव जोन नोटिफिकेशन में प्रभावी कार्यान्वयन सुनिश्चित करने के लिए मॉनिटरिंग कमिटी गठित करने को कहा है। इस कमिटी में जैन समुदाय के दो सदस्यों के साथ ही स्थानीय आदिवासी समुदाय से भी एक सदस्य को स्थायी आमंत्रित सदस्य के रूप में रखने की बात कही. गई है। भारत की संस्कृति, संस्कार जीवित हैं तो ऋषि मुनियों और हमारे संतों की वजह से हैं। सम्मेद शिखर को लेकर जैन समाज का विरोध-आंदोलन काफी जायज था और इसे सर्व समाज का समर्थन भी मिला। जायज विरोध को अन्तत: न्याय मिलता है। सम्मेद शिखर आंदोलन इसका बड़ा प्रमाण है। केन्द्र सरकार ने जैन समुदाय की भावना का सम्मान करते हुए सम्मेद शिखर को पर्यटन स्थल घोषित न करने का जो फैसला लिया है वह स्वागत योग्य है। केन्द्र और राज्यों की सरकारों को सभी धर्मों की आस्था का सम्मान करना चाहिए।

सप्तम पुण्यतिथि

जन्म
2 फरवरी, 1931

देवलोक
30 जनवरी, 2016

युग पुरुष एवं जन-जन के प्रेरणा स्त्रोत

पं. जीवतराम शर्मा (बाबूजी)

संस्थापक - राजस्थान बाल कल्याण समिति

की सप्तम पुण्यतिथि पर हम श्रद्धासुमन अर्पित करते हैं।

श्रद्धानवत

गिरजा शंकर शर्मा, प्रवन्ध निदेशक

राजस्थान बाल कल्याण समिति परिवार

E-mail : jhadolrbks1@rediffmail.com | website : www.rbks.org

राजस्थान बाल कल्याण झाड़ोल द्वारा संचालित प्रकल्प

क्रम	विद्यालय प्रकल्प	क्रम	महाविद्यालय/उच्च शिक्षा प्रकल्प
1	रा.बा.वि.म. सीनियर सैकण्डरी विद्यालय, झाड़ोल	1	जे.आर. शर्मा पी.जी. महाविद्यालय, झाड़ोल
2	रा.बा.वि.म. उच्च प्राथमिक विद्यालय, झाड़ोल	2	गुरू पुष्कर जैन महाविद्यालय, झाड़ोल
3	रा.बा.वि.म. उच्च प्राथमिक विद्यालय, गोराणा	3	जे.आर. महाविद्यालय, रेलमगरा, राजसमन्द
4	राजस्थान पब्लिक मा.वि., झाड़ोल	4	जे.आर. महाविद्यालय, पिण्डवाड़ा, सिरोही
5	शैक्षणिक परिसर सीनियर सैकण्डरी विद्यालय, बीड़ा	5	जे.आर. बी.एड महाविद्यालय, झाड़ोल
6	हुनर घर उच्च प्राथमिक वि. बाखेल, कोटड़ा	6	जे.आर. शर्मा महाविद्यालय, ऋषभदेव, उदयपुर
7	ग्रामीण शिक्षा कार्यक्रम संस्था कार्यक्षेत्र	7	जे.आर. महाविद्यालय, माउण्ट आबू, सिरोही
8	शिशु पालना गृह एवं बालवाड़ी कार्यक्षेत्र	8	जे.आर. नर्सिंग संस्थान, सागवाड़ा, डूंगरपुर
9	हिंदुजा फाउंडेशन स्कूल शिक्षा कार्यक्रम	9	जे.आर. शर्मा पी जी महाविद्यालय, फलासिया
10	जे.आर.शर्मा कौशल विकास कार्यक्रम	10	जे. आर. औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान, झाड़ोल
11	जे.आ. शर्मा छात्रवृत्ति कार्यक्रम	11	जे. आर. पी जी महाविद्यालय, प्रतापगढ़
12	विद्यालय विकास कार्यक्रम	12	जे. आर. कॉलेज, उदयपुर
13	बाल कल्याण शिक्षा कार्यक्रम	13	जे.आर. शर्मा पत्राचार एवं स्वयंपाठी शिक्षण कार्यक्रम
14	विद्यालय कम्प्यूटर शिक्षा कार्यक्रम	14	हिंदुजा फाउंडेशन उच्च शिक्षा कार्यक्रम

आवासीय शिक्षा प्रकल्प

1	अनु.जनजाति कन्या छात्रावास-प्रथम इकाई झाड़ोल, उदयपुर	10	जे.आर. शर्मा बी.एड महिला छात्रावास झाड़ोल, उदयपुर
2	अनु. जनजाति कन्या छात्रावास -द्वितीय इकाई, झाड़ोल, उदयपुर	11	निराश्रित बालगृह झाड़ोल, उदयपुर
3	अनु. जनजाति कन्या स्नातकोत्तर छात्रावास, झाड़ोल, उदयपुर	12	निराश्रित बालिकागृह झाड़ोल, उदयपुर
4	अनुदानित कन्या छात्रावास रेलमगरा, राजसमन्द	13	गुरूकुल बोर्डिंग हॉस्टल-बालक, झाड़ोल, उदयपुर
5	अनु. जनजाति कन्या छात्रावास-सागवाड़ा, डूंगरपुर	14	हंसराज बालिका गृह, देवाली, उदयपुर
6	अनु. जनजाति कन्या छात्रावास डूंगरपुर	15	जे. आर. शर्मा नर्सिंग हॉस्टल, सागवाड़ा, डूंगरपुर
7	शैक्षणिक परिसर आवासीय कन्या छात्रावास बीड़ा, झाड़ोल, उदयपुर	16	जे. आर. शर्मा हॉस्टल, प्रतापगढ़
8	निराश्रित बालिका गृह, सागवाड़ा, डूंगरपुर	17	कौशल विकास छात्रावास, सागवाड़ा
9	अनु. जनजाति कन्या छात्रावास, सीजवाड़	18	अनु. जनजाति कन्या छात्रावास, सागवाड़ा

समस्त ग्रामीण सामुदायिक विकास इकाईयां (लाभान्वित गाँव 875)

राजस्थान, मध्यप्रदेश एवं गुजरात के जनजाति बाहुल्य 22 जिलों में जलग्रहण, वाड़ी परियोजना, आजीविका विकास, शिक्षा, स्वास्थ्य, जागरूकता कार्यक्रम, कौशल विकास, आय संवर्धन एवं अन्य सामाजिक उत्थान कार्यक्रम, इन्दिरा रसोई, सेनटा होम आदि

क्रम	संस्था द्वारा स्थापित गौशालायें एवं फाउण्डेशन	क्रम	संस्था द्वारा स्थापित कम्पनीयां
1	सुरभि गौशाला धाम, बराड़ा, उदयपुर	1	वागड़ प्रोड्यूसर कम्पनी लिमिटेड, डूंगरपुर
2	ब्रह्मानंद कपिल गौशाला, हंडिया, मध्यप्रदेश	2	झाड़ोल प्रोड्यूसर कम्पनी लिमिटेड, उदयपुर
3	जे.आर. शर्मा फाउण्डेशन, उदयपुर	3	मोरवाल प्रोड्यूसर कम्पनी लिमिटेड, उदयपुर
4	गोगुन्दा पॉटरी फाउण्डेशन	4	मेवाड़ पॉटरी प्रोड्यूसर कम्पनी लिमिटेड
5	6 इन्दिरा रसोई उदयपुर एवं डूंगरपुर	5	2 आश्रय स्थल डूंगरपुर
6	2 शहरी आजीविका केन्द्र उदयपुर एवं जोधपुर	6	31 कृषि एवं गैर कृषि उत्पादन प्रा.लि. कम्पनीज

प्रतिष्ठान

ऋषिराज एण्ड ब्रदर्स, मगवास	कमलेश्वर फर्नीचर एण्ड वेल्डिंग वर्क्स, मगवास	जे.आर. शर्मा बिल्डर्स मगवास

सियाचिन की बर्फ पर शिवा के कदम

बादल को कमीशन, सरबजीत व सुमित का भी सम्मान

मेवाड़ की एक बेटी हिमालय पर्वत की कराकोरम श्रेणी में दुनिया के सबसे ऊंचे युद्ध क्षेत्र सियाचिन पर पहली महिला सैन्य अधिकारी के रूप में तैनात हुई तो एक छोटे से गांव झाड़ोल के एक बेटे ने नौ सेना में कमांडर का कमीशन हासिल कर राजस्थान के गौरव को बढ़ाया है। उदयपुर के सेक्टर 14 निवासी मेजर सरबजीत सिंह व सुमित बख्शी को भारतीय सेना दिवस पर सम्मानित किया गया।

रेणु शर्मा

हिमालय पर्वत की काराकोरम श्रृंखला में करीब बीस हजार फीट की ऊंचाई पर स्थित दुनिया के

सबसे ऊंचे युद्ध क्षेत्र सियाचिन पर राजस्थान की शिवा चौहान भी मुस्तैदी से देश की हिफाजत में तैनात है। यह पहला मौका है, जब किसी महिला को इतनी सख्त परिस्थितियों वाले इलाके में तैनात किया गया है। वहां हाड़ कंपा देने वाली सर्दी का आलम यह है कि तापमान शून्य से 40 से 60 डिग्री तक नीचे चला जाता है। वहां कभी बर्फीले तूफान आते हैं तो कभी पहाड़ों पर जमी बर्फ की परतें भरभराकर नीचे आने लगती हैं और ऊंचाई के कारण होने वाली बीमारियां जान जोखिम में डाल देती हैं। वहां देश की हिफाजत का जज्बा जैसे बाकी हर मुश्किल को आसान कर देता है। सियाचिन में कुमार पोस्ट पर तैनात शिवा चौहान का जन्म 18 जुलाई 1997 को उदयपुर में राजेन्द्रसिंह-अंजलि चौहान के यहां हुआ। उन्होंने उदयपुर के सेंट एंथनी सीनियर सैकण्डरी स्कूल से पढ़ाई पूरी करने के बाद उदयपुर के ही एनजेआर इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नॉलोजी से सिविल इंजीनियरिंग में स्नातक स्तर की शिक्षा पूरी की। शिवा ने बहुत छोटी उम्र में ही अपने पिता को खो दिया था और मां ने ही उनकी पढ़ाई का पूरा ध्यान रखा। शिवा के परिवार में एक बड़ी बहन शुभम चौहान है, जो भारतीय न्यायिक सेवा में जाने की तैयारी कर रही है। शिवा को बचपन से ही भारतीय सेना में जाने की ललक थी। इंजीनियरिंग के बाद उन्होंने सेना में शामिल होने के अपने सपने को पूरा करने की तरफ कदम बढ़ा दिए। 2020 में चेन्नई स्थित ऑफिसर्स ट्रेनिंग अकादमी में प्रशिक्षण पूरा करने के बाद उन्हें मई 2021 में इंजीनियर रेजीमेंट में शामिल किया गया। सेना के

अधिकारियों के मुताबिक शिवा को एक महीने सियाचिन बैटल स्कूल में कठिन प्रशिक्षण के बाद तीन महीने के लिए 15,600 फुट की ऊंचाई पर स्थित कुमार पोस्ट पर तैनात किया गया। इससे पहले तक महिलाओं को सियाचिन आधार शिविर में ही तैनात किया जाता था जो 9000 फुट की ऊंचाई पर स्थित है। सेना ने एक वक्तव्य में कहा यह भारतीय सेना के लिए गौरवपूर्ण क्षण हैं, जब कैप्टन शिवा चौहान को दुनिया के सबसे ऊंचे रणक्षेत्र सियाचिन में तैनात किया गया है। उन्हें अन्य अधिकारियों के साथ एक महीने की ट्रेनिंग के सफल समापन के बाद यह मौका मिला। उम्मीद है कि सियाचिन की उजली बर्फ पर चमकते शिवा के कदमों के निशान देश की बहुत सी लड़कियों को इस दिशा में बढ़ने की प्रेरणा मिलेगी। मेवाड़ की एक बेटी अगर सियाचिन जैसे दुर्गम इलाके में देश की रक्षा कर रही है तो उदयपुर के ही एक छोटे से गांव झाड़ोल का बेटा बादल सोनी भारतीय नौसेना में बतौर कमांडर देश की सेवा में तैनात है। हाल ही बादल को कमांडर का कमीशन मिला है। 5 जनवरी 2009 से भारतीय नौसेना में अधिकारी के रूप में कार्य करते हुए 14 वर्षों में कमांडर बादल सोनी कई जंगी जहाजों पर तैनात रहे। कमांडर बादल सोनी ने आईएनएस तलवार, आईएनएस मैसूर,

आईएनएस काकीनाड़ा शिप में अधिकारी के रूप में सेवाएं देते हुए देश की जल सीमाओं की रक्षा की है।

सीबीआरएन प्रोटेक्शन स्पेशलिस्ट हैं बादल

कमांडर बादल को भारत के दोनों लड़ाकू विमान युद्धपोत आईएनएस विराट और आईएनएस विक्रमादित्य पर भी सेवाएं देने का अवसर मिला। कमांडर बादल सोनी सीबीआरएन प्रोटेक्शन स्पेशलिस्ट हैं जो जंगी जहाजों पर होने वाले न्यूक्लियर बायो लॉजिकल केमिकल और रेडियो लॉजिकल अटैक होने की स्थिति में जहाज व उस पर कार्यरत सभी कर्मचारियों की सुरक्षा का कार्य करते हैं। उनके सेवाकाल में ऐसे कई क्षण आए

जब उन्होंने अपनी टीम के साथ मिलकर कई लोगों कमी जान बचाई हैं।

सबसे खुशी का क्षण

कमांडर बादल सोनी बताते हैं कि उनके लिए सबसे खुशी का क्षण वह था जब उनकी माता अंजना देवी और पिता नंदलाल सोनी ने उनके कंधों पर सितारे लगाए थे। कमांडर बादल का विवाह प्रियंका सोनी से 2014 में हुआ। कमांडर बादल मेवाड़ के सुदूर ग्रामीण अंचल से भारतीय नौसेना में कमांडर बनने वाले पहले शख्स हैं।

पिता को समर्पित सम्मान

उदयपुर के मेजर सरबजीत सिंह जो कि भारतीय सेना की सिख रेजिमेंट का हिस्सा है, चीन सीमा पर मुस्तैदी से तैनात है। उन्हें बहादुरी के लिए 15 जनवरी 2023 को भारतीय सेना दिवस के उपलक्ष्य में चीफ ऑफ आर्मी स्टाफ कमेंडेशन कार्ड से सम्मानित किया गया। मेजर सरबजीत सिंह अपने इस सम्मान को अपने पिता विरेन्द्रसिंह अरोड़ा को समर्पित करते हैं, जिनसे उन्हें सेना में जाने का जज्बा मिला। मेजर सरबजीत सिंह सन 2019 में ऑफिसर्स ट्रेनिंग अकादमी, चेन्नई से प्रशिक्षण

प्राप्त कर भारतीय सेना का हिस्सा बने। वर्तमान में वे चीन सीमा पर तैनात है। देश की सीमा को सुरक्षा प्रदान कर रहे है।

बख्शी दूसरी बार सम्मानित

भारतीय सेना दिवस पर उदयपुर निवासी कर्नल सुमित बख्शी को भी जम्मू और कश्मीर में विशिष्ट सेवा के लिए सेना की पश्चिमी कमान के सेनापति द्वारा आर्मी कमांडर्स कमेंडेशन कार्ड से सम्मानित किया गया। यह सम्मान आर्मी कमांडर द्वारा कार्य दक्षता और विशिष्ट सेवा के लिए दिया जाता है। कर्नल सुमित सेना में 30 वर्षों से

कार्यरत हैं। उनके पिता, लेफ्ट. कर्नल रणवीरसिंह बख्शी भी सेना में 33 वर्ष का कार्यकाल पूर्ण कर सेवानिवृत्त हैं। यह दूसरी बार है जब कर्नल सुमित बख्शी को सम्मानित किया गया है। पहली बार उन्हें लातूर में आए भूकंप में एक 18 माह की बच्ची की जान बचाने के सेना अध्यक्ष द्वारा चीफ ऑफ आर्मी स्टाफ कमेंडेशन कार्ड से सम्मानित किया गया। यह सम्मान उन्हें अपनी जान की परवाह न करने और मानव जीवन को बचाने हेतु योगदान के लिए दिया गया। कर्नल सुमित बख्शी आज भी उस बच्ची के सम्पर्क में हैं, जो आज लातूर जिले के किल्लारी गांव में एक अध्यापिका है। लेफ्ट कर्नल रणवीरसिंह बख्शी ने बताया कि भारतीय सेना में सेवा देश सेवा का सर्वोत्तम कार्य एवं सुखद अनुभव है। जिसमें युवा अपना महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं।

Mangilal Jain
Vinay Jain
(गुड़लीवाला)

Happy Republic Day

0294 -2561750
0294 -2420474

Rajesh Metals

Raj Steel

Shop No. 2, 5, Gyan Marg, R.M.V. Road, Udaipur - 313001 (Rajasthan)

कोई झूठ को सच का आईना तो दिखाए

वेदव्यास

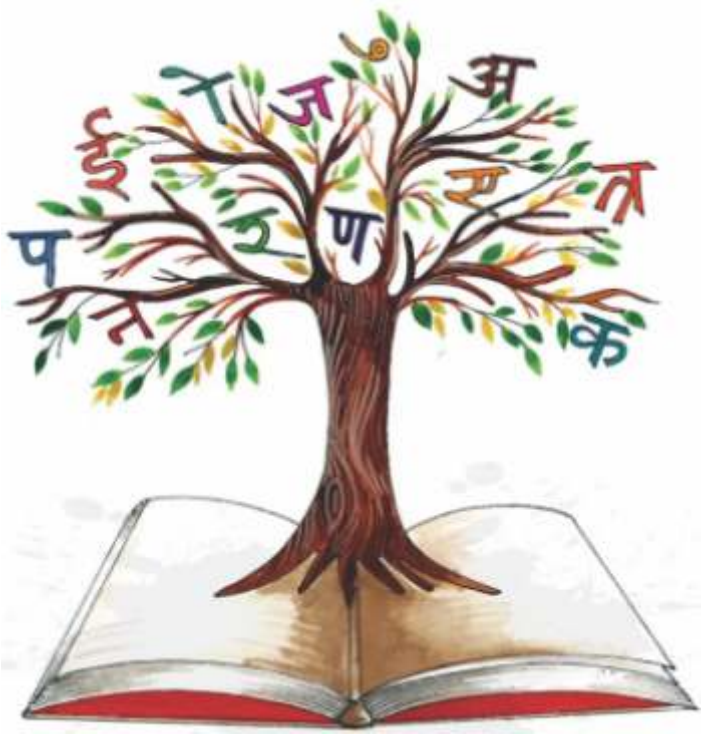

साहित्य को आज भी 'सत्यम, शिवम, सुन्दरम् के पर्याय रूप में ही देखा जाता है। समय का सत्य, समाज का शिव और प्रकृति का सुन्दर ही इसकी विचारधारा है। हजारों वर्ष से शब्दों की यह महाभारत युद्ध और शांति के बीच जारी है। विकास के नए सोपान इसे ऊर्जा देते हैं और मनुष्य के नए संधान इसे प्रासंगिक बनाते हैं।

यह साहित्य मनुष्य के द्वारा ही मनुष्य के लिए समाज और समय के बीच खड़ा रहता है। राजा और प्रजा के बीच, प्रकृति और मनुष्य के साथ, सूर्य और धूप के मध्य तथा जीवन और जगत के आमने-सामने यह साहित्य ही होता है। मनुष्य क्या सोचता है, मनुष्य क्यों सोचता है और मनुष्य किसके लिए सोचता है जैसी सभी जिज्ञासाएं इस साहित्य में ही निवास करती हैं। नाद ब्रह्म की तरह यह शब्द ब्रह्म मनुष्य के चेतन-अवचेतन का पर्याय है। वेद और पुराण की ऋचाएं, वाल्मीकि और महर्षि वेदव्यास की वाणी इसी का अनहदनाद है। इसका उद्गम मनुष्य का हृदय है और इसकी यात्रा समय का ओर-छोर है तो प्रतिफलन स्मृतियों का भाष्य है।

साहित्य का यह प्रवाह मनुष्य के बिना कुछ भी नहीं है। यह संविधानों का संविधान है और जिजीविषा का महाघमासान है। इसे कभी कालिदास गाते हैं तो कभी कबीरदास सुनाते हैं। इसे दर्शन में ढूंढा जाता है तो कभी अरविन्द और विवेकानन्द के इतिहास में पढ़ा जाता है। सूरदास और तुलसीदास भी साहित्य में मनुष्य के समय की नील जल सोई परछाइयों की तरह हैं। साहित्य वाणी को अथऊ देता है, ज्ञान को सामर्थ्य प्रदान करता है और अंधकार में प्रकाश का परिचालक बन जाता है।

यह साहित्य केवल शब्दों की जोड़नी भी नहीं है और न ही इसे समय का प्रलाप कहा जा सकता है। यह तो मनुष्य के मन और विचार का, विवेक और विस्तार का, आधार और व्यवहार का ऐसा नीर-क्षीर विवेचन है जिसे दादी कहती है और पोते सुनते हैं। साहित्य की अवधारणा मनुष्य मन की स्वायत्ता में जीवित है तथा इसे आचार्यों और प्राचार्यों की व्याख्याओं से बांधा नहीं जा सकता। विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रम साहित्य की सीमाएं तय नहीं कर सकते और मीडिया भी इसके प्रभाव को धूमिल नहीं बना सकता। परिवर्तन के सभी प्रभाव और दबाव साहित्य में भी ज्वार भाटा की तरह बोलते हैं तथा साहित्य इसीलिए मनुष्य और समय के बीच चेतन और अवचेतन तक मुखरित रहता है।

यह साहित्य क्या है और क्यों है तथा इसकी सार्थकता कौन तय करता है। इस तरह के प्रश्नों से कुछ बाहर निकलकर देखें तो हमें यह भी मालूम होगा कि साहित्य का उद्देश्य और अवधारणाएं भी निरन्तर बदलती रहती हैं। साहित्य कोई जड़ पदार्थ नहीं है तथा साहित्य में भी अंतिम सत्य का प्रादुर्भाव मनुष्य के मन की दिशाओं में लगातार बदलता रहता है। यह साहित्य मनुष्य के जीवन संसार का ही एक विस्तार है। छंद, सवैया, गीत, नवगीत, कविता, नई कविता, कहानी, उपन्यास, यात्रा संस्मरण, आत्म-कथा, निबंध, रिपोर्ताज, नाटक, विधाएं इस साहित्य के सृजनघाट है जहां विचार और कल्पना विवेक और यथार्थ के कपड़े उतार कर नहाती हैं।

शेक्सपीयर, मेक्सिम गोर्की, रवीन्द्रनाथ टैगोर, पाब्लोनरुदा, नाजिम हिकमत, प्रेमचंद और फैज अहमद फैज जैसे सैकड़ों शब्द पुरुष इस साहित्य के सहयात्री हैं। परम्परा, सभ्यता और संस्कृति की सभी त्रिवेणियां इस संगम में समाहित है। यह साहित्य इतना निमज्म है और इतना निर्मल भी है कि कहीं यह महाभारत बन जाता है तो कहीं यह रामायण की चौपाइयों में बिखर जाता है। कहीं यह उपमा बनकर याद आता है तो कहीं यह अतिशयोक्ति के भेष में मिलता है। यह रस सिद्धांत भी है तो यह विचार का व्यावहारिक रूपांतरण भी है।

इस साहित्य को लेकर समय और इतिहास की चिंताएं भी हमने देखी हैं तो सुकरात, अरस्तु, गैलीलियो और आइंस्टीन के सत्य से साक्षात्कार भी हमें विरासत में मिले हैं। मनुष्य के मनोविज्ञान और पराज्ञान को जानने और उसका समानीकरण तय करने का एकमात्र पैमाना साहित्य ही है। यह साहित्य दुनिया की हजारों भाषाओं और बोलियों में प्रवास करता है, और यह साहित्य ही शब्द के रथ पर बैठाकर स्मृति के गर्भ में दुबक जाता है। यह जरूरी नहीं है कि लिखा जाय वही साहित्य है और यह भी सम्पूर्ण नहीं है कि बोला जाय वही साहित्य है, बल्कि साहित्य तो काल की तरह ऐसा अजर-अमर तत्व है जो चिंतन और मीमांसा के बीच और अद्धैत के सानिध्य में, भ्रम और यथार्थ के पास-पड़ौस में तथा इच्छा और आकांक्षाओं के सहवर्ती के रूप में हमें रोज जागते हुए भी और सोते समय सपनों में भी मिलता रहता है।

साहित्य इसीलिए समय और समाज की चौखट है तथा ज्ञान और विज्ञान ही इसकी खिड़कियां हैं। इसके गर्भगृह में कोई राम और रहीम नहीं रहता वरन् एकमात्र मनुष्य रहता है। यह मनुष्य न जो पूरब-पश्चिम में बंटा हुआ है और न ही इसे योग और भोग की तरह विभाजित किया जा सकता है। आदिम कबीलाई जीवन से लेकर अब मंगलग्रह की यात्रा तक के इसके सभी सरोकार केवल साहित्य, संगीत और कला के मेहंदी मांडणों में ही सुने जा सकते हैं। यह साहित्य ही बताता है कि सत्य का किस तरह लोकगमन हुआ और शब्द ने किस तरह बहेलिया बनकर क्रोंच पक्षी का वध किया। हम अक्सर कभी होमर, दांते, मार्क्स और एंजिल्स में साहित्य को ढूंढते हैं तो कभी शब्दों की चिताओं पर लग रहे मेलों में खोजते हैं जो शब्द की सत्यवेदी पर कुर्बान हो गए। राजपाट छोड़कर जो भर्तृहरि बन गए, घर-संसार छोड़कर सिद्धार्थ हो गए या फि

महावीर की तरह दिगम्बर में साकार हो गए। ईसा की तरह सूली पर लटक गए, महात्मा गांधी की तरह गोली खाकर है राम! में समा गए, मार्टिन लूथर किंग की तरह काले-गोरों का गीत बन गए अथवा मीरां बाई की तरह जहर का प्याला पीकर भी प्रेम की दीवानगी पर चलते रहे। इस सबके पीछे से कहीं मनुष्य की स्वतंत्रता, सह अस्तित्व और विकास की बहस ही सुनाई पड़ रही थी क्योंकि सत्य तो वही है जो देखा, सुना और समझा नहीं गया है साहित्य वही है जो अब तक खोजा नहीं गया है, मनुष्य वही है जो अब तक रचा नहीं गया है। शब्द वही है जो अब तक वर्णमाला से बाहर है तथा वाणी और स्मृति वही है जिसे हम आज तक किसी सुरताल में बांध नहीं पाए हैं।

साहित्य की यह सरस्वती सभी देशों में बहती है। कोई भी पूंजी और सामाजिक व्यवस्था इसके टुकड़े नहीं कर सकती। कोई भी शासन और तंत्र इसका गला नहीं घोट सकता। यह एक ऐसी आवाज है जो जितनी अधिक बंद की जाती है उतनी ही अधिक गूंजती है। लोक से लोकोत्तर बन जाती है और जंगल में मंगल की तरह, छवियों में आयाम की तरह, चेतना में उमर खैयाम की तरह, खेतों में बसंती परिधान की तरह, सत्ता और व्यवस्था के रू-ब-रू सम्मान की तरह, संवेदनाओं के उफान की तरह, सैनिक के प्रयाण की तरह, ऋषिपुत्रों के अभियान की तरह, सरोकार के धनुषबाण की तरह, नीति और सार के आख्यान की तरह, प्रकृति और मनुष्य के बीच सुगंध की तरह रम जाती है। साहित्य इसीलिए भक्ति, शक्ति और प्रेम की त्रिवेणी है, योग से भोग तक का सफर है तो मनुष्य और समाज की बदलती सभ्यताओं और संस्कृतियों का गवाक्ष है। यह साहित्य ही है जहां चेतना को काम, क्रोध, मद, लोभ और माया के दैत्य नहीं सताते और यह शब्द पुत्र ही है जो कालातीत और कालजयी रहता है।

हमारे देश में साहित्य और संस्कृति को एक दूसरे का परक पूरक माना गया है। दर्शन और चिंतन परम्परा का अनवरत यज्ञ कहा गया है तो चन्द्रमा की सोलह कलाओं की तरह मनुष्य मन की लीलाओं का वृन्दावन भी समझा गया है। वीर गाथाकाल से लेकर आधुनिक काल तक जो कुछ लिखा-सुना गया केवल वही साहित्य नहीं है अपितु शब्द और साहित्य तो मनुष्य की प्रागैतिहासिक संरचना को समझने का भी पहला सूत्र है।

यह साहित्य संत, सती और सूरमाओं का ही खेल मैदान नहीं है, यह साहित्य किसी महाजनी सभ्यता का प्रस्थान भी नहीं है, यह साहित्य किसी आदि विद्रोही का जयगान भी नहीं है और यह साहित्य नौसिखिये शब्द जीवियों का मचान भी नहीं है। यह चिंतन और मनन का एक ऐसा गंभीर लोकाचरण है जिसकी इतिश्री एक मनुष्य के लिए नहीं होकर सदैव लोकमंगल में ही समाहित, संयोजित और विकसित होती है।

साहित्य में जहां मनुष्य और उसके समय का दिग्दर्शन होता है, वहां साहित्य में मन, वचन और कर्म की परछाईयों का भी दूध का दूध और पानी का पानी किया जाता है। समय के प्रभाव से साहित्य के स्वर भी बदलते हैं तथा सरोकार भी नया रूप और अवधारणाएं ग्रहण करते हैं, लेकिन साहित्य को समझना, देखना और परिभाषित करना कोई बच्चों का खेल नहीं है। इस साहित्य में सामाजिक न्याय तो है पर आरक्षण का प्रावधान नहीं है। यहां स्वायत्तता तो है लेकिन सामाजिक सरोकार भी छोड़े नहीं जा सकते। यह एक साहित्य ही है जिसमें मनुष्य विरोधी और जनकल्याण के खिलाफ चलने या चलाने की पूरी रोक है।

हम साहित्य की इसी चौखट से मनुष्य, समाज और समय की सभी छोटी-बड़ी दस्तक को सुनेंगे। कुछ उनकी तो कुछ अपनी कहेंगे। कभी उनकी करवट को तो कभी अपनी करवट से बात करेंगे। हमारी चिंता बाजार की नहीं होगी अपितु एक शाश्वत मानवीय कल्याण और सृजन की होगी। सभी वाद-विवाद जारी रहेंगे और प्रतियोगिताएं भी चलेंगी लेकिन समय का सत्य ही हमारा निर्णायक मंडल रहेगा। अगली बार से यह 'उल्लेखनीय' देश-देशांतर में ही नहीं अपितु वन-प्रान्तर में भी जाएगा। गद्य-पद्य के सभी उदाहरण लाएगा तथा साहित्य के समस्त सृजनात्मक सरोकारों की जाजम भी बिछाएगा। तेरी मेरी इस कहानी को पढ़ते रहिए, क्योंकि सृजन अभी और भी है।

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

देवेन्द्र नागदा
डायरेक्टर

Bharat Petroleum

विशाल फिलिंग स्टेशन

प्रतापनगर, उदयपुर - 313001 (राज.)

फोनः 0294-2491360, 2492870 (पम्प), मो.: 94141-57870

सीसारमा, उदयपुर (राज.) फोनः 0294-2430819

प्रत्यूष

जनजाति प्रतिभा सम्मान

आदिवासी क्षेत्रों के समग्र विकास का संकल्प

मुख्यमंत्री ने कलेक्टर ताराचंद मीणा को प्रदान किया 'मानगढ धाम गौरव पुरस्कार'

विविध क्षेत्रों में उल्लेखनीय कार्यों के लिए 518 प्रतिभाएं भी हुई सम्मानित

मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय के स्वामी विवेकानंद सभागार में 29 दिसम्बर को आयोजित 10वें अंचल स्तरीय जनजाति प्रतिभा सम्मान एवं सर्व समाज शिक्षक गौरव समारोह में मुख्य अतिथि मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने कहा कि प्रदेश सरकार आदिवासी क्षेत्रों के सर्वांगीण विकास के लिए प्रतिबद्ध है। योजनाओं का निर्धारण ही उन्हें केन्द्र में रखकर किया जा रहा है। मुख्यमंत्री ने प्रतिभाओं को सम्मानित करते हुए राज्य सरकार द्वारा गत चार वर्ष में किए गए जनकल्याणकारी कार्यों को साझा किया। मुख्यमंत्री ने उदयपुर के कलेक्टर ताराचंद मीणा को 'मानगढ़ धाम गौरव पुरस्कार' से सम्मानित किया जब कि 56 लोगों को 'वीर शहीद नानकजी भील सामाजिक नेतृत्व पुरस्कार', 68 शिक्षकों को 'शहीद नाना भाई खांट शिक्षक गौरव पुरस्कार' तथा 167 विद्यार्थियों को 'शहीद वीरबाला कालीबाई पुरस्कार' दिया गया।

गहलोत ने कहा कि मुझे जनता ने तीन बार मुख्यमंत्री बनाया है। यह कोई आम बात नहीं है। ऐसे में अब मेरी जिम्मेदारी और बढ़ जाती है। सामाजिक कार्यकर्ता की तरह प्रदेश की जनता के लिए काम आता रहूंगा। उन्होंने आगामी राज्य बजट को लेकर कहा कि आगामी बजट बच्चों, युवाओं और महिलाओं पर केंद्रित होगा। उन्होंने भाजपा सांसद कनकमल कटारा व अर्जुन मीणा की ओर मुखातिब होकर कहा कि वे प्रधानमंत्री को मानगढ़ धाम को राष्ट्रीय स्मारक घोषित करने के लिए राजी करें।

संस्थान के संस्थापक एवं कांग्रेस स्टीयरिंग कमेटी सदस्य रघुवीरसिंह मीणा ने कहा कि उदयपुर में बने प्रताप गौरव केंद्र की तर्ज पर पूंजा गौरव केंद्र भी बनना चाहिए। इसके लिए सरकार भूखंड आवंटित करे, जिसमें आदिवासी विद्यार्थियों के लिए भवन भी बनाया जा सके। मंत्री अर्जुन बामणिया ने कोटा और उदयपुर में करीब 18 करोड़ रूपए से अधिक की लागत से बने भवन की जानकारी दी तथा मुख्यमंत्री से मांग की कि मां-बाड़ी योजना में भी दूध पिलाने का प्रावधान किया जाए। सांसद अर्जुनलाल मीणा ने एकलव्य रेजिडेंशियल स्कूल खोलने तथा वन कानून के तहत सामुदायिक पट्टे दिलवाने की मांग रखी।

कार्यक्रम में जनजाति विकास मंत्री अर्जुन बामनिया, वल्लभनगर विधायक प्रीति शक्तावत, सज्जन कटारा, पुखराज पाराशर, टीसी डामोर, ताराचंद भगोरा, प्रधान बसंती देवी, डॉ. विवेक कटारा, जीजीटयू के पूर्व वीसी टीसी डामोर, जनजाति आयोग सदस्य पन्नालाल मीणा, सेवानिवृत आईएएस एचके डामोर, शिवजीराम मीणा, आरडी मीणा निदेशक आदिवासी विश्व विद्यालय कोटा, परिवहन उपायुक्त डॉ. मन्नालाल रावत, सीएमएचओ डॉ. एसएल बामनिया, संस्थान अध्यक्ष प्रभुलाल डेंडोर, राकेश हिरात, निरंजन दरंगा भी मौजूद थे।

एक अप्रैल से 500 में गैस सिलेंडर

सीएम ने कहा कि महंगाई से आज हर व्यक्ति परेशान है। राज्य सरकार 1 अप्रैल से एलपीजी सिलेंडर 500 रूपए के दाम से उपलब्ध कराएगी। राज्य सरकार द्वारा प्रदेश में 8 लाख किसानों को जीरो रूपए के बिजली बिल जारी हुए हैं। आम उपभोक्ताओं को भी 50 यूनिट तक बिजली मुफ्त दी जा रही है। सीएम ने कहा कि प्रदेश में जगह-जगह महात्मा गांधी अंग्रेजी माध्यम विद्यालय खोले गए हैं। आगे भी खोले जाएंगे। अब निर्धन परिवारों के बच्चे भी यहां पढ़ने आ रहे हैं। इस दौरान सांसद अर्जुनलाल मीणा ने राज्य सेवाओं में टीएसपी का आरक्षण लागू करने की मांग की। रघुवीर मीणा ने राज्य में हुए विकास कार्यों की जानकारी साझा की। जनजाति विकास मंत्री अर्जुन बामनिया ने दिल्ली में जनजाति क्षेत्र के बच्चों को आईएएस की फ्री कोचिंग दिलवाने की मांग रखी।

पंजीयन संख्या 617 वाई | जय सहकार | स्थापना: 18–02–1959

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

उदयपुर क्रय-विक्रय सहकारी समिति लि.

प्रतापनगर, उदयपुर (राज.)

संस्था के कार्य एक नज़र में...

- रसायनिक खाद, उन्नत बीज, कीटनाशक औषधियों का विपणन एवं वितरण कृषि उपज मण्डी दुकान नं. 36 से।
- आढ़त पर कृषि उपज का क्रय–विक्रय कर उत्पादकों को उचित मूल्य दिलाना, नकद भुगतान की सुविधा देना एवं कृषि उपज की रहन पर ऋण ब्याज उपलब्ध कराना जिसमें सदस्यों को कृषि उपज का उचित मूल्य मिल सके।
- राज्य सरकार की नीति के अनुसार लक्षित वितरण प्रणाली के अंतर्गत वस्तुएं वितरण करना।
- समर्थन मूल्य पर खाद्यान्नों की खरीद करना।
- दैनिक उपयोग की वस्तुओं का उचित मूल्य पर वितरण करना
- पशुपालकों के लिए सस्ती दर पर राजफेड का पशु आहार वितरण।
- मिड–डे मिल (पोषाहार) परिवहन।

आशुतोष भट्ट
प्रशासक

हीरालाल मीणा
मुख्य प्रबंधक

थम गई लय, बिखर गए घुंघरू

विवेक अग्रवाल

कथक विधा के जिस शीर्ष पर पिछले कई दशकों से पंडित बिरजू महाराज विराजमान थे, वह अब भी रिक्त है उनके निधन के बाद कोई ऐसा दिखाई भी नहीं दिया, जो उनके स्थान की पूर्ति कर सके। उन्होंने न केवल कथक को वैश्विक स्तर पर पहचान दिलाई, बल्कि उसमें तमाम ऐसे प्रयोग भी किए जिनकी कल्पना भी नहीं की जा सकती थी।

कथक सरताज पंडित बिरजू महाराज आज हमारे बीच नहीं हैं। दिल्ली की शाहजहां रोड स्थित आवास पर 17 जनवरी 2022 की रात अपने पोते के साथ खेल रहे थे। अचानक दिल के दौरे से सांसो के घुंघरू बिखर गए। लय थम गई, सुर मौन हुए और कथक की दीर्घ साधना पर पूर्ण विराम लग गया। कलाकार के रूप में 'विराम' पंडित बिरजू महाराज के शब्दकोष में नहीं था। एक बार समुद्र किनारे कार्यक्रम पेश करने के बाद लहरों को देखते हुए उन्होंने कहा था- 'ये लहरें मात्राएं है और किनारे सम (आदि और अंत का रूप है। जब तक लहरें हैं, तब तक किनारा है। जब तक ये दोनों हैं, मैं नाचते रहना चाहता हूं।'

पोते के साथ खेलते उन्हें हार्ट अटैक आया और वे अचेत हो गए। दिल्ली के ही एक अस्पताल में ले जाया गया, जहां उन्हें मृत घोषित कर दिया गया। मृत्यु से कुछ दिन पहले ही वे किडनी की समस्या से उबरे थे। पंडित जी या महाराज जी के सम्बोधन से लोकप्रिय बिरजू महाराज देश के शीर्ष कथक नर्तकों में से एक थे। वे कला जगत के सिरमौर रहे। उनका संबंध कथक नर्तकों के महाराज परिवार से रहा है। उनके चाचा शंभू महाराज और लच्छू महाराज भी कथक नर्तक थे। इसके अलावा उनके पिता जगन्नाथ महाराज उर्फ गुरू अच्छन महाराज भी हिंदुस्तानी क्लासिकल म्यूजिक के बड़े कलाकार थे। बिरजू महाराज का जन्म 4 फरवरी 1938 को कालका- बिंदादीन धराने में हुआ था। वे नृत्य के अवतार थे। बचपन का नाम बृजमोहन मिश्र था।

कथक के चारों घरानों (लखनऊ, जयपुर, बनारस, रायगढ़) के लिए पंडित बिरजू महाराज का न होना बड़ी क्षति है। भले उन्होंने लखनऊ घराने की मशाल थाम रखी थी, बाकी तीन घरानों के लिए भी वह सम्मानीय, प्रतिष्ठित और बहुत अपने थे। यही रूतबा उन्हें शास्त्रीय संगीत, नृत्य और सिनेमा की दुनिया में हासिल था। कथक से इतर सितार, सरोद, सारंगी, तबला, पखावज आदि वाद्यों और गायन पर भी उन्हें महारथ हासिल थी। उन्होंने 'शतरंज के खिलाड़ी', 'देवदास', दिल तो पागल है', 'डेढ इश्किया', 'बाजीराव मस्तानी' आदि फिल्मों के लिए कोरियोग्राफी की। भारत के आठ शास्त्रीय नृत्यों में सबसे पुराना कथक है। इस संस्कृत शब्द का अर्थ है- कहानी सुनाने वाला। मध्य काल में कथक का संबंध कृष्ण कथा और नृत्य से था। बाद में मुगल प्रभाव से यह नृत्य दरबारों में बादशाहों के मनोरंजन के लिए किया जाने लगा। कथक नृत्य बिरजू महाराज को विरासत में मिला। उनके पूर्वज प्रयागराज की हंडिया तहसील के रहने वाले थे। यहां सन् 1800 में कथक कलाकारों के 989 परिवार रहते थे।

बिरजू महाराज का कला व्यक्तित्व अतुलनीय था। उनकी छटा, उनकी अदाएं, उनके तरीके-अपने लखनऊ घराने को पूरा समेटे हुए थे वह। वह तबला भी बजाते थे,

पुरस्कार-सम्मान

1986 में उन्हें पद्म विभूषण से नवाजा गया। संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार तथा कालिदास सम्मान प्रमुख हैं। इनके साथ ही इन्हें काशी हिन्दू विश्वविद्यालय एवं खैरागढ़ विश्वविद्यालय से डॉक्टरेट की उपाधि मानद मिली। 2016 में हिन्दी फिल्म 'बाजीराव मस्तानी' में 'मोहे रंग दो लाल' गाने पर नृत्य-निर्देशन के लिए फिल्मफेयर पुरस्कार मिला। 2022 में उन्हें लता मंगेश्कर पुरस्कार से नवाजा गया।

ढोलक भी और पखावज भी। सुस्वर में गाना भी गाते थे। और, नृत्य के तो कहने ही क्या! बैठकर भी वह बखूबी भंगिमाएं देते थे। जैसे ही वह कत्थक के लिए खड़े होते, यह दिख जाता कि कोई बहुत गुणी कलाकार प्रस्तुति देने जा रहे हैं। उनको हाथ उठाने की आवश्यकता ही नहीं पड़ती थी। वह चित्र भी बेहतरीन बनाते थे। उनकी सोच का स्तर अद्भुत था। उन्होंने शिष्य-शिष्या नहीं, अपना परिवार बनाया। वह ऐसे गुरू नहीं थे, कि शिष्य को सिखा दिया और वह चलते बना। शिष्य-शिष्याओं से वह आत्मीय रिश्ता रखते थे और शिष्य भी अपने गुरू के प्रति पूरी तरह से समर्पित रहते थे।

बिरजू महाराज के पास लखनऊ के कालका-बिंदादीन घराने का पूरा खजाना था। उन्होंने कत्थक में कई नृत्यावालियों की रचना की। गोवर्द्धन लीला, माखन चोरी, मालती-माधव, कुमार संभव जैसी नृत्यावलियां लोग मंत्रमुग्ध होकर देखा करते । ठुमरी, पद,गीत, दोहा आदि सबमें उनको महारत हासिल थी। उनके पिता का काफी पहले देहांत हो गया था। उनकी माता जी ने उन्हें पाला, संभाला था। गुरूओं और माता-पिता का उन पर इतना आशीर्वाद था कि उन्होंने कत्थक को एक गरिमा दिलाई और अंतरराष्ट्रीय स्तर तक इसे ले जाकर खूब नाम कमाया।

कुछ हस्तियां ऐसी होती हैं, जिनके लिए 'थी' की कल्पना नहीं की जा सकती। जैसे, लता मंगेशकर,एमएस सुब्बुलक्ष्मी, बिस्मिल्ला खां, पं. जसराज, पं. भीमसेन, उदयशंकर,रविशंकर आदि। पंडित बिरजू महाराज भी इसी कद की शख्सियत रहे। ऐसी हस्ती का अभाव भारतवर्ष के कला–इतिहास के लिए बहुत बड़ी क्षति है। जो समृद्ध विरासत महाराज जी छोड़कर गए हैं, वह अनुपम है। पंडित रविशंकर की तरह बिरजू महाराज के भी हजारों की संख्या में शिष्य–शिष्याएं दुनिया भर में छाए हुए हैं।

–सोनल मानसिंह

शिष्यों को तैयार करना उनके लिए साधना से कम नहीं था। मुझे हर रोज घर पर सिखाने आते थे। कभी नृत्य सिखाने का पैसा नहीं लिया। नृत्य साधन का कोई समय तय नहीं। कभी तो सुबह से शाम का ही पता नहीं चलता था। लगातार सिखाते थे। साथ में एक–एक मुद्रा, हाव भाव की डिवेलिंग समझाते थे। आंख ऐसे तो नाक ऐसे। यह सिलसिला लगातार आठ साल चला। उन्होंने कथक को एक नया आयाम दिया। एक नई ताजगी, नई दिशा दी है।

– शोभना नारायण

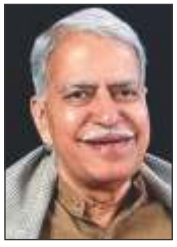

'पं बिरजू महाराज' शास्त्रीय संगीत की तीनों विधाओं– गायन, वादन और नृत्य के लीजेंड रहे। आज कथक का नाम ही लें तो मन में सिर्फ एक नाम उभरेगा– पं. बिरजू महाराज। इसके पीछे एक लंबी तपस्या है। वे मेरे ससुर थे। वे आखिरी वक्त तक खुद को बिंदादीन की ड्योढ़ी (पुश्तैनी घर) का शागिर्द बताते रहे। उनमें पुरखों के प्रति कितना समर्पण था, इसका अंदाजा इसी बात से लगा सकते हैं कि मृत्यु से एक हफ्ते पहले ही उन्होंने कहा था कि जब मेरा अंतिम संस्कार हो तो मेरी राख का कुछ हिस्सा बिंदादीन की ड्योढ़ी तक जरूर पहुंचाना , कुछ गोमती और कुछ बनारस में बहा देना।'

– पं. साजन मिश्र

वीआईएफटी में क्रिएटिवीटी वीक

'बड़े भाई साहब' के मंचन ने छाप छोड़ी

वेंकटश्वरा इंस्टीट्यूट ऑफ फैशन टेक्नोलॉजी एंड मास कम्युनिकेशन में 23 से 27 दिसम्बर-22 तक क्रिएटिवीटी वीक सम्पन्न हुआ। जिसमें विद्यार्थियों ने अपनी प्रतिभा, हुनर और रचनात्मकता की गहरी छाप छोड़ी। समापन समारोह में पत्रकारिता, रंगमंच एवं रेडियो जगत की जानीमानी हस्तियों वरिष्ठ पत्रकार विष्णु शर्मा हितैषी, वरिष्ठ रंगकर्मी शिवराज सोनवाल, रेडियो सिटी के प्रोग्राम प्रोड्यूसर रजत मेघनानी, आर जे काव्य, कवि कपिल पालीवाल, समाज सेवी आशीष हरकावत, समाज सेवी गौरव शर्मा व रजनीश शर्मा ने विद्यार्थियों को पुरस्कृत किया एवं उनसे संवाद के माध्यम से अपने अनुभव साझा किए। उन्होंने कहा कि शिक्षा में रचनात्मक प्रवृत्तियों को बढावा दिया जाना चाहिए। इस अवसर पर मुंशी प्रेमचंद की कहानी 'बड़े भाई साहब' एवं मोनोलॉग 'कोर्ट मार्शल' का इन्स्टीट्यूट के विद्यार्थियों ने प्रभावशाली मंचन किया। 'बड़े भाई साहब' में बड़े भाई के रूप में पत्रकारिता पाठ्यक्रम प्रथम वर्ष की छात्रा हिमांशी चौबीसा व छोटे भाई के किरदार में हिया शर्मा ने अपने अभिनय की गहरी छाप छोड़ी। 'कोर्ट मार्शल' में अदालत में पैरवी करते एडवोकेट के रूप में रोहित, मानस व मानसी के

तर्क पूर्ण प्रभावशाली संवादों को खूब सराहा गया। 'बड़े भाई साहब' में मौजूदा शिक्षा व्यवस्था पर तो 'कोर्ट मार्शल' में न्यायिक प्रक्रिया की खामियों पर करारा व्यंग्य था। जिसे दर्शक दीर्घा में उपस्थित लोगों का देर तक बजती तालियों से समर्थन मिला। इसका श्रेय अनुभवी निर्देशक असिस्टेंट प्रोफेसर ओमपाल को जाता है। इन्स्टीट्यूट की डायरेक्टर डॉ. रिमझिम गुप्ता ने क्रिएटिव वीक का प्रतिवेदन प्रस्तुत करते हुए बताया कि इसमें विद्यार्थियों ने हैंडमेड जूलरी, बेस्ट आउट ऑफ वेस्ट, नृत्य, गायन, अभिनय एवं पत्रकारिता विधा में एक से बढ़कर एक प्रस्तुति देकर प्रतिभा का प्रदर्शन किया। प्रस्तुतियों के दौरान फोटोग्राफी, वीडियोग्राफी कु. क्रिस्टीन ने की जब कि प्रभावोत्पादक प्रकाश व्यवस्था का जिम्मा आशीष ने व साउण्ड के दायित्व को दीपेश ने बखूबी अंजाम दिया। मौजूदा सरकारी व सामाजिक व्यवस्थाओं की विसंगतियों की ओर अंजली शर्मा ने कविता के माध्यम से उंगली उठाई। प्रो. नरेन्द्र गोयल ने पूरे वीक की क्रिएटिवीटी को अपनी अनुभवी दृष्टि दी तो प्राचार्य विप्रा सुखवाल के बेहतर समन्वय से सप्ताह सफलता की सोपान चढ़ा। ***प्रस्तुति : गौरव शर्मा***

सामाजिक परिवर्तन के मार्गदर्शक: संत रविदास

राजवीर

आर्थिक परेशानी के दौर में संत रविदास (रैदास) को काशी नरेश ने स्वर्ण मुद्राएं देनी चाहीं, लेकिन उन्होंने यह कहते हुए विनम्रता पूर्वक इन्कार कर दिया कि उनके पास ईश-भक्ति का इतना बड़ा खजाना है कि उसके सामने तो ये स्वर्ण मुद्राएं कुछ भी नहीं। वे जातिगत भेदभाव, अंध विश्वास और कुरीतियों के प्रबल विरोधी थे।

संत रविदास एक दलित परिवार में पैदा हुए। उन्होंने, अपने नाम के अनुरूप ही भक्ति ज्ञान और वैराग्य का प्रकाश फैलाया। उनके पिता रघुदास और माता करमा थीं। इनका जन्म स्थान काशी के निकट मांडुर (संभवत: मंडुवाडीह) में हुआ। गुरू गोविन्द सिंह के समकालीन संत करमदास द्वारा रचित 'रविदास-महिमा' ग्रंथ में उनकी जन्मतिथि (माघ शुक्ल पूर्णिमा) का वर्णन है- ''चौदह सौ तैंतीस की माघ सुदी पदराय। दुखियों के कल्याण हित प्रगटे श्री रैदास'' वे आचार्य रामनन्द के 12 शिष्यों में एक थे और संत कबीर के समकालीन थे। संत रविदास ने स्वयं अपने गुरू रामानन्द के विषय में कहा है- ''रामानन्द मोहे गुरू मिल्यौ, पाया ब्रह्म बिस्वास। रामनाम तभी रस पियो, रविदासहि भया खलास।'' चित्तौड़ की महारानी मीरा ने रैदास से गुरूज्ञान प्राप्त किया। ''गूरू मिल्या रैदास जी, दीन्ही ज्ञान की गुटकी। चोट लगी निज नाम हरि की, म्हारे हिवड़े खटकी'।

संत रविदास बचपन से ही धार्मिक प्रवृत्ति के थे। पिता रघु इस बात से नाराज थे कि जूते बनाने के पैतृक व्यवसाय में वे सहयोग नहीं करते, जबकि रविदास रात को जाग-जागकर दिन का बचा कार्य पूरा करते थे। वे दिन में साधु-संतों के पास बैठते और उनके सत्संग में पद गाया करते थे। पिता ने उन्हें घर से निकाल दिया। रैदास ने विनम्रता से घर-निकाला स्वीकार किया। उनकी पत्नी भी बहुत अधिक धर्म परायण थीं। उन्होंने ससुर के घर के पीछे ही एक झोपड़ी बनाई, जिसमें रविदास रहने लगे।

रविदास अलमस्त संत थे। वे परिश्रम करते और जो कुछ मांगना होता, ईश्वर से मांगते। काशी नरेश भी उनके शिष्य थे। एक बार काशी नरेश को पता चला कि संत रविदास और उनकी पत्नी बहुत आर्थिक परेशानी में हैं। वह उनकी कुटिया पर पहुंचे और सोने की मुद्राओं से भरा थाल देने लगे। संत रविदास ने कहा कि अभी

उनका मूल्य इतना कम नहीं हुआ है। ईश्वर-भक्ति का इतना बड़ा खजाना उनके पास है कि स्वर्ण मुद्राएं उसके सामने कुछ भी नहीं। जो मांगना होगा, अपने राम से ही मांग लूंगा।

गोस्वामी तुलसीदास और मीराबाई भी संत रैदास के दर्शनों के लिए आया करते थे। कहा जाता है कि तुलसीदास ने जब मानस को पूरा किया तो संत रविदास को सुनाया था। मीराबाई ने उन्हें अपना गुरू माना था। यह भी प्रसिद्ध है कि रैदास स्वामी रामानन्द के सबसे प्रिय शिष्यों में से एक थे। स्वयं स्वामी रामानन्द उनके घर अनेक बार गए। रविदास अहंकार रहित होकर ईश्वर की आराधना करते। राजा-महाराजा उनके द्वार खड़े रहते, लेकिन वे भजन गाते-गाते जूते गांठते रहते। ऐसा विलक्षण संत मिलना असम्भव है।

चित्तौड़गढ़ की कुलवधू राजरानी मीरा, रविदास के दर्शन की अभिलाषा लेकर काशी गई थीं। उन्होंने वहां एक चौक में रविदास को अपनी भक्तमंडली के साथ देखा। मीरा ने रविदास से श्रद्धापूर्वक आग्रह किया कि वे कुछ समय चित्तौड़ में भी बिताएं। संत मीरा के आग्रह को ठुकरा नहीं पाए। वे चित्तौड़ में कुछ समय तक रहे और अपनी ज्ञान वाणी से वहां के निवासियों को अनुग्रहित भी किया। संत रविदास अक्सर ध्यान की अवस्था में रहते थे। उन्हें सभी प्राणियों में हरि यानी ईश्वर दिखाई पड़ते थे। इसलिए उन्होंने कहा है,'' सब में हरि हैं, हरि में सब हैं, हरि आप ने जिन जाना। अपनी आप शाखि नहीं दूजो जानन हार सयाना'' उसी पद में यह भी कहा गया है, ''मन चिर होई तो कोउ न सूझै जानै जीवनहारा। कह रैदास विमल विवेक सुख सहज स्वरूप संभारा।'' संत रविदास की दृष्टि में समाज में जाति-पाति एवं वर्ण-अवर्ण के भेदभाव व्यर्थ हैं। जैसा कि उन्होंने कहा है,' रैदास जन्म के कारणे, होत न कोई नीच। नर को नीच करि डारि है। ओछे कर्म की कीच।' संत रविदास के आत्मदर्शन एवं मन की निर्मलता को देखकर कई लोग उनके भक्त ही गए। वे जहां भी जाते, लोग उनके आकर्षण में बंधकर उनके पीछे-पीछे चल पड़ते थे। वास्तव में, उनके प्रवचन हृदय का भेदन करने वाले होते थे। उनकी त्यागमय वाणी और व्यवहार दीपक के समान थे। इससे उस समय व्याप्त सामाजिक कुप्रथाओं से फैला अंधकार मिटा।

साधु-सन्यांसी एवं गृहस्थ साधकों के लिए संत रविदास की वाणी मार्गदर्शक थी। स्वामी रामानन्द के ग्रंथ के आधार पर संत रविदास का जीवनकाल संवत् 1471 से 1597 है। सच तो यह है कि एक सौ छब्बीस वर्ष का दीर्घ जीवन उन्होंने अपनी योग और साधना के बल पर ही जीया। संत रविदास की वाणी आज भी प्रासंगिक है। यदि हम उनके कथन 'ईश्वर की नजर में सभी जीव समान हैं, इसलिए उनका सम्मान करना चाहिए।' का अपने जीवन में पालन करें, तो किसी दूसरे व्यक्ति को कभी कष्ट न देने का विचार ही अपने मन में नहीं ला पाएंगे।

With Best Compliments from

KUSHAL GAS AGENCIES

- Reliance Gas Distributor
- Govt./Institutional Medicine Supplier
- C & F Otsuka Pharmaceutical India Pvt. Ltd,
- C & F Hindustan Colas Pvt. Ltd.

Shop No.-2,
302, Shubh Apartment,
99, Bhupalpura, Udaipur
Mob. No. - 9414166123

KUSHAL Distributors

- Pharmaceutical Stockist of fressenius, Abbott, Sanofi, Troikaa Talent India, Gland Abaris, Ind. Swit, J&J, Otsuka, Macleods Medley, Overseas, TPL, Inven
- Govt./Institutional Supplier

10-11, 13-14, Mahaveer Complex, 5-C Madhuban,
Udaipur
Mob. No. – 9414165123

KUSHAL Enterprises

- Product Promoter - Reliance HSD & LDO (Industrial Marketing Division)
- Product Promoter - Valvoline Lube (Industrial Marketing Division)
- Service Provider for Bitumen

Shop. No.-1,
302, Shubh Appartment
99, Bhupalpura, Udaipur
Mob.No. – 8003566333

KUSHAL Solutions

Stockist & Hospital Supplier of
- Johnson & Johnson
- LEPU
- Nephrological Product

413, Shreenath Plaza
Opp.- M.B. Govt. Hospital
Udaipur
Mob. No. - 8290800888

वही खिलेगा दृष्टिकोण जिसे मिलेगा पोषण

डॉ. शैलजा सेन

बच्चों के मन में सकारात्मकता और नकारात्मकता दोनों तरह के बीज मौजूद होते हैं। माता-पिता जिस बीज का पोषण करते हैं वही खिल कर पौधे के रूप में सामने आता है। हमारा प्रयास होना चाहिए कि बच्चों में नकारात्मकता उभरने न पाए और सकारात्मकता लगातार बढ़ती जाए।

जब हम बच्चों को कुछ ऐसे काम करते पाते हैं, जिनसे हम सहमत नहीं, तो हम क्या करते हैं? हम प्रतिक्रिया देने वाले माता-पिता बन जाते हैं। हम आलोचना करते हैं, शिकायत करते हैं, तुलना करते हैं, व्यंग्यात्मक टिप्पणी करते हैं या ताना देने लगते हैं। अक्सर हम भाषण और टिप्पणियों के साथ अपनी प्रतिक्रियाओं की आग उगलते हैं। जब इनमें से कुछ काम नहीं करता, तो हम उन पर चिल्लाते हैं और सजा देते हैं। बच्चे भी विद्रोह, क्रोध, आक्रोश के साथ बराबर की नकारात्मक प्रतिक्रिया देते हैं, उनका रवैया ऐसा हो जाता है, जैसे उन्हें कुछ फर्क नहीं पड़ता हो। इससे हमारी प्रतिक्रियात्मक रणनीति विफल हो जाती है, बल्कि ऐसा व्यवहार बच्चों के विकास के लिए हानिकारक भी साबित हो सकता है। बौद्ध जेन मास्टर थिच न्हाट हान के अनुसार प्रत्येक बच्चे में क्रोध, निराशा, घृणा, भय और हिंसा के साथ ही प्रेम, खुशी, करुणा और क्षमा के बीज भी होते हैं। उनके अनुसार, हम जिस बीज का पोषण करते हैं, वही हमारे सामने खिलकर पौधे के रूप में सामने आता है।

जानते हैं कि यह कैसे काम करता है-

इस दृष्टिकोण का पालन करने वाले माता-पिता ऐसा कुछ नहीं करते या कहते, जो बच्चों में नकारात्मकता बढ़ाए। यदि किसी वक्त ऐसा लगता है कि वे प्रतिक्रिया दे रहे हैं, तो वे अपने आपको रोकते हैं और बच्चों में नकारात्मकता नहीं आने देते। वे अपनी कोई भी बात गुस्से या आक्रोश के बिना ही बच्चों के सामने रखते हैं।

आजमाएं नया तरीका

पेरेटिंग और शिक्षा का एक नया तरीका इन दिनों अंतरराष्ट्रीय स्तर पर काफी लोकप्रिय हो रहा है। हॉवर्ड ग्लासर ने इसे नर्चर्ड हार्ट एप्रोच (एनएचए) का नाम दिया है, जो पूरी तरह से जेन दृष्टिकोण पर आधारित है। इस दृष्टिकोण के तीन मुख्य पहलू हैं–

नकारात्मकता को नहीं उभरने देना

सकारात्मकता को लगातार आगे बढ़ाना

रीसेट :यदि बच्चा कुछ गलत भी करे तो नकारात्मक प्रतिक्रिया न करें और शांत रहें।

जो माता-पिता नकारात्मकता दूर करने के मिशन पर होते हैं, वे बच्चों में सकारात्मकता को सक्रिय करने का कोई अवसर छोड़ते नहीं हैं। आप छोटी से छोटी चीज में बच्चों में अच्छाई की लगातार सराहना कर सकते हैं, जैसे- तुमने बहन के साथ पिज्जा शेयर कर अच्छा काम किया, अपने प्रोजेक्ट में तुमने काफी मेहनत की है, किसी परेशान करने वाले के सामने डटकर खड़े होना साहस का काम है। 'अच्छा' या 'बहुत अच्छा' कहने से ही प्रशंसा नहीं होती। इसमें बच्चे के लिए ज्यादा कुछ नहीं बोला जाता। अच्छी प्रशंसा करने से बच्चे को दिशा मिलती है, वह समझने लगता है कि उसके कौन से कार्य और क्षमता की सराहना की गई है। यही जीवन-कौशल और सफलता के लिए आवश्यक तत्व भी साबित हो सकता है।

पहचानें बच्चे का मूल्य

यह दृष्टिकोण सिर्फ बच्चे की अच्छाई पर ध्यान देने तक सीमित नहीं, बल्कि इसमें हर कदम पर बच्चे का मूल्य पहचानने की कोशिश होती है। बच्चे की ऊर्जा को एकत्रित कर उसे अहसास करवाया जाता है कि उसके पास विशिष्ट गुण हैं और माता-पिता को उस पर भरोसा है। बच्चे में सकारात्मकता हो, तो वह नकारात्मक विचारों की ओर उन्मुख नहीं होता। उसे यह पता होता है कि नकारात्मकता से कोई फायदा नहीं मिलने वाला। इसलिए कोशिश करें कि आप बच्चे के भीतर के खजाने को सकारात्मकता के साथ आगे बढ़ाएं।

बनाएं स्वस्थ संबंध

नर्चर्ड हार्ट एप्रोरी (एनएचए) स्वस्थ संबंध बनाने पर केंद्रित है। यह रिश्तों को निखारता है और बातचीत के तरीकों को बेहतर बनाने के लिए जागरूकता और समझ विकसित करता है। यह समस्याओं की बजाय अच्छाई पर प्रकाश डालता है। यह परेशानी से गुजर रहे बच्चों को उनकी क्षमता और ऊर्जा पर ध्यान केंद्रित करने के लिए प्रेरित करता है जो उन्हें भावुक और उद्देश्यपूर्ण जीवन जीने में मदद करता है।

(लेखिका दिल्ली की बाल और किशोर मनोवैज्ञानिक और पारिवारिक चिकित्सक हैं)

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

Purohit Cafe

A South Indian Food Joint

N. K. Purohit

आपका विश्वास ही हमारी पहचान

वर्ष 1970 से 1980 तक दुबई में तथा 1981 से 1986 तक लंदन-अमेरिका में सफल सेवाओं के बाद अब 1987 से उदयपुर शहर में

(तीन दशक से आपके विश्वास पर खरा सिद्ध)

❊ कैफे में पधारकर एक बार सेवा का मौका अवश्य देवें। ❊ आप व आपके परिवार की जायकेदार और लाजवाब पसंद, शुद्ध और स्वादिष्ट इडली, डोसा, मसाला और अन्य व्यंजन। ❊ सपरिवार बैठने की व्यवस्था। ❊ पूर्ण रूप से वातानुकूलित, शान्त एवं आरामदायक। ❊ सेवकों द्वारा विनम्र आवभगत।

"Anand Plaza" Nr. Ayad Bridge, University Road,
Udaipur (Raj.) 313 001 Ph. : 0294-2429635
Visit us : www.purohitcafe.com

आनंद के भाव को सर्वव्यापी बनाते हैं- महादेव

नीरजा माधव

भगवान शिव संघार से पहले सृजन के देवता हैं। महाशिवरात्रि के दिन उनका देवी पार्वती के साथ पाणिग्रहण हुआ था, अतएव हिंदू धर्म में इस दिवस का बड़ा महत्व है। इस महारात्रि को सृजन और साधना की महारात्रि के रूप में अनुष्ठान पूर्वक मनाया जाता है। महादेव योगी भी हैं, गृहस्थ भी। यह अद्भुत सामंजस्य ही उनकी विशेषता है।

आदिदेव महादेव योगी भी हैं और सर्वश्रेष्ठ गृहस्थ भी। दोनों दो छोर हैं। लेकिन अद्भुत सामंजस्य है। महादेव ने इन दोनों छोरों में योगी ऐसे कि स्वयं अपनी वल्लभा गौरी से भी 12 वर्षों तक तपस्या करवाई, तब कहीं हामी भरी। दूसरी तरफ, इतने आदर्श गृहस्थ कि गौरी को अपने आगे स्थान दिया। बैल की सवारी पर भी स्वयं पीछे और पर्वत-नंदिनी उनके आगे। अर्धांगिनी बनाया भी, तो पूर्ण रूप से उसे चरितार्थ करते हुए स्वयं को अर्द्धनारीश्वर रूप में प्रकट भी किया। माया उनकी गोद में विराजती हैं। उनका आधा अस्तित्व बनती हैं, यानी शिव को पूर्णता देती हैं। भवानी के बिना शिव अधूरे हैं। और इस पूर्णता का प्रथम लक्षण ही है परमानंद। वही परमानंद शिव का स्थाई भाव है। यह एक ऐसा दर्शन है, जिसे समझना चाहे, तो एक बच्चा भी समझ ले, अन्यथा जन्म-जन्मान्तर तपस्या के बाद बड़े-बड़े कथित ज्ञानी भी न समझ सके। ध्रुव ने समझ लिया, प्रह्लाद ने समझ लिया, नचिकेता ने भी समझ लिया कि एक असीम सत्ता हमारे आस पास हर क्षण अपने अस्तित्व के साथ है। उसे देखने की अंतर्दृष्टि उत्पन्न करनी चाहिए। व्यक्ति की अपनी रुचि के अनुसार वह सत्ता शिव, विष्णु, शिवा, दुर्गा, धात्री, अन्नपूर्णा, क्षमा, स्वाहा, लक्ष्मी, सरस्वती, काली आदि रूपों में मानस लोक में झिलमिलाती है। लेकिन न समझने वाले भी अनगिनत हर काल में हुए, जिन्हें इन ज्ञानवृद्ध बालकों के सम्मुख अपना वयोवृद्ध होना अधिक महत्वपूर्ण लगा। उसी शिव ने आनंद के देवता कामदेव को भस्म कर दिया। वही कामदेव, वसंत जिसका तुणीर है, आम्र मंजरियों सहित अन्य कई पुष्पों वाला पंचशर है, पुष्प- धन्वा है जो, सुंद रहे और श्रृंगार रस का अधिष्ठान है जो, ऐसे कोमल, सरस और आनंद के साक्षात विग्रह को भस्म किर डालते हैं हमारे भोले बाबा। कामेश्वर से ऐसी उम्मीद नहीं हो सकती। स्वामी अपने सेवक के साथ भला ऐसा क्यों करने लगा?

कामदेव की त्रुटि इतनी ही तो थी कि वह परमानंद के शांत सागर में भी आनंद की लहर उठा गया था, लेकिन उस महायोगी ने उसे भस्म कर दिया। क्षमा भी तो कर सकते थे करुणावतार ? वास्तव में आनंद पर किसी एक या कुछ लोगों का अधिकार नहीं होना चाहिए। जगत के सभी प्राणियों में इसका स्फुरण होना चाहिए, लहर उठनी चाहिए, और जब लहर होगी, तो अपने आदि स्रोत को खोज ही लेगी। अपना स्वरूप पहचान ही लेगी कि वह है, तो नदी या सागर, भी है, जिसके बिना उसका अस्तित्व नहीं। इसलिए शिव ने कामदेव को भस्म किया। अपने स्थूल रूप में कामदेव सबका नहीं हो सकता। इसलिए उसे जलाकर भस्म करते हैं, उसके स्व को विसर्जित कर देते हैं। अहम को राख बना देते हैं और तब वह पूरे ब्रह्मांड का हो जाता है, चर-अचर सृष्टि का हो जाता है। भस्म बना सब में बांट देते हैं शिव । अहम विगलित और स्व विसर्जित भस्म को अपने पूरे तन पर लेप लेते हैं। यह आनंद को पूर्ण रूपेण स्वीकार करने की स्थिति है, परमानंद की अवस्था है। इसलिए वह कामेश्वर हैं, और जगदंबा कामेश्वरी ।

एक स्वाभाविक प्रश्न उठता है कि जब सब कुछ भस्म हो गया, तो उसमें बचा क्या, जिसे धारण किया जाए? तत्व क्या रहा? एक छोटे से लौकिक उदाहरण से समझा जा सकता है। भैषज्य शास्त्रों में भस्म की महती उपयोगिता बतलाई गई है। कुशल वैद्य विभिन्न रोगों के निदान औरबल, ओज वृद्धि के लिए औषधि के रूप में भस्म देते हैं। स्वर्ण भस्म, मुक्ता आदि के औषधीय गुण सर्वविदित हैं। शिव इसीलिए काम को भस्म करते हैं। उसके आत्म को सर्वास्म बनाते हैं। उसके स्व के अर्थ,(स्वार्थ)को निःस्वार्थ और नित्य बनाते हैं।

द्वादश ज्योर्तिलिंग

1. श्री सोमनाथ, सौराष्ट्र (गुजरात)
2. श्री मल्लिकार्जुन, कुर्नुल (आंध्रप्रदेश)
3. श्री महाकालेश्वर, उज्जैन (मध्यप्रदेश)
4. श्री औंकारेश्वर, नर्मदा तट (मध्यप्रदेश)
5. श्री केदारनाथ, अलखनंदा तट (उत्तराखंड)
6. श्री भीमशंकर, सह्याद्रि पर्वत (महाराष्ट्र)
7. श्री काशी विश्वनाथ – वाराणसी (उत्तरप्रदेश)
8. श्री त्र्यम्बेकेश्वर,नासिक (महाराष्ट्र)
9. श्री वैद्यनाथ, देवघर (झारखंड)
10. श्री नागेश्वर, दारूकावन, द्वारिका (गुजरात)
11. श्री रामेश्वरम्, रामेश्वरम् (तमिलनाडु)
12. श्री घुश्मेश्वर, औरंगाबाद (महाराष्ट्र)

मेवाड़ के प्रसिद्ध बारह शिव मंदिर

1. श्री एकलिंगनाथ, कैलाशपुरी
2. श्री परशुराम महादेव,राजसमंद
3. श्री कुंतेश्वर (पाताल मंदिर), कोटड़ा
4. श्री जरगाजी, पलासमा, गोगुंदा
5. श्री कमलनाथ,आवरड़ा, झाड़ोल
6. श्री रामकुंडा महादेव – ओगणा
7. श्री संकट मोचक नीलकंठ महादेव – गोगुंदा
8. श्री फरारा महादेव, राजसमंद
9. श्री उभयेश्वर महादेव, कोड़ियात
10. श्री हरिणेश्वर महादेव, भीलवाड़ा
11. श्री बुलबुला महादेव, छोटी सादड़ी
12. श्री उमरिया महादेव, कोटड़ा

परमानंद की ओर निष्काम यात्रा बनाते हैं। इसी यात्रा में जीव बार-बार लहरें बनाता है। किनारों से टकराता है, पछाड़ें खाता है, आगे आता है, पीछे छूटता है, कभी उसी के नीचे दम तोड़ देता है, बुदबुद बनता है, बनाता है और मिटता-मिटाता रहता है। अंत में अनगिनत रूप धर लहरें थक-हारकर नित्य विश्रांति का अपना उद्गम पा ही जाती हैं, सागर में अपना अस्तित्व विगलित कर स्वयं शांत हो जाती हैं। मुक्ति की इस अवस्था को देखने के लिए दृष्टि खोलने की आवश्यकता है, लहर बनकर फेनिल किनारों पर सिर पटकने से कुछ नहीं मिलता।

यूं करें शिवलिंग पूजन

अध्यात्म में तीन रात्रियां अपना विशेष महत्व रखती हैं, जिन्हें कालरात्रि, महारात्रि और महोरात्रि के रूप में जाना जाता है। दीपावली और होली की रात्रि को कालरात्रि, शिवरात्रि को महारात्रि तथा नवरात्र में अष्टमी की रात्रि को महोरात्रि कहा गया है। प्रत्येक उत्सव का अपना विशेष महत्व है। लेकिन ये तीन महापर्व पूजा, अनुष्ठान एवं साधना के लिए प्रमुख माने जाते हैं। शिवरात्रि को महारात्रि कहने का अपना इतिहास है। इसी दिन शिव-पार्वती विवाह बंधन में आबद्ध हुए थे।

शिव-शक्ति के मिलन की इस महारात्रि को स्वनिर्मित शिवलिंग के पूजन का विशेष महत्व शास्त्रों और धर्म ग्रंथों में वर्णित है। इस शिवलिंग को तैयार करने के लिए शुद्ध चिकनी मिट्टी, दही, घृत, शहद, शर्करा, गुलाब जल, गाय का दूध, इत्र, केसर, कपूर, रक्त- चन्दन, श्वेत- चन्दन, बेल और धतूरे के बीज, श्वेत मदार के पुष्प और गंगाजल को अच्छी तरह मिला कर अर्घा सहित शिवलिंग तैयार करें और किसी पात्र में स्थापित करें। प्रदोष काल में श्वेत वस्त्र धारण कर कुश-आसन पर पूर्व या उत्तर दिशा की ओर मुख कर बैठें। सर्वप्रथम गंगाजल, पंचामृत और गुलाब जल से इन मंत्रों का उच्चारण करते हुए एक धार में स्नान कराएं- भवम् देवम् तर्पयामि, सर्व देवम् तर्पयामि, ईशान देवम् तर्पयामि, पशुपति देवम् तर्पयामि, रुद्र देवम् तर्पयामि, उग्र देवम् तर्पयामि, भीम देवम् तर्पयामि, महान्तम् देवम् तर्पयामि। स्नान के बाद

सबसे ऊंची शिव प्रतिमा

नाथद्वारा में गणेश टेकरी पर विश्व की सबसे ऊंची (351 फीट) शिव प्रतिमा है। ध्यान मुद्रा में बिराजे शिव की इस प्रतिमा का अनावरण पिछले वर्ष अक्टूबर में राम कथा मर्मज्ञ संत मोरारी बापू के सानिध्य में सम्पन्न हुआ।

शाम्ब सदा शिवाय, नमः बोल कर वस्त्र, नमः शिवाय कालाय नमः बोल कर केसर युक्त चन्दन का तिलक करें, नमः शिवाय कल विकरणाय नमो नमः से अक्षत और पुष्प अर्पित करें। तीन दल वाले पांच बेल-पत्र गुलाब-जल में भिगो कर एक-एक मंत्र का उच्चारण कर शिवलिंग के ऊपर अर्पित करें। आकाश तत्वाम् पार्वती महेश्वराभ्याम् नमः वायु तत्वाम् सती महेश्वराभ्याम् नमः। जल तत्वाम् उमा महेश्वराभ्याम् नमः। पृथ्वी तत्वाम् प्रकृति तत्वाम् नमः। अग्नि तत्वाम् महेश्वराभ्याम् नमः। अग्नि तत्वाम् शक्ति महेश्वराभ्याम् नमः इसके बाद नमः शिवाय भवोद्भवाय भूतदमनाय नमः से धूप दिखाएं। नमः शिवाय मनोन्मनाय नमः ! से दीप दिखाएं। नमः शिवाय ! से नैवेद्य और जायफल चढ़ाएं। इसके बाद लौंग इलायची के साथ ताम्बूल अर्पित करें।

पूजन के बाद शिव-शक्ति के स्वरूप का ध्यान करते हुए नमः शिवाय मंत्र की माला जाप कर एक माला शिव-गायत्री महादेवाय विद्यहे रुद्र मूर्तय धीमहि तन्नो शिवा प्रचोदयात् मंत्र का जाप कर आरती और पुष्पांजलि अर्पित कर अनुष्ठान पूर्ण करना चाहिए। शिवरात्रि की रात्रि भजन कीर्तन के साथ सपरिवार रात्रि जागरण करने का विशेष महत्व है।

- बिहारी लाल तिवारी

कलेक्टर को आडावल संस्कृति सम्मान

उदयपुर। सीएम अशोक गहलोत ने शुक्रवार को उदयपुर प्रवास के दौरान कलेक्टर ताराचंद मीणा को राजस्थानी भाषा के राजस्थान साहित्य महोत्सव आडावल का संस्कृति सम्मान दिया है। डॉ. शिवदान सिंह जोलावास ने बताया कि सीएम ने राजस्थानी कला के संरक्षण के लिए किए जा रहे प्रयासों की सराहना की।

इ-बाइक शोरूम का उद्घाटन

उदयपुर। उदियापोल अन्दर स्थित लीला मोटर्स शोरूम पर उपमहापौर पारस सिंघवी व कमला देवी राजपाल ने इलेक्ट्रिक गाड़ी एमएओ को बाजार में उतारा। अजय यादव ने बताया कि 5 मॉडल व 4 रंगों में उपलब्ध है। बेसिक मॉडल जोन्टी प्लस सब्सिडी के बाद 74460 रूपए से शुरू होकर टॉप मॉडल डेढ़ लाख रूपए का है। 30 गाड़ियों की डिलीवरी दी जा चुकी है। इसमें लीथियम बैटरी है, जो फुल चार्ज होने में 3-4 घंटे लेती है, जिसमें ढाई से तीन यूनिट खर्च पर 120 किमी चलती है। लीला मोटर्स के मालिक रौनक राजपाल ने बताया कि प्रतापराय चुघ, विजय आहूजा, मनोज कटारिया, वासुदेव राजानी, भगवानदास छाबड़ा मौजूद थे।

मेवाड़ पॉलीटेक्स को बेस्ट एम्प्लॉयर अवार्ड

उदयपुर। मेवाड़ पॉलीटेक्स लिमिटेड को एम्प्लॉयर एसोसिएशन ऑफ राजस्थान ने बेस्ट एम्प्लॉयर अवार्ड-2022 के सर्टिफिकेट ऑफ एक्सीलेंस के साथ सम्मानित किया। डायरेक्टर सौरभ बापना और शिविका बापना को जयपुर में हुए समारोह में राज्यपाल कलराज मिश्र और उद्योग मंत्री शकुंतला रावत ने सम्मान प्रदान किया। संस्थान को यह सम्मान कंपनी के उत्कृष्ट कार्य, सीएसआर में सराहनीय कार्य, प्रभावी उत्पादकता स्तर के लिए दिया गया।

जेके टायर का कार्बन नेट जीरो बनने का लक्ष्य

नई दिल्ली। ग्रीनेस्ट कंपनी बनने के मिशन के साथ जेके टायर एंड इंडस्ट्रीज लिमिटेड ने वर्ष 2050 तक कार्बन न्यूट्रल बनने का लक्ष्य निर्धारित किया है। ऊर्जा खपत में कमी के प्रयासों के चलते वर्ष 2022 में 9 जीजे टन फिनिश्ड टायर तैयार हुआ, जो कि भारत में सबसे कम है। कंपनी का नवीनीकरण स्त्रोत से अगले 5 वर्ष में 75 फीसदी ऊर्जा हासिल करने का लक्ष्य है। कंपनी के सीएमडी डॉ. रघुवीर सिंघानिया ने कहा कि हमारा फोकस नवीकरणीय स्त्रोतों से ऊर्जा जरूरतें पूरा करने पर है।

आरसीए में वैभव गहलोत की वापसी

जयपुर। राजस्थान क्रिकेट एसोसिएशन के इतिहास में पहली बार पदधिकारियों का निर्विरोध निर्वाचन हुआ। नांदू गुट द्वारा नाम वापसी के बाद डॉ. सीपी जोशी गुट के सभी 6 प्रत्याशियों ने चुनाव में क्लीन स्वीप कर लिया है। जिसके बाद आरसीए की एजीएम में वैभव गहलोत ने लगातार दूसरी बार अध्यक्ष पद का कार्यभार संभाला। वहीं उपाध्यक्ष पद के लिए शक्ति सिंह, सचिव पद पर भवानी समोता, कोषाध्यक्ष पद पर रामपाल शर्मा, संयुक्त सचिव पद पर राजेश भड़ाना और कार्यकारिणी सदस्य के तौर पर फारूक अहमद ने भी पदभार ग्रहण किया।

श्रीमाली का सीमेंट फेक्ट्री में स्वागत

डबोक। इंटक प्रदेशाध्यक्ष और उदयपुर सीमेंट मजदूर संघ संरक्षक जगदीश राज श्रीमाली के राज्य मंत्री बनने के बाद उदयपुर सीमेंट वर्क्स में मजदूर संघ और प्रबंधन ने स्वागत किया। संघ सलाहकार केशुलाल सालवी व महामंत्री मांगी लाल प्रजापत सहित पदाधिकारियों ने अगवानी की। उदयपुर सीमेंट के निदेशक नवीन कुमार शर्मा व एचआर हेड शशिकांत कुमार ने अभिनंदन किया।

पायरोटेक में अमोघ लीला प्रभु का उद्बोधन

उदयपुर। इस्कॉन द्वारका के वाइस प्रेसीडेंट अमोघ लीला प्रभु ने पायरोटेक इलेक्ट्रोनिक्स प्राइवेट लिमिटेड में लीडरशिप स्ट्रगल पर उद्बोधन दिया। उन्होंने सुंदरकांड के उदाहरण के साथ लीडरशिप स्ट्रगल जैसे कठिन विषय को आसान बना दिया। उन्होंने कहा कि एक अच्छे नेता में मूल्य, दृष्टि और चरित्र होना चाहिए। महसूस करवाया कि आध्यात्मिकता से ही इंसान खुश रह सकता है। भगवत गीता को अपने जीवन में लागू करके एक अच्छा लीडर बना जा सकता है। कार्यक्रम में प्रताप सिंह तलेसरा, सीपी तलेसरा, निर्मल कुमार, वीपी राठी, पायरोटेक कंपनी के डायरेक्टर अमित तलेसरा, पायरोटेक ग्रुप बोर्ड के डायरेक्टर और स्टाफ मौजूद रहा।

अनन्ता कॉलेज में 'व्हाइट कोट सरेमनी'

उदयपुर। अनन्ता इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेस एंड रिसर्च सेन्टर, राजसमंद में प्रथम वर्ष के नए छात्रों के लिए 'व्हाइट कोट सरेमनी' व 'इंडक्शन डे' कार्यक्रम हुआ। एग्जीक्यूटिव डायरेक्टर डॉ. नितिन शर्मा ने नव आगंतुक छात्रों को बताया कि जीवन में बीमारी से नहीं जुड़ना है, बल्कि बीमार से जुड़ना है। जिससे आप एक अच्छे

चिकित्सक के साथ-साथ एक अच्छे इंसान बन सकेंगे। नारायण सिंह राव एवं बैंक ऑफ बड़ौदा के मैनेजर पंकज नागौरी ने शैक्षणिक एवं सहशैक्षणिक गतिविधियों में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले छात्रों को प्रोत्साहन पुरस्कार देकर सम्मानित किया। वर्ष 2021-22 के मेधावी छात्रों ने प्रथम वर्ष के छात्रों को 'व्हाइट कोट पहना कर उनका स्वागत किया।

अध्यात्म का सप्तसिंधु मीरा अल्फासा

जब देश ब्रितानी हुकूमत के अधीन था और समाज के दकियानूसी होने के साक्ष्य सामने रखे जा रहे थे, उसी दौरान भारतीय समाज और संस्कृति के पुनर्निर्माण और पुनर्जागरण की प्रक्रिया भी जारी थी। इससे जुड़े नामों का समादर और उनका सांस्कृतिक महत्व बतौर विरासत आज भी कायम है। ऐसा ही एक नाम है महर्षि अरविंद का। मीरा अल्फासा के बारे में कोई भी बात बगैर इस नाम की चर्चा के पूरी नहीं हो सकती। एक क्रांतिकारी से साधक बने अरविंद ने सत्य और अध्यात्म की आधुनिक व्याख्या की प्रस्तुति तो की ही, उन्होंने जीवन और साधना के साझे को एक बड़े उदाहरण के तौर पर भी दुनिया के सामने रखा। इस उदाहरण के सम्मोहन में मीरा अल्फासा सात समंदर पार से भारत खिंची चली आ गई थीं। उनका जीवन भटकाव से एक प्रकाशित दिशा में निरंतर बढ़ते जाने की प्रेरक दास्तान हैं। मीरा का जन्म तो यहूदी धर्म में हुआ पर बाद में उन्होंने हिंदू धर्म अपना लिया। उनका जन्म 21 फरवरी 1878 को पेरिस में हुआ और मृत्यु 17 नवम्बर 1973 को पांडिचेरी में। मीरा के जीवन और ज्ञान के प्रति श्रद्धा रखने वाले उन्हें श्रीमां के नाम से जानते और बुलाते हैं। भारत में वे महान आध्यात्मिक गुरु और संत बनकर उभरी और महर्षि अरविंद की गीता और वेद की व्याख्या को आगे प्रसारित किया। बाल्यकाल के अनुभव के बारे में मीरा ने खुद बताया कि पांच वर्ष की उम्र में वो खुद को दूसरी दुनिया से आई मानती थी। 13 वर्ष तक आते-आते वो अलौकिक विद्या से जुड़े अभ्यास सीखने लगी थी। 20 वर्ष की उम्र तक आते-आते मीरा जीवन से जुड़े कई रहस्यों को लेकर एक निष्कर्ष जैसी स्थिति तक पहुंचने के करीब आ चुकी थीं। उसी दौरान उनको स्वामी विवेकानंद की लिखी एक पुस्तक मिली। यहां से उनकी दिशा भारतीय दर्शन की तरफ मुड़ी, जो फिर कभी न बदली। मीरा की एक दूर की संबंधी शेलोमो अल्फासा उनके बारे में बताती हैं कि 26 वर्ष की उम्र में मीरा एक सपना देखती हैं। इस बारे में वो कहती है कि एक श्याम वर्ण एशियाई पुरुष की आकृति दिखती है। उसे वो कृष्ण कहती हैं। वो कहती हैं कि कृष्ण मेरी अंतर्मन की यात्रा को दिशा देते हैं। कृष्ण के प्रति बढ़ी आसक्ति के बीच मीरा अल्फासा ने हिंदू ग्रंथों का विस्तार से अध्ययन किया। अध्ययन का सघन सिलसिला आगे भी बना रहा। मीरा को महर्षि अरविंद इतनी श्रद्धा के साथ देखते थे कि उन्हें माता कहकर संबोधित करते थे। बाद में यही संबोधन उनके अनुयायियों तक पहुंचा और सब उन्हें श्रीमां कहने लगे। 29 मार्च 1914 को श्रीमां पांडिचेरी स्थित आश्रम पर महर्षि अरविंद से मिली। उन्हें वहां का गुरुकुल जैसा माहौल काफी अच्छा लगा। प्रथम विश्वयुद्ध के समय उन्हें पांडिचेरी छोड़कर जापान जाना पड़ा। वहां उनकी मुलाकात रवीन्द्रनाथ ठाकुर से हुई और उन्हें उनसे हिंदू धर्म और भारतीय दर्शन-संस्कृति का और सहजता से अहसास हुआ। 24 नवम्बर 1926 को मीरा फिर पांडिचेरी लौटी और महर्षि अरविंद की अनन्य शिष्या बन गई। महर्षि अरविंद के ज्ञान के प्रसार और उनके आश्रम की विश्व प्रसिद्धि में श्रीमां का बहुत बड़ा योगदान है। सेवा, आस्था और अध्यात्म के साझे से निर्मित मीरा का व्यक्तित्व आज भी असंख्य लोगों की प्रेरणा है।

- दुर्गेश मेनारिया

पाठक पीठ

आंचलिकता के रसरंग से सरोबार... डॉ. दीपक आचार्य का आलेख अच्छा लगा। वर्तमान में एफएम रेडियो सूचनाओं व मनोरंजन की दृष्टि से काफी लोकप्रिय है। इसके द्वारा कभी-कभार तो अत्यंत महत्वपूर्ण जानकारियां भी मिल जाती हैं, जो सामान्य ज्ञान की दृष्टि से भी उपयोगी होती हैं।

डॉ. नरेश शर्मा, डायरेक्टर,
शांतिराज हॉस्पिटल

अम्बेडकर निर्वाण दिवस (8 जनवरी) पर भारत राष्ट्र के संविधान निर्माता डॉ. भीमराव अम्बेडकर के महत्वपूर्ण योगदान को इंगित करते हुए प्रकाशित प्रगतिशील लेखक वेदव्यास का आलेख 'अब बर्दाश्त नहीं करेंगे' सामयिक है। भारत की आजादी के 75 वर्ष बाद भी अस्पृश्यता अथवा भेदभाव की घटनाएं दु:खद हैं। हम सबको एकजुट रहते हुए राष्ट्र के विकास का हिस्सा बनना है।

राहुल गोरवारा, डायरेक्टर
गोरवारा केमिकल इंडस्ट्रीज

आनंद में जीना बढ़ा देता है-जीवन दीपक चोपड़ा का आलेख प्रत्यूष के जनवरी 23 के अंक की पाठकों को बड़ी सौगात है। चिंता, अवसाद और क्रोध सचमुच मनुष्य के जीवन से आनंद छीन लेते हैं। मन और हृदय को खुला रखना जरूरी है। क्षणभंगुर जीवन मे आपाधापी से कुछ हासिल नहीं होने वाला। देवदुर्लभ मानव देह को आनंद से भोगना है तो अपना-पराया और तेरा-मेरा के भाव को छोड़ना ही पड़ेगा।

अभिषेक सिंघवी, सीएमडी
राजस्थान बेराईट्स

जनवरी 23 के प्रत्यूष अंक में रस चिकित्सा स्तंभ में प्रो. विष्णुदत्त भट्टमेवाड़ा का सामान्य रोगों के उपचार का जो आयुर्वेदिक तरीका बताया गया है, वह निश्चय ही रोगोपचार के साथ-साथ स्वास्थ्य को भी संतुलित रखने वाला है। इस प्रकार की जानकारी के प्रकाशन के लिए आप धन्यवाद के पात्र हैं।

डॉ. कौशल चूंडावत, डायरेक्टर,
संजीवनी हॉस्पिटल

प्रत्यूष
प्रत्यूष पत्रिका में विज्ञापन देने के लिए सम्पर्क करें
75979 11992, 94140 77697

शिल्पशास्त्र के प्रणेता देवशिल्पी विश्वकर्मा

शिल्पशास्त्र के प्रणेता भगवान विश्वकर्मा अपने विशिष्ट ज्ञान-विज्ञान एवं कला-कौशल के कारण न सिर्फ देवताओं बल्कि मानवों द्वारा आदर प्राप्त और पूजित हैं। पौराणिक साक्ष्यों के मुताबिक स्वर्गलोक की इन्द्रपुरी, यमपुरी, वरूणपुरी, कुबेरपुरी, असुरराज रावण की स्वर्णनगर लंका, भगवान श्री कृष्ण की समुद्र नगरी द्वारिका और पाण्डवों की राजधानी हस्तिनापुर के निर्माण का श्रेय भी विश्वकर्मा को ही जाता है। पौराणिक कथाओं में इन उत्कृष्ट नगरियों के निर्माण के रोचक विवरण उपलब्ध हैं। विश्वकर्मा शिल्प शास्त्र के आविष्कारक और सर्वश्रेष्ठ ज्ञाता माने जाते हैं। जिन्होंने विश्व के प्राचीनतम तकनीकी ग्रंथों की रचना की थी। इन ग्रंथों में न केवल भवन वास्तु विद्या, रथ आदि वाहनों के निर्माण बल्कि विभिन्न रत्नों के प्रभाव व उपयोग आदि का भी विवरण है। धर्मग्रंथों में विश्वकर्मा को सृष्टि के रचयिता ब्रह्माजी का वंशज माना गया है। 'विश्वकर्मा प्रकाश' को वास्तु तंत्र का अपूर्व ग्रंथ माना जाता है। इसमें अनुपम वास्तु विद्या को गणितीय सूत्रों के आधार पर प्रमाणित किया गया है। ऐसा माना जाता है कि सभी पौराणिक संरचना भगवान विश्वकर्मा द्वारा निर्मित है। भगवान विश्वकर्मा के जन्म को देवताओं और राक्षसों के बीच हुए समुद्र मंथन से माना जाता है। पौराणिक युग के अस्त्र और शस्त्र भगवान विश्वकर्मा द्वारा ही निर्मित हैं। वज्र का निर्माण भी उन्होंने की किया था। हमारे धर्मशास्त्रों और ग्रंथें में विश्वकर्मा के पांच स्वरूपों और अवतारों का वर्णन प्राप्त होता है। भगवान विश्वकर्मा जी को धातुओं का रचयिता कहा जाता है और साथ ही प्राचीन काल में जितनी राजधानियां थीं, प्राय: सभी उन्हीं के द्वारा निर्मित थी। सतयुग का स्वर्गलोक, त्रेता युग की लंका, द्वापर की द्वारिका और कलयुग का हस्तिनापुर भी विश्वकर्मा द्वारा ही रचित है, स्वर्गलोग से लेकर कलयुग तक भगवान विश्वकर्मा जी की रचना को देखा जा सकता है। भगवान विश्वकर्मा जी के जन्म के संबंधित एक कथा यह भी है कि सृष्टि के प्रारंभ में सर्वप्रथम नारायण अर्थात साक्षात विष्णु आविर्भूत हुए और उनकी नाभि कमल से चर्तुमुख ब्रह्मा दिखाई दे रहे थे, ब्रह्मा के पुत्र धर्म तथा धर्म के पुत्र वास्तुदेव हुए, कहा जाता है कि धर्म को वस्तु नामक स्त्री (जो दक्ष की कन्याओं में एक थी) से उत्पन्न वास्तु सातवें पुत्र थे, जो शिल्पशास्त्र के आदि प्रवर्तक थे, उन्हीं वास्तुदेव की अंगिरसी नामक पत्नी से विश्वकर्मा उत्पन्न हुए। पिता की भांति विश्वकर्मा भी वास्तुकला के अद्वितीय आचार्य बने। भगवान विश्वकर्मा जी के अनेक रूप हैं और हर रूप की महिमा अनंत है। दो बाहु, चार बाहु एवं दश बाहु तथा एक मुख, चारमुख एवं पंचमुख, भगवान विश्वकर्मा जी के मनु, मय, त्वष्टा, शिल्पी एवं दैवज नामक पांच पुत्र हैं और साथ ही यह भी मान्यता है कि ये पांचों वास्तु शिल्प की अलग-अलग विधाओं में पारंगत हैं। भगवान विश्वकर्मा की महत्ता स्थापित करने वाली एक कथा और भी है, जिसके अनुसार वाराणसी में धर्मपरायण एक रथकार पत्नी के साथ रहता था। वो अपने कार्य में निपुण था, परंतु स्थान-स्थान पर घूम-घूम कर प्रयत्न करने पर भी भोजन से अधिक कुछ भी प्राप्त नहीं कर पाता था। पति की तरह पत्नी भी पुत्र न होने के कारण चिंतित रहती थी, पुत्र प्राप्ति के लिए वे साधु-संतों के यहां जाते थे, लेकिन यह इच्छा उनकी पूरी न हो सकी। अचानक एक दिन पड़ोसी ब्राह्मण ने रथकार की पत्नी से कहा कि तुम भगवान विश्वकर्मा की शरण में जाओ, तुम्हारी इच्छा पूरी होगी और अमावस्या की तिथि को व्रत कर भगवान विश्वकर्मा महात्म्य को सुनो। इसके बाद रथकार एवं उसकी पत्नी ने अमावस्या को भगवान विश्वकर्मा की पूजा की, जिससे उसे धन-धान्य और पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई और वे सुखी जीवन व्यतीत करने लगे। भगवान विश्वकर्मा की महिमा का कोई अंत नहीं है। इसलिए आज भी संसार में लोग विश्वकर्मा का पूजन पूर्ण विधान के साथ करते हैं।

- जगदीश अग्रवाल

विश्वकर्मा पूजा

विराट विश्वकर्मा – सृष्टि के रचयिता
धर्मवंशी विश्वकर्मा– महान शिल्प विज्ञान विधाता प्रभात पुत्र
अंगिरावंशी विश्वकर्मा – आदि विज्ञान विधाता वसु पुत्र
सुधन्वा विश्वकर्मा–महान शिल्पाचार्य विज्ञान जन्मदाता ऋशि अथवी के पौत्र
भृंगुवंशी विश्वकर्मा– उत्कृष्ट शिल्प विज्ञानाचार्य (शुक्राचार्य के पौत्र)

सत्यमेव जयते
राजस्थान सरकार

भारत का गणतंत्र देता है हमें - अधिकार

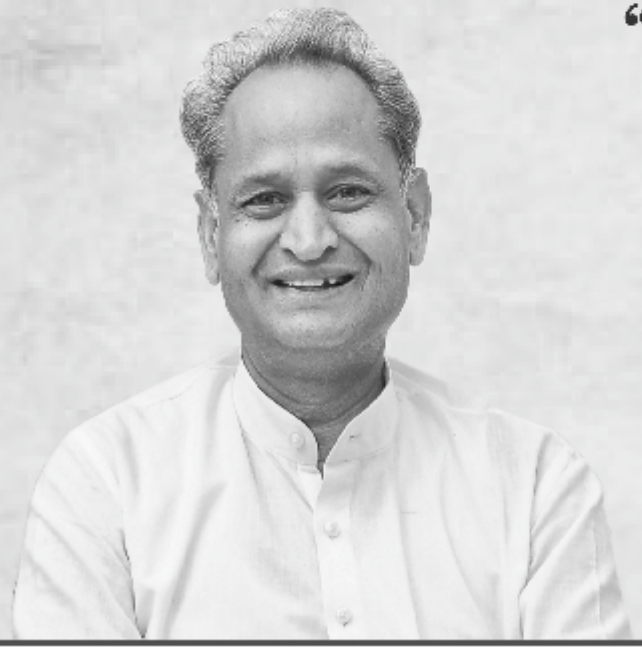

"भारत के गणतंत्र ने सबको स्वतंत्रता से जीने का अधिकार दिया है। अधिकार - वोट देने का, अपनी बात कहने का, अपने धर्म और सम्प्रदाय को बिना किसी दबाव के मानने का। अधिकार - भारतीय कहलाने का।

नागौर (राजस्थान) से 2 अक्टूबर, 1959 को देश में पंचायती राज की शुरुआत की गई। जिससे नागरिकों को अधिकार मिला कि वे गाँव के स्तर पर अपनी सरकार चुन सकें।

इसी क्रम में बीते दिनों में राज्य सरकार ने दिया आपको - स्वास्थ्य सेवाओं का अधिकार, FIR दर्ज कराने का अधिकार एवं उड़ान योजना के माध्यम से 15 से 55 वर्ष की महिलाओं को स्वस्थ-स्वच्छ रहने का अधिकार। खाद्य सुरक्षा का अधिकार, शिक्षा का अधिकार, सूचना का अधिकार (RTI) एवं माता-पिता के भरण-पोषण के अधिकार से तो नागरिक पहले से ही लाभान्वित हो रहे हैं।

नागरिकों को और भी अधिकार मिलें, जिससे वे सशक्त हों। यह हमारा ध्येय है।

73वें गणतंत्र दिवस की आप सभी को हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं।"

अशोक गहलोत
मुख्यमंत्री, राजस्थान

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, राजस्थान

भारत की 29 दुर्लभ प्रजातियों पर भी मंडराया खतरा

विलुप्ति के कगार पर 42,000 प्रजातियां

प्रकृति के संरक्षण के लिए अंतरराष्ट्रीय संघ (आईयूसीएन) ने कनाडा में सीओपी-15 जैव विविधता सम्मेलन के दौरान विलुप्ति के कगार वाले जीवों एवं पादप प्रजातियों की सूची जारी की है। आईयूसीएन विलुप्त सूची का उपयोग करता है। इस सूची में भारत में पाए जाने वाले अंडमान स्मूथहाउंड शार्क और येलो हिमालयन फ्रिटिलरी (एक प्रकार का औषधीय पौधा), अफ्रीकी डगोंग समेत 42,000 से ज्यादा दुनियाभर की उन प्रजातियों को दर्शाया गया है, जिनके खत्म होने का खतरा है।

भारत में पाया जाने वाला सफेद गालों वाला डांसिंग फ्रांग (मेंढक), अंडमान स्मूथहाउंड शार्क और येलो हिमालयन फ्रिटिलरी (एक प्रकार का औषधीय पौधा) उन 29 प्रजातियों में शामिल हैं, जो विलुप्त होने की कगार पर हैं। प्रकृति के संरक्षण के लिए अंतरराष्ट्रीय संघ (आईयूसीएन) की लाल सूची के नवीनतम आंकड़ों के हिसाब से विलुप्त होने के कगार वाले जीवों और वनस्पतियों की सूची तैयार की गई है, जिसे पिछले दिनों कनाडा में सीओपी 15 जैव विविधता सम्मेलन के दौरान जारी किया गया। आईयूसीएन विलुप्त प्राय: जीवों को वर्गीकृत करने के लिए संकटग्रस्त प्रजातियों की लाल सूची का उपयोग करता है।

सूची के नवीनतम आंकड़ों में चेतावनी दी गई है कि अवैध और अस्थिर रूप से मछली पकड़ने, प्रदूषण, जलवायु परिवर्तन और बीमारियों सहित कई खतरों की वजह से अंडमान स्मूथहाउंड शार्क जैसी समुद्री प्रजातियां नष्ट हो रही हैं।

9 दिसम्बर 22 को जारी की गई आईयूसीएन की लाल सूची दुनिया की जैव विविधता की स्थिति के स्वास्थ्य पर एक महत्वपूर्ण संकेतक है।

यह प्रजातियों के वैश्विक स्तर पर विलुप्त होने के जोखिम की स्थिति के बारे में जानकारी प्रदान करता है- और संरक्षण लक्ष्यों को परिभाषित करने और सूचित करने में मदद करने के लिए एक महत्वपूर्ण माध्यम है। दुनिया भर के 15,000 से अधिक वैज्ञानिक और विशेषज्ञ आईयूसीएन के इस आयोग का हिस्सा हैं। विशेषज्ञों ने पाया कि भारत की भूमि, मीठे पानी और समुद्रों में पौधों, जानवरों और कवक की 9,472 से अधिक प्रजातियों में से 1,355 को लाल सूची में होने के कारण खतरे में माना जाता है, जिन्हें गंभीर रूप से लुप्तप्राय या विलुप्त होने की श्रेणी में माना गया है। आईयूसीएन द्वारा साझा किए गए आंकड़ों के अनुसार भारत में विश्लेषित 239 नयी प्रजातियों को इस लाल सूची में शामिल किया गया है। इनमें से 29 प्रजातियां खतरे में हैं।

भारत के अलावा दुनिया के बाकी हिस्सों में समुद्री जीवों की संवेदनशील लुप्तप्राय प्रजातियों की आबादी, समुद्री घोंघों की कई प्रजातियां और एक प्रकार के कैरेबियन प्रवाल पर विलुप्त होने का खतरा मंडरा रहा है। इस साल, आईयूसीएन डगोंग नामक जीवन पर मंडरा रहे खतरेको लेकर सतर्क कर रहा है। डगोंग- एक बड़ा और शांत समुद्री स्तनपायी जीव है जो अफ्रीका के पूर्व तट से लेकर पश्चिमी प्रशांत महासागर के बीच पाया जाता है।

आईयूसीएन ने एक बयान में कहा कि डगोंग विलुप्त होने के कगार पर है और अब पूर्वी अफ्रीका में उनकी आबादी गंभीर रूप से लुप्तप्राय की श्रेणी में आ गई है। समूह ने कहा कि न्ये कैलेडोनिया में भी डगोंग की आबादी लुप्तप्राय की सूची में शामिल की गई है। आईयूसीएन की लाल सूची में 1,50,000 से अधिक प्रजातियां शामिल हैं। आईयूसीएन का कहना है कि लाल सूची में शामिल 42,000 से अधिक प्रजातियों के विलप्त होने का खतरा हैं।

संकलन : सनत जोशी

पहेली बन गया अदृश्य मेंढक

वाशिंगटन, एजेंसी। दुनियाभर में हर तरह के जीव पाए जाते हैं। अब शोधकर्ताओं ने एक ऐसे मेंढक के बारे में बताया है, जो खुद को अृदश्य कर लेता है। शायद यह दुनिया का पहला ऐसा जीव है। वैज्ञानिकों के लिए यह एक पहेली बना हुआ है कि यह खुद को गायब कैसे करता है। इसे ग्लासफ्रॉग के नाम से जाना जाता है। सामने होते हुए भी इन्हें आसानी से देखा नहीं जा सकता। यह मेंढक जब सोता है तब वह खुद को अदृश्य कर लेता है।

मानव रोगों के इलाज में मददगार होगा: यह ज्यादातर मध्य और दक्षिण अमेरिकी जंगलों में पाए जाते हैं। साइंस जर्नल में प्रकाशित शोध के अनुसार, नॉर्दन ग्लासफ्रॉग पारदर्शी होने के लिए अपने शरीर में खुद के बहाव से करीब 90 प्रतिशत रेड ब्लड सेल को हटाकर उन्हें अपने लीवर में इकट्ठा कर लेता है। उत्तरी कैरोलिना में ड्यूक यूनिवर्सिटी के प्रोफेसर और शोधकर्ता सोके जॉनसन ने कहा, अगर मेंढक की लीवर में ब्लड सेल्स को इकट्ठा करने की प्रक्रिया को समझ लिया जाए तो यह मानव रोगों के इलाज में मददगार साबित हो सकता है।

भीलवाड़ा जिला दुग्ध उत्पादक सहकारी संघ लि.
सरस
सरस अपनाओ, सेहत पाओ
Celebrating
50
Years
ANNIVERSARY
100 % Milk Fat
The Quality You Can Trust
शुद्ध ताजा और स्वादिष्ट
KESAR PISTA SHRIKHAND
दही
ताजा दही
मावा कुल्फी
पनीर
ताजा छाछ
आईस्क्रीम
फलेवर्ड मिल्क
Butter
मावा
राजभोग
pure cowghee
घी

वर्तमान कलिकाल में भगवन्नाम जप अथवा मंत्र जप ही सर्वश्रेष्ठ, सरल और अचूक प्रभाव छोड़ने वाला मार्ग है, जिसका आश्रय ग्रहण करने पर संकल्प सिद्धि से सर्वस्व प्राप्त होने लगता है।

नाम और मंत्र जप से संकल्प सिद्धि

डॉ. दीपक आचार्य

हर व्यक्ति चाहता है आत्म शान्ति। इसके लिए वह लगातार प्रयत्न भी करता है किन्तु मानसिक शान्ति उससे उतनी ही दूर भागती है। मनसिक शान्ति के लिए मन की चंचलता का त्याग आवश्यक है। संतोष और आत्मसंयम से मन की शान्ति के साथ जीवन लक्ष्यों को प्राप्त करना सहज, सरल और आनंददायी हो उठता है। लेकिन यह सब साधारण बात नहीं है, न ही कुछ दिनों और माहों की। निरन्तर अभ्यास जरूरी है। इसके लिए मानसिक स्तर पर आत्मतुष्टि का भाव और आध्यात्मिक ऊर्जा चाहिए।

ईश्वरीय श्रद्धा, प्रगाढ़ आस्तिकता और आध्यात्मिक भावभूमि से अपने संकल्पों को स्थायी एवं सुदृढ़ बनाया जा सकता है। एक बार संकल्प मजबूत होने के बाद तो मनुष्य अपने में कुछ भी परिवर्तन लाने में समर्थ हो सकता है।

इस रहस्य को जान लेने के उपरान्त जीवन की दशा और दिशा ही बदल जाती है। बात चाहे ईश्वर को पाने की हो या किसी सिद्धि की अथवा आत्म आनंद की। इन सभी के लिए रोजमर्रा की जिन्दगी में कुछ समय एकान्त चिंतन के लिए निकालने की आवश्यकता है।

इंसान चाहे तो यह कोई मुश्किल काम नहीं है। कुछ समय अवश्य ही निकाला जा सकता है ताकि उस शून्य काल का उपयोग अन्य दिव्य लोकों तक तरंगीय सम्पर्क के लिए हो सके।

व्यस्तता हर व्यक्ति के साथ रहती है लेकिन व्यस्तता के बीच हम थोड़े क्षण निकाल लें तो निश्चय ही स्वस्थ, मस्त और प्रसन्न रह सकते हैं। जरूरी नहीं कि कठोर साधना ही की जाए। जहां भी समय मिले, हम इसका प्रयोग कर सकते हैं। इसके लिए सर्वश्रेष्ठ और आसान मार्ग है मंत्र जप। जितनी अधिक संख्या में मंत्र जप होंगे, उतना अधिक प्रभाव होगा। और स्फूर्त शरीर के साथ एक आभामण्डल का निर्माण होगा है जो हमेशा साथ रहकर कर्मयोग को परिपुष्ट करेगा यह अन्य लोकों से सूक्ष्म संपर्क स्थापित करने में भी सहायक बनेगा।

मंत्र जप से अपना सूक्ष्म शरीर ताकतवर होता है और इसमें रोगों तथा बाहरी आक्रमणों से लड़ने की जबरदस्त ताकत अपने आप विकसित होती चली जाती है। जितने अधिक मंत्रों का जाप होगा उतना ही सूक्ष्म शरीर के दिव्य आभामण्डल का प्रसार होगा और उसी अनुपात में हम दैवीय शक्तियों का उत्तरोत्तर अधिक घनीभूत अनुभव करने लगते हैं।

मंत्रों का जप केवल जिह्वा या मन से उच्चारण मात्र नहीं है बल्कि मंत्र जप से शरीर के भीतर के चक्र और अन्तस्थ नाड़ियों का स्पन्दन एवं जागरण भी होता है। इनके जागरण से शरीर निर्मल और दिव्य बनता है तथा इसी से रोगों से बचने और लड़ने की स्थितियां प्राप्त होती हैं।

अपने लिए यह बात सिर्फ कहने भर की है कि समय नहीं मिलता, व्यस्तता है आदि-आदि। ये सारे केवल और केवल बहाने भर होते हैं। लेकिन अपनी दिनचर्या पर गौर करें तो हम पाएंगे कि हमारे पास खूब सारा समय ऐसा होता है जिसका उपयोग हम कर सकते हैं लेकिन चंचल मन के पाश में जकड़े होने के कारण करते नहीं हैं।

जैसे कि हम किसी को लेने या छोड़ने बस या रेल्वे स्टेशन पर गए, बस-रेल पहुंचने में देरी हो, किसी दफ्तर में काम से गए और प्रतीक्षा करनी पड़े, मन्दिर गए हों, बस या रेल में सफर कर रहे हों या और ऐसे ही क्षण जब हमें प्रतीक्षा करनी पड़े। ऐसे क्षणों का उपयोग मंत्र जप में किया जाए तो इसका सीधा फायदा मिलेगा ही। मान लीजिए हम अपने निवास से गंतव्य अथवा ल6बी दूरी की यात्रा के लिए बस-रेल में निकलें और एक से लेकर कुछ घण्टे का सफर हो, तब फालतू की बातचीत में समय न गंवाएं, आंखें बंद कर मंत्र जप करते रहें। ऐसे क्षणों का उपयोग करते हुए लाखों मंत्रों का बैलेंस हम बना सकते हैं।

मंत्र ऊर्जा का यह संचय अपने बैंक बैलेंस से भी कई गुना प्रभावी है। मंत्रों की यही ऊर्जा शरीर को रोगों से तो बचाती ही है, आने वाले शुभाशुभ को कभी संकेतों और कभी स्पष्ट तरीकों से बता भी देती है। यह हमारे चित्त की निर्मलता, निष्कपटता और पवित्रता पर निर्भर

है। जितना हम अधिक शुद्ध होंगे, उतने ही ज्यादा तरह से दैवीय संकेतों को स्पष्ट अनुभव करने लगेंगे।

जरूरी नहीं कि कोई बड़ा मंत्र लिया जाए, हमारे जो भी इष्टदेव हों, उनका कोई सा छोटा मंत्र लेकर इसका जप शुरू कर दें। आम तौर पर वही देवी-देवता मनुष्य को प्रिय होते हैं जिनका पूर्व जन्मों में यजन, स्मरण और भजन किया होता है अथवा वंश और कुल परंपरा से चले आ रहे हों।

एक मंत्र को साधने मात्र से दूसरे सभी मंत्र स्वत: सिद्ध होने लगते हैं इसलिये एक मंत्र को अपनाएं और इसका जितना अधिक जप कर सकें, करें। यह मंत्र हमें निरोगी तो रखेगा ही, हमारे मन में जिस किसी काम का संकल्प उठेगा, उसे पूर्ण करने में भी मदद देगा।

फिर जिन दिनों साप्ताहिक अवकाश हो, लम्बे अवकाश हों, उन दिनों को साधना के लिए निकालें तथा घर में या किसी एकान्त स्थान या मन्दिर में जाकर निश्चित संख्या में जप कर लें।

जब किसी मंत्र का जप करें तब माला या मनके गिनने की बजाय इस बात पर ध्यान दें कि जिस देवता का जप हो रहा है, उसमें ही ध्यान लगा रहे। इसके लिए जप करते वक्त आंखों की दोनों भौंहों के बीच, जहां तिलक लगाते हैं, उस स्थान विशेष 'आज्ञा चक्र' में ध्यान करें।

आंखों व शरीर में कहीं भी लेश मात्र भी तनाव नहीं होना चाहिए, एकदम सहज होकर यह सब करें। जब मन में प्रसन्नता हो, तभी भगवान के जप या ध्यान करें। आज्ञा चक्र के भीतर रोशनी का बिन्दु है, इसी भावना को ध्यान में रखकर आगे बढ़ें।

ध्यान के वक्त ड्रीलिंग थैरेपी को अपनाएं यानि की जमीन से पानी निकालने जैसे मशीन से ट्यूबवैल खोदा जाता है, हैण्डपंप ड्रील होता है, उसके बाद पानी निकलता है। इसी प्रकार हम जब ध्यान करेंगे तो पहले पहल पंच तत्वों के अलग-अलग रंग, पहाड़, काले बादल या खूब पसरे हुए घने पहाड़ आदि के स्वरूप दिखने लगते हैं।

यह अपने पूर्वजन्मों की संचित स्मृतियां, पाप राशि या तामसिक स्थितियां हैं, ध्यान व एकाग्रता से मंत्र जप करते हुए इन काले पहाड़ों को पूरी संकल्प शक्ति और सकारात्मकता के साथ ड्रील करने का यह मानसिक अभ्यास जितना अधिक गहरा होता जाएगा, उतना ही आनंद के साथ आत्मतृप्ति का भाव और अधिक गहरा एवं स्थायी होता जाएगा।

तनिक सा भी ही ड्रील हो जाएगा तो हमें भीतर से आनंद प्राप्त होगा। मानसिक रूप से यह संकल्प बनाए रखें कि ड्रील करते हुए लगातार आगे बढ़ रहे हैं और आगे शुभ्र या नीला स्वच्छतम आकाश आने वाला है।

इस भावना से पूरी तन्मयता से यदि जप किये जाएं तो निश्चित ही दिव्य ज्योति व असीम आनंद का अनुभव होगा। ज्यों-ज्यों ध्यान बढ़ेगा, यह असीम आनंद और अधिक पसरता जाएगा और दिव्यत्व तथा दैवत्व का अनुभव स्वत: ही होने लगेगा। एक बात स्मरण रखना जरूरी है कि जिस किसी मंत्र का लाखों की संख्या में जप हो जाता है तब वह सूक्ष्म एवं दिव्य आकार ग्रहण लेता है और हमारे सभी प्रकार के संकल्पों को सिद्ध करने में समर्थ हो जाता है। इस यात्रा के दौरान बीच में जब कभी सूर्य या चन्द्र ग्रहण आए तो ग्रहण काल में पूरे समय इसी मंत्र का जप कर लें तो मंत्र सिद्ध हो जाएगा और इसके अद्भुत चमत्कारिक लाभ प्राप्त होंगे।

महावीर लाल जैन
डायरेक्टर

विनोद जैन
डायरेक्टर

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

नवकार

नवकार स्टील
6, चौरवला बाजार,
चित्तौड़ा मन्दिर के नीचे
भोपालवाड़ी, उदयपुर,
फोन : 0294 2420579

नवकार मेटल
7, भांग गली,
सूरजपोल अन्दर,
उदयपुर
फोन : 0294 2417354

डीलर : स्टील, पीतल, तांबा, एल्यूमीनियम बर्तन, गिफ्ट आईटम और कुकर पार्ट्स के होलसेल व रिटेल विक्रेता।

देव-संसद में मामलों की सुनवाई

नंदकिशोर शर्मा

देवभूमि हिमाचल में देव परंपरा वैदिक काल से ही चली आ रही है। प्रदेश के कुल्लू जिले में आज भी ऐसी अनूठी धर्म संसद लगती है, जहां सामाजिक एवं दैवीय मामलों को निपटाया जाता है। स्थानीय भाषा में उसे 'जगती' कहते हैं।

देवभूमि हिमाचल में देव परंपरा वैदिक काल से ही चली आ रही है। इसी परंपरा ने हमारी समृद्ध संस्कृति को भी जीवित रखा हुआ है। जिला कुल्लू में आज भी ऐसी अनूठी धर्म संसद लगती है जहां इंसानों के साथ-साथ देवी-देवताओं के मामले भी निपटाए जाते हैं। स्थानीय भाषा में उसे जगती कहते हैं। कुल्लू जनपद में ऐसी ही परंपरा है जगती पूछ। विश्व कल्याण या किसी अहम मुद्दे के लिए होने वाले इस जगती को देव संसद या धर्म संसद भी कहा जाता है। जब-जब विश्व में प्राकृतिक आपदा की संभावना होती है, तब-तब कुल्लू के देवी-देवता यहां के राज परिवार के प्रमुख को जगती पूछ के आयोजन करने का आदेश देते हैं।

कैसे बुलाई जाती है जगती

देव समाज के इस अद्भुत आयोजन में घाटी के देवता शिरकत करते हैं। सबसे पहले राज परिवार का बड़ा सदस्य यानी राजा की ओर से देवताओं के प्रतिनिधियों यानी गुर, पुजारी और कारदार को निमंत्रण यानी छिंदा देता है। उसके बाद तय तिथि और स्थान पर सभी देवता जगती के लिए एकत्रित होते हैं। इस दिन भगवान रघुनाथ के छड़ीबरदार सबसे पहले भगवान की पूजा करने के बाद जगती में शामिल होने वाले सभी देवताओं के गुर के आगे पूछ डालते हैं। इसके साथ ही जिस विषय पर जगती बुलाई जाती हैं, उसपर राय ली जाती हैं। पूछ के जरिए सभी गुर अपने देव वचन सुनाते हैं। देवताओं के संयुक्त विचार के बाद एक फैसला सुनाया जाता है।

यहां होता है जगती का आयोजन

जगती का आयोजन भगवान रघुनाथ जी के मंदिर, नग्गर स्थित जगती पट मंदिर, ढालपुर मैदान में किया जाता है। इसमें देवता किसी समस्या पर हल निकालने के लिए यह करवाते हैं। वहीं राज परिवार के सबसे बड़े सदस्य भी किसी विशेष समस्या या विश्व शांति के लिए इसको बुलाते हैं।

ये देवता निभाते हैं अहम भूमिका

जगती के दौरान इसमें भाग लेने वाले देवताओं को निमंत्रण के बाद इसमें भाग लेना या न लेना उनकी मर्जी पर होता है। लेकिन इसमें नग्गर की देवी त्रिपुरा सुंदरी, कोटकंडी के पंजवीर देवता, देवता जमलू और माता हिडिंबा की मुख्य भूमिका रहती है। पूछ के दौरान इनको विशेष तौर पर पूछा जाता है।

देवास्था का प्रतीक है जगती पट!

मनाली से कुछ दूरी पर ऐतिहासिक गांव नगर कभी कुल्लू रियासत की राजधानी होती थी। मान्यता है कि सतुयग में हजारों देवी-देवताओं ने मधुमक्खियों का रूप धारण कर नेहरू कुंड पहाड़ से एक जगती पत्थर स्थापित किया था। आज भी जब कुल्लू-मनाली पर कोई संकट या विपदा आती है तो देवी-देवता इस जगती पट में एकत्रित होकर उसका समाधान निकालते हैं। इस जगती पट का आदेश सभी लोगों को मानना पड़ता है एवं अवहेलना करने वाले दंड का भागी बनना पड़ता है।

ऐसे तय होता है जगती का दिन

जगती के लिए देवता ही तय करते है। श्री रघुनाथ जी के छड़ीबरदार महेश सिंह ने बताया कि जगती देव आदेश पर ही होता है। यदि इसका आयोजन नग्गर स्थित जगती पट में होता है तो उसके लिए माता त्रिपुरा सुंदरी को पूछा जाता है। यदि रघुनाथ जी के यहां होते हो तो भगवान रघुनाथ जी ही दिन तय करते हैं। इस बार होने वाले जगती का दिन भगवान रघुनाथ ही बताएंगे। इसके लिए शुभ मुहूर्त देखकर उनसे आज्ञा ली जाएगी।

प्राकृतिक प्रकोपों से बचने के लिए जगती

प्राप्त जानकारी के मुताबिक कुल्लू में जब भीषण सूखा पड़ा था तो रघुनाथ के छड़ीबरदार महेश्वर सिंह के दादा-दादी ने जगती बुलाई थी। दूसरी बार 16 फरवरी 1971 में जगती बुलाई गई थी जब घाटी में महामारी फैली थी। तीसरी बार 16 फरवरी 2007 में और चौंथी बार 26 सितंबर 2014 को जगती बुलाई गई थी।

देवताओं का सिहांसन है जगती पट

नग्गर में स्थित जगती पट देवताओं का सिंहासन कहलाता है। मंदिर के विषय में रोचक कथा है। कहा जाता है कि जगती पट शिला को घाटी के समस्त देवी-देवता मधुमक्खियों का रूप धारण कर लाए थे। भृततुंग पहाड़ी के छोटे भाग से इस शिला को काटकर यहां लाया गया था। सिंहासन आकार होने के कारण इसे समस्त देवी-देवताओं का सिंहासन माना जाता है। यह शिला पांच बाई आठ बाई छह आकार की है। नग्गर 1460 साल तक कुल्लू के राजाओं की राजधानी रहा है। प्राकृतिक आपदा, संकट के समय यहां देवी-देवताओं की धर्म संसद लगती है। राजपरिवार का प्रमुख देवताओं के आदेशानुसार काम करता है और देव वचन यानी पूछ दी जाती है।

स्की विलेज मसले पर भी धर्म संसद में फैसला

वर्ष 2007 में जब सरकार ने कुल्लू-मनाली में स्की विलेज बनाने का निर्णय लिया था तो उस दौरान देव संस्कृति और पहाड़ों से छेड़छाड़ के विरोध में लोग आ गए। इसके बाद सरकार ने जब तय किया कि स्की विलेज बनेगा तो लोगों का विरोध देखते हुए छड़ीबरदार महेश्वर सिंह ने जगती बुलाई। इस जगती में देवताओं ने इसका विरोध किया और उसके बाद यह प्रोजेक्ट ही सिरे नहीं चढ़ा।

प्रत्यूष

सर्दियों में खाएं गुड़ के स्वादिष्ट व्यंजन

सर्दियों में गुड़ खाना सेहत के लिए बड़ा ही फायदेमंद रहता है। इस मौसम में आप भी घर में तरह–तरह के व्यंजन बना सकती हैं, जो न केवल स्वादिष्ट अपितु स्वास्थ्य की दृष्टि से भी बड़े ही उपयोगी हैं। गुड़ के कुछ खास व्यंजन बनाने की विधि बता रही हैं– प्रतिभा अग्निहोत्री।

गुड़ के पेड़े

सामग्री: गुड़–100 ग्राम, बाजरे का आटा– 150 ग्राम, घी–एक बड़ा चम्मच, भुने सफेद तिल–एक छोटा चम्मच, पानी–1/4 कप, काजू–8 से 10 सजाने के लिए।

यूं बनाएं: गुड़ को कद्दूकस कर गुनगुने पानी में भिगों दें। बाजरे के आटे को छानकर गरम घी में सुनहरा होने तक भून लें। जब आटा ठंडा हो जाए तो तिल और गुड़ मिलाकर गूंथ लें। चिकनाई लगे हाथ से पेड़े का आकार दें। ऊपर से काजू चिपकाकर सर्व करें।

गुड़ के सेव

सामग्री: फीकी सेव–250 ग्राम, गुड़–200 ग्राम, पानी–एक कप, नारियल, बुरादा–एक बड़ा चम्मच।

यूं बनाएं: एक नॉनस्टिक पैन में गुड़ और पानी डालकर तीन तार की गाढ़ी चाशनी बनाएं। अब गैस से उतारकर सेव व नारियल बुरादा मिलाएं। आप इन्हें अपनी इच्छानुसार हथेली पर चिकनाई लगाकर लड्डू का आकार दे सकती हैं या फिर ऐसे ही एअरटाइट डिब्बे में भरकर रख सकती हैं।

गुड़ मेवा शीरा

सामग्री: गुड़-500 ग्राम, बारीक कटे मेवा एक छोटी कटोरी (नारियल, मखाना, छुहारा, बादाम, किशमिश आदि), पिसा गोंद-एक बड़ा चम्मच हल्दी पाउडर- 1/4 छोटा चम्मच, सौंठ पाउडर-1/4 छोटा चम्मच, घी-दो बड़ा चम्मच।

यूं बनाएं: गुड़ को बारीक कद्दूकस कर लें। मेवा को नॉनस्टिक पैन में बिना घी के भून लें। गरम घी में पिसे गोंद को अच्छी तरह तलकर निकाल लें। अब शेष घी में हल्दी व सौंठ भूनें और दो कप पानी डालकर गुड़ डाल दें। पांच मिनट तक धीमी आंच पर पकाकर गैस बंद कर दें। गरम-गरम सर्व करें। यह सर्दियों में अत्यधिक लाभकारी होता है।

खट्टा-मीठा गुड़म्मा

सामग्री: गुड़–250 ग्राम, कद्दूकस आंवले–4, कद्दूकस अदरक–एक छोटी गांठ, काला नमक–1/4 छोटा चम्मच, लाल मिर्च पाउडर– 1/4 छोटा चम्मच, खरबूजे के बीज–एक छोटा चम्मच।

यूं बनाएं: एक नॉनस्टिक पैन में आंवला, अदरक को नमक डालकर पांच मिनट तक पकाएं। अब गुड़ डालकर धीमी आंच पर चलाते हुए गुड़ के पिघलने तक पकाएं। लालमिर्च और खरबूजे के बीज डालकर 2 से 3 मिनट तक पुनः पकाएं और गैस बंद कर दें। पूड़ी या पराठे के साथ सर्व करें।

गुड़ नारियल स्टिक

सामग्री: गुड़–250 ग्राम, पानी–1/4 कप, नारियल लच्छा–एक बड़ा चम्मच, घी–एक बड़ा चम्मच, सौंठ पाउडर–1/4 छोटा चम्मच, आइसक्रीम स्टिक–6, सिल्वर फॉइल सजाने के लिए।

यूं बनाएं: एक नॉनस्टिक पैन में गुड़ और पानी डालकर एक तार की चाशनी बनाएं। गैस बंद कर दें। अब इसमें नारियल लच्छा, घी और सौंठ पाउडर डालकर अच्छी तरह मिलाएं। हथेली पर थोड़ा सा मिश्रण लेकर आइसक्रीम स्टिक में लपेंटे। खुली स्टिक पर सिल्वर फॉइल लपेंटे और सर्व करें।

पौष्टिक गुड़ बार

सामग्री: गुड़–250 ग्राम, कॉर्नफ्लैक्स–1/2 कप, ओट्स– 1/2 कप, मुरमुरे– 1/2 कप, पानी–1/2 कप, घी–एक छोटा चम्मच, दालचीनी पाउडर–1/4 छोटा चम्मच।

यूं बनाएं: एक नॉनस्टिक पैन में गुड़ और पानी डालें। तीन तार की गाढ़ी चाशनी बन जाए तो गैस बंद कर दें। अब इसमें कॉर्नफ्लैक्स, ओट्स, मुरमुरे और दालचीनी पाउडर डालकर अच्छी तरह मिलाएं। चिकनाई लगी ट्रे में फैलाकर जमाएं। गरम–गरम ही कांटे और एअरटाइट डिब्बे में भरकर रखें।

प्रत्यूष

इस माह आपके सितारे

पं. शोभालाल शर्मा

मेष

मानसिक अवसाद से ग्रस्त रहेंगे। किंकर्तव्यमूढ की स्थिति का सामना करना पड़ेगा। कारोबार में आय की अपेक्षा व्यय अधिक रहेगा। सहयोगियों से सहमति बनेगी, मनोकामनाएं पूरी हो सकेगी, नेत्र विकार हो सकता है, चोट से शरीर को कष्ट संभव है। स्थाई निवेश को टालने में फायदा, वरिष्टजनों से परामर्श अवश्य करें।

वृषभ

आय पक्ष सुदृढ बना रहेगा, व्यापार आदि में उन्नति होगी, भौतिक सुख–सुविधाओं में वृद्धि होगी। यात्राओं से निराशा मिलेगी, मन क्रोधित हो सकता है। दाम्पत्य जीवन में हर्षोल्लास बना रहे। माह का उत्तरार्द्ध पूर्ण रूप से सुकून भरा रहेगा। शत्रु पक्ष हावी हो सकता है, सावधानी बरतें।

मिथुन

यह माह मिश्रित फलदायी रहेगा, व्यापार मध्यम रहेगा, आय तथा व्यय में संतुलन रहे। किसी कार्य में सफलता मिलेगी। हर्ष का संदेश प्राप्त होगा, विवादों मे विजय सम्मान, पुराने मित्रों से भेंट संभव, यात्राएं करनी पड़ सकती हैं, शत्रुओं से भय एवं क्लेश रहेगा, शरीर स्वास्थ्य सामान्य

कर्क

माह का पूर्वार्द्ध अच्छा रहेगा, कारोबार में धन लाभ, अपनी कार्य योजनाओं में सफलता मिलेगी। राजसभा में मान–सम्मान, पारितोषिक संभव, मित्रों से लाभ मिलेगा। नजदीकी संबंधियों से मन–मुटाव रहे। स्थान परिवर्तन संभव, मित्रों से लाभ मिलेगा।

सिंह

प्रतियोगी परीक्षाओं में सफलता मिले, कार्य एवं व्यवहार में व्यापकता बढेगी, आय–व्यय में संतुलन नहीं कर पाएंगे। मान–सम्मान में वृद्धि होगी, शत्रुओं के बल का शमन होगा। धार्मिक कार्यों में रूचि बढ़ेगी एवं खर्च भी होगा। उदर व रक्त विकार से शरीर को कष्ट संभव है। पितृ पक्ष से कष्ट।

कन्या

भौतिक साधनों में वृद्धि के योग बनेंगे। व्यापार में साझेदारी से लाभ होगा। खर्च भी अधिक रहेगा। धार्मिक कार्यों में खर्च होगा, शत्रुओं पर विजय मिलेगी, दूर की यात्राओं से परहेज करें। भाई–बंधु व मित्रों से विवाद एवं मतभेद संभव। संतान पक्ष से हर्षोल्लास का समाचार प्राप्त होगा।

तुला

व्यर्थ के कार्यों में समय व धन का व्यय होगा, सेवा और शंका दोनों में लगे रहेंगे। सार्वजनिक क्षेत्र में मान–सम्मान पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी, विरोधियों में भय बना रहेगा। चोरी व अग्निकांड की संभावना बन सकती है। व्याधियों से शरीर को कष्ट रहेगा। शिक्षा के क्षेत्र में कुछ नया कर पाएंगे।

इस माह के पर्व/त्योहार

3 फरवरी	माघ शुक्ला त्रयोदशी	विश्वकर्मा जयंती/गुरु गोरक्षनाथ जयंती
5 फरवरी	माघ पूर्णिमा	संत रविदास जयंती
13 फरवरी	फाल्गुन कृष्णा सप्तमी	श्रीनाथ जी पाटोत्सव
15 फरवरी	फाल्गुन कृष्णा नवमी/दशमी	समर्थ गुरु रामदास व स्वामी दयानंद सरस्वती जयंती
18 फरवरी	फाल्गुन कृष्णा त्रयोदशी	महाशिवरात्रि

वृश्चिक

व्यापार एवं कारोबार में प्रगति व धन लाभ होगा। कार्यों में सफलता मिलेगी, शत्रुओं का दमन होगा। मित्रों एवं परिवारजनों से प्रसन्नता प्राप्त होगी, पदोन्नति एवं स्थाई संपत्ति में वृद्धि संभव। शिक्षा के क्षेत्र में कार्यरत जातकों को श्रेष्ठ परिणाम प्राप्त होगा। भाग्य पूर्ण रूप से साथ देगा।

धनु

कार्य क्षेत्र मं नए कीर्तिमान बना सकते हैं, पितृपक्ष से बाधाएं एवं कष्ट का अनुभव करेंगे। शत्रुओं पर विजय प्राप्त करेंगे। चली आ रही शारीरिक व्याधियों से मुक्ति मिलेगी, कार्य विशेष को लेकर यात्राएं लाभप्रद रहेगी, आय पक्ष बाधित रह सकता है। अपने ही लोगों से सावधान रहें। संतान से कष्ट।

मकर

शरीर में आलस्य थकान रहेगा, पैतृक मामले पक्ष में बनेंगे एवं लाभ मिलेगा। भाई–बहनों का पूर्ण मनोयोग से सहयोग प्राप्त होगा। कार्य क्षेत्र एवं नौकरी धंधे में अनचाही बाधाएं प्रकट हो सकती हैं। बाधाओं में सफलता मिल सकती है। स्थान परिवर्तन भी संभव है, प्रबल पुरुषार्थ की आवश्यकता रहेगी।

कुम्भ

सत्संग इत्यादि धार्मिक कार्यों में रूचि रहेगी, कर्म क्षेत्र में सफलता मिलेगी। राजकीय और न्यायिक फैसले पक्ष में रहेंगे, राजकीय लाभ भी संभव। आय पक्ष मध्यम रहेगा, परंतु खर्च भी अधिक होगा, दाम्पत्य जीवन में अनबन, विरोधियों की ओर से भय बना रहेगा, स्वास्थ्य मध्यम।

मीन

पूर्व नियोजित कार्य सही समय पर संपादित होंगे, कार्य व्यवहार मध्यम रहेगा, आय–व्यय सम बना रहें। दाम्पत्य जीवन में संतुष्टि रहेगी, यात्राओं के दौर रहेंगे, शत्रुओं का भय, दौड़–धूप की अधिकता रहेगी, उदर एवं रक्त विकार से जीवन साथी को कष्ट संभव, सकारात्मक सोच से ही प्रगति कर पाएंगे।

प्रत्यूष

प्रत्यूष पत्रिका में विज्ञापन देने के लिए सम्पर्क करें

75979 11992,
94140 77697

अंतरिक्ष में बिजनेस पार्क व रेस्तरां

2027
तक शुरू किया जाएगा ऑर्बिटल रीफ नाम का पहला बिजनेस पार्क

250
मील पृथ्वी से ऊपर अंतरिक्ष में इस साल के आखिरी तक रेस्तरां खोला जाएगा

15
बार तक इस्तेमाल किया जाने वाले यान से मिशन पूरा होगा

वाशिंगटन (एजेंसी)। आम आदमी के अंतरिक्ष में पहुंचने के बाद साल के अंत तक यहां रेस्तरां और इसके बाद बिजनेस पार्क खोलने की तैयारी है। जेफ बेजोस की कंपनी ब्लू ओरिजन और सिएरा स्पेस इस मिशन पर काम कर रही हैं।

पृथ्वी से 250 मील दूर अंतरिक्ष में यह रेस्तरां खोला जाएगा। इसका नाम ब्लू डॉट होगा। इसे तैयार करने नासा ने सिएरा स्पेस कंपनी से तीन सौ करोड़ का समझौता किया है इसके तहत अंतरराष्ट्रीय स्पेस स्टेशन तक सामान व चालक दल की आपूर्ति की जाएगी। पृथ्वी की निचली कक्षा में शुरू हो रहे कॉलोनाइजर्स और सामान ड्रीम चेजर अंतरिक्ष यान से यहां पहुंचेंगे। सात मिशन के जरिये इसे पूरा करने की योजना है।

बिजनेस पार्क का ही हिस्सा होगा रेस्तरां

यहां बनाए जा रहे बिजनेस पार्क नाम ऑर्बिटल रीफ होगा। इसमें होटल, रेस्तरां तथा रिसर्च और डेवलपमेंट आउटपोस्ट होंगे। 2027 तक इसे खोलने की योजना है।

सुपरसोनिक अंतरिक्ष यान है ड्रीम चेजर

ड्रीम चेजर एक सुपरसोनिक अंतरिक्ष यान है। इसे कोलोराडो स्थित एयरोस्पेस कंपनी सिएरा स्पेस द्वारा बनाया गया है। इसे 15 बार इस्तेमाल किया जा सकता है। ये 12000 पाउंड सामान और 12 यात्रियों को ले जा सकता हैं। यह नासा के सबसे छोटे अंतरिक्ष यान स्पेस शटल का एक चौथाई है। इसकी लंबाई केवल 30 फीट हैं। इसे कमर्शियल रनवे पर सामान्य विमान की तरह उतरा जा सकता है।

वसुधैव कुटुम्बकम्

संत श्री रामकृष्ण परमहंस

सपनों और हकीकत की दुनिया के बीच के संसार को सबके सामने उजागर करने के साथ सभी धर्मों को एक मान कर विश्व एकता पर बल देने का मंत्र हमारे सामने सबसे ज्यादा प्रभावी रूप से रामकृष्ण परमहंस जी ने रखा। उनका जन्म बंगाल के हुगली जिले के ग्राम कामारपुकुर में हुआ था। रामकृष्ण परमहंस के बचपन का नाम गदाधर था। उनकी शिक्षा तो साधारण ही हुई, किंतु पिता की सादगी और धर्मनिष्ठा का उन पर पूरा प्रभाव पड़ा। सात वर्षों की अवस्था में ही पिता परलोक वासी हुए। सत्रह वर्ष की अवस्था में बड़े भाई रामकुमार के बुलाने पर गदाधर कलकत्ता आए और कुछ दिनों बाद भाई के स्थान पर रामकृष्ण रासमणि के दक्षिणेश्वर मंदिर में पूजा के लिए नियुक्त हुए। यहीं उन्होंने मां महाकाली के चरणों में अपने को समर्पित कर दिया। वे भाव में इतने तन्मय रहने लगे कि लोग उन्हें विक्षिप्त समझते। वे घंटों ध्यान करते और मां के दर्शन के लिए तड़पते। एक दिन अर्धरात्रि को जब व्याकुलता चरम सीमा पर पहुंची तो उन्हें जगदम्बा ने प्रत्यक्ष होकर कृतार्थ कर दिया। गदाधर अब परमहंस रामकृष्ण ठाकुर हो गए। अधिकारी के पास मार्ग निर्देशक स्वयं चले आते हैं। उसे शिक्षा दाता की खोज में भटकना नहीं पड़ता। एक दिन संध्या को सहसा एक वृद्ध सन्यासिनी स्वयं दक्षिणेश्वर पधारी। परमहंस रामकृष्ण को पुत्र की भांति उनका स्नेह प्राप्त हुआ और उन्होंने परमहंस जी से अनेक तांत्रिक साधनाएं करायी। परमहंस जी का जीवन विभिन्न साधनाओं तथा सिद्धियों के चमत्कारों से पूर्ण है, किंतु चमत्कार महापुरुष की महत्ता नहीं बढ़ाते। परमहंस जी की महत्ता उनके त्याग, वैराग्य, पराभक्ति और उस अमृतोपदेश में है, जिससे सहस्रों प्राणी कृतार्थ हुए जिसके प्रभाव से ब्रह्मसमाज के अध्यक्ष केशवचंद्र सेन जैसे विद्वान भी प्रभावित थे। जिस प्रभाव एवं अध्यात्मिक शक्ति ने नरेन्द्र जैसे नास्तिक, तर्कशील युवक को परम आस्तिक भारत के गौरव का प्रसारक स्वामी विवेकानंद बना दिया। रामकृष्ण परमहंस जीवन के अंतिम दिनों में समाधि की स्थिति में रहने लगे इसलिए तन से शिथिल होने लगे।

– अभिजय शर्मा

जे.के.टायर एण्ड इण्डस्ट्रीज लिमिटेड

जेकेग्राम, कांकरोली (राज.)

गणतंत्र दिवस

के शुभ अवसर पर हार्दिक शुभकामनाएं

MEMBER J.K. ORGANISATION

JK TYRE & INDUSTRIES LTD.

भगवती प्रसाद स्मृति समारोह

साहित्य मंडल ने किया साहित्यकारों का सम्मान

नाथद्वारा। साहित्य मंडल के तत्वावधान में भगवती प्रसाद देवपुरा स्मृति एवं राष्ट्रीय बाल साहित्य समारोह 6-7 जनवरी को सम्पन्न हुआ। उद्घाटन सत्र के मुख्य अतिथि सुभाष चन्द्र गाजियाबाद थे। अध्यक्षता साहित्य मंडल के उपाध्यक्ष पं. मदन मोहन शर्मा अविचल ने की। अतिथियों ने मां सरस्वती, श्रीनाथजी की छवि एवं हिन्दी सेवी बाबू भगवती प्रसाद देवपुरा के चित्र पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्वलित कर इस साहित्य कुंभ की शुरूआत की। समारोह में भगवती प्रसाद देवपुरा की हिन्दी सेवाओं पर विद्वानों ने पत्र-वाचन किए। साहित्य मंडल के प्रधानमंत्री श्याम

प्रकाश देवपुरा ने देश के विभिन्न भागों से आए अतिथियों का स्वागत किया। अनेक वरिष्ठ कवियों ने काव्यार्चन के माध्यम से भगवती प्रसाद देवपुरा की साहित्य सेवाओं के प्रति आभार जताया। कार्यक्रम संचालक एवं मंडल के प्रधानमंत्री श्याम प्रकाश देवपुरा ने बताया कि समरोह में साहित्य सुधाकर, साहित्य कुसुमाकर, साहित्य सौरभ, काव्य कलाधर, काव्य कौस्तुभ, काव्य कुसुम, सम्पादक श्री, पत्रकार प्रवर आदि गरिमामय सम्बोधन-सम्मान से लब्ध-प्रतिष्ठित साहित्यकारों, कवियों व पत्रकारों को सम्मानित किया गया।

सीखने में उम्र बाधक नहीं: सिंघवी

उदयपुर। जनार्दनराय नागर राजस्थान विद्यापीठ डीम्ड टू बी विवि ने वाणिज्य संकाय में सरल ब्लड बैंक के संस्थापक सी.ए श्याम एस सिंघवी (65) को पीएचडी प्रदान की।

सिंघवी ने 'सूक्ष्म, लघु व मध्यम उद्योगों पर कोविड-19 का प्रभाव:उदयपुर के विशेष परिप्रेक्ष्य में'विषय पर कुलपति प्रो. एसएस सारंगदेवोत के निर्देशन में शोध किया। उम्र के 70 वें दशक के दौरान उनकी इस उपलब्धि पर ज्ञान हेल्थ इन्स्टीट्यूट सोसायटी के संस्थापक डॉ. ओ.पी. महात्मा व जय हनुमान रामचरित मानस प्रचार समिति के सचिव पं. सत्यनारायण चौबीसा ने एक संयुक्त समारोह में उनका अभिनन्दन किया। इस अवसर डॉ. सिंघवी ने कहा कि सीखने की कोई उम्र नहीं होती। यदि व्यक्ति में दृढ़ संकल्प और इच्छा शक्ति है तो वह उम्र के किसी भी पायदान पर बड़ी से बड़ी उपलब्धि हासिल कर सकता है।

रघुवीर बने हिमाचल प्रदेश के पर्यवेक्षक

उदयपुर। कांग्रेस स्टीयरिंग कमेटी सदस्य एवं पूर्व सांसद रघुवीर सिंह मीणा को अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी ने हाथ से हाथ जोड़ो अभियान का हिमाचल प्रदेश का पर्यवेक्षक नियुक्त किया है। दिल्ली में राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे की अध्यक्षता में हुई बैठक में निर्णय लिया गया कि भारत जोड़ो यात्रा के संदेश को पहुंचाने के लिए हाथ से हाथ जोड़ो अभियान चलाया जाएगा।

डॉ. गुप्ता आईआरआईए के प्रदेशाध्यक्ष

उदयपुर। इंडियन रेडियोलॉजिकल एंड इमेजिंग ऐसोसिएशन ने राजस्थान स्टेट चैप्टर (आईआरआईए) की नई कार्यकारिणी घोषणा की है।

इसमें राजस्थान प्रदेशाध्यक्ष (प्रेसिडेंट इलेक्ट) डॉ. आनंद गुप्ता को चुना गया। इस पर उदयपुर चैप्टर ऑफ रेडियोलॉजी के सदस्यों ने उनका सम्मान किया। सेकेट्री और निर्वाचन अधिकारी डॉ. जीवराज सिंह ने बताया कि आईआरआईए की नई कार्यकारिणी में अध्यक्ष पद पर डॉ. नाइमा मन्नन, उपाध्यक्ष डॉ. राजकुमार चौधरी व मुकेश गुप्ता, सचिव डॉ. नवनीत गुप्ता, जनरल कौंसिल मेंबर डॉ. आरपी बंसल, डॉ. जय चौधरी, डॉ. निखिल बंसल, राजस्थान एक्जुकेटिव मेंबर डॉ. विकास झंवर, डॉ. मधु कुमार सिंघल, डॉ. दीपक अग्रवाल, डॉ. मदन मोहन गुप्ता, डॉ. तुषार प्रभा, डॉ. नेहा अग्रवाल व कोषाध्यक्ष पद पर डॉ. प्रवीण सिंघल का चयन किया गया।

वाधवानी को बेस्ट लाइफ स्टाइल अवार्ड

उदयपुर। पर्यटन विभाग के साझे में हुए शुभ वैडिंग एंड लाइफ स्टाइल अवार्ड सीजन 5 में उदयपुर के मुकेश माधवानी को बेस्ट लाइफस्टाइल अवार्ड अपकमिंग ब्रांड से सम्मानित किया गया। यह सम्मान उन्हें अभिनेत्री अमीषा पटेल ने प्रदान किया। कार्यक्रम में देशभर से 300 वेडिंग एंड लाइफस्टाइल एक्सपर्ट को आमंत्रित किया गया था।

डॉ. सिंह का नाम वर्ल्ड बुक ऑफ रिकॉर्ड में

उदयपुर। अर्थ स्किन की डायरेक्टर व क्लिनिकल कॉस्मेटोलॉजिस्ट तथा मेडिकल लेज़र स्पेशलिस्ट डॉ दीपा सिंह ने स्किन व ब्यूटी के क्षेत्र में उदयपुर का नाम वर्ल्ड बुक ऑफ रिकॉर्ड में दर्ज कराया। अर्थ स्किन का यह रिकॉर्ड लेटेस्ट 15 कॉस्मेटिक व लेजर टेक्नोलॉजी से क्वालिटी प्रोटोकॉल के अंतर्गत अधिकतम लोगों को लाभान्वित करने के लिए मिला। इस रिकॉर्ड में लेज़र हेयर रिमूवल, मेडिकल फेशियल, चेहरे व शरीर का कालापन, निशान, दाग-

धब्बे, पिगमेंटेशन, एंजीएजिंग, फेस ग्लो, मोटापे जैसी विभिन्न समस्याओं के निवारण तथा कस्टमर संतुष्टि की 5 स्टार रेटिंग को भी शामिल किया गया। इस अवसर पर वर्ल्ड बुक ऑफ रिकॉर्ड के निरीक्षण के लिए अदिति भल्ला मौजूद थीं और उन्होंने वेरिफिकेशन के बाद प्रोविजनल सर्टिफिकेट प्रदान किया। डॉक्टर दीपा सिंह को शीघ्र ही वर्ल्ड बुक ऑफ रिकॉर्ड लंदन की तरफ से सम्मानित किया जाएगा।

प्रातः काल -मिराज कैलेंडर का विमोचन

नाथद्वारा। मिराज समूह के सीएमडी मदन पालीवाल ने मिराज समूह और प्रात: काल दैनिक के संयुक्त तत्वावधान में प्रकाशित 2023 के कैलेंडर का लोकार्पण किया। पालीवाल ने कहा कि नाथद्वारा धार्मिक आध्यात्मिक पर्यटन के क्षेत्र में आगे बढ़ रहा है आराध्य प्रभु श्रीनाथजी के साथ में यहां पर विश्व की सबसे ऊंची शिव प्रतिमा का निर्माण सभी के सहयोग से पूरा हो गया है। इस अवसर पर प्रात:काल के प्रतिनिधि जगदीश सोनी, नगरपालिका के पूर्व उपाध्यक्ष परेश सोनी, वरिष्ठ पत्रकार अरविंद मुखिया, मिराज समूह के प्रबंधक प्रकाश पालीवाल, लक्ष्मण दीवान, रिपोर्टर जूजर हुसैन सहित गणमान्य लोग उपस्थित थे।

बैंक शाखा का 21वां स्थापना दिवस

उदयपुर। द उदयपुर महिला समृद्धि अरबन को-ऑप बैंक की यूनिवर्सिटी रोड स्थित शाखा का 21वां स्थापना दिवस बैंक अध्यक्ष डॉ. किरण जैन की अध्यक्षता में हुआ। बैक अध्यक्ष ने बताया कि इस अवसर पर आयोजित सम्मेलन में ग्राहकों की समस्याओं एवं सुझावों पर वार्ता की गई एवं उनका त्वरित समाधान किया गया। मुख्य कार्यकारी अधिकारी ने बताया कि बैक के ग्राहकों का सम्मान किया गया और अब से ऋणों में जमानतदार नहीं लिए जाने की घोषणा की। इस मौके पर शाखा प्रबंधक ज्योति कोठारी, विमला मूंदड़ा , मंजू शर्मा, सुभाषिनी शर्मा, सुनील रोटोडिया आदि उपस्थित रहे।

रॉयल के 400 विद्यार्थियों का चयन

उदयपुर। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद दिल्ली की आईसीएआर में कालका माता रोड,रॉयल इंस्टीट्यूट के छात्रों ने सफलता हासिल की और रिकार्ड 400 का चयन हुआ। निदेशक जीएल कुमावत ने बताया कि रॉयल संस्थान हर साल अपने ही रिकार्ड तोड़ता जा रहा है।श्रेष्ठ परिणाम के लिए संस्था निदेशक जीएल कुमावत ने संस्था के शिक्षक, विद्यार्थियों एवं अभिभावकों को इसका श्रेय दिया।

डॉ. विमला भंडारी पुरस्कृत

उदयपुर। डॉ. विमला भंडारी को बाल-कथा संग्रह उड़ने वाले जूते के लिए साहित्य महारथी शांति अग्रवाल बाल-साहित्य पुरस्कार मिला। ये पुरस्कार कृषि विवि में संकाय सदस्य रह चुकी डॉ. पूनम अग्रवाल ने अपनी मां की स्मृति में प्रदान किया। इस मौके पर बाल गीतों की पुस्तक झमा झम झम का लोकार्पण भी हुआ।

सीआई चंदेल डीएसपी बने

उदयपुर। राज्य सरकार ने धानमंडी धानाधिकारी गोपाल चंदेल को डीएसपी पद पर पदोन्नति प्रदान की है। गृह विभाग ग्रुप- 1 के सहायक शासन सचिव जगदीश लाल मीणा ने इस संबंध में आदेश जारी किए।

परिचय सम्मेलन

उदयपुर। निम्बार्क शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में आदिगौड़-सनाढ्य छह न्याती ब्राह्मण समाज एवं चाणक्य परिवार संस्थान की ओर से सत्रहवां वैवाहिक परिचय सम्मेलन हुआ। इसमें युवक-युवतियों ने परिचय दिया और भावी जीवन साथी के बारे में अपनी अपेक्षाएं व्यक्त की। समारोह के मुख्य अतिथि समिति संरक्षक जमना लाल तिवारी एवं डॉ. हरगोविन्द गौड़ थे। विशिष्ट अतिथि राधेश्याम शर्मा, रजनीकांत सनाढ्य, पं.जगदीश पचौरी, शांति लाल गौड़, अम्बालाल सनाढ्य, हरीश आर्य, नरेश गौड़, सीए गोविन्द सनाढ्य, डॉ.अनिल शर्मा, त्रिभुवन नाथ व्यास थे। अध्यक्षता सत्यनारायण गौड़ ने की।

भूपाल नोबल्स संस्थान स्थापना शताब्दी वर्ष

महाराणा भूपाल इन्डोर स्टेडियम का उद्घाटन

उदयपुर। विद्या प्रचारिणी सभा, भूपाल नोबल्स संस्थान के स्थापना शताब्दी वर्ष को लेकर 9 जनवरी को आयोजित कार्यक्रम में केन्द्रीय खेल और युवा मामलात मंत्री अनुराग ठाकुर ने महाराणा भूपाल नोबल्स इन्डोर स्टेडियम एवं गुमान सिंह स्मृति क्रिकेट प्रतियोगिता की शुरूआत की। ठाकुर ने संस्थान द्वारा शिक्षा एवं खेल के क्षेत्र में किए जा रहे प्रयासों की सराहना की। उन्होंने कहा कि संस्था का 101वें वर्ष में प्रवेश बड़ी उपलब्धि है। संस्थान के लिए सिंथेटिक ट्रेक व एस्ट्रो ट्रफ के लिए पूर्ण सहयोग किया जाएगा। कार्यक्रम की अध्यक्षता सांसद

अर्जुन लाल मीणा ने की। एनसीसी की तीनों विंग के कैडेटों द्वारा सलामी दी गई। संस्थान के मंत्री डॉ. महेन्द्र सिंह आगरिया ने ऐतिहासिक 100 वर्षों के विकास क्रम का उल्लेख किया। प्रबंध निदेशक मोहब्बत सिंह राठौड़ ने मुख्य अतिथि को स्मृति चिह्न प्रदान किया। आभार कार्यवाहक अध्यक्ष प्रदीप कुमार सिंह पुरावत ने जताया। इस अवसर पर मंचासीन अतिथि के रूप में संस्थान के उपाध्यक्ष भगवान सिंह भाटी, संयुक्त मंत्री शक्ति सिंह, वित्त मंत्री प्रो दरियाव सिंह, ऑल्ड बॉयज एसोसिएशन के अध्यक्ष प्रो. एकलिंग सिंह झाला, जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ के कुलपति कर्नल शिवसिंह सारंगदेवोत मौजूद थे।

नागदा ब्राह्मण समाज की 19वीं क्रिकेट प्रतियोगिता सम्पन्न

उदयपुर। नागदा ब्राह्मण समाज युवामंच के तत्वावधान में 5 दिवसीय 19वीं क्रिकेट

प्रतियोगिता 24 दिसम्बर को महाराणा भूपाल कॉलेज मैदान पर सम्पन्न हुई। जिसमें विजेता का खिताब रवि चैम्पियन ढूंढी ने हासिल किया। जबकि खरका टीम उप विजेता रही। आयोजक मगरा चोखला के अध्यक्ष गणेश नागदा भुताला ने बताया कि उद्घाटन विप्र फाउण्डेशन ए जोन के अध्यक्ष, के.के.शर्मा, नरेन्द्र पालीवाल, समाज अध्यक्ष नानालाल नागदा, छगनलाल नागदा, युवा मंच के देवीलाल नागदा, मोहनलाल नागदा, नीरज नागदा के सानिध्य में हुआ। समापन समारोह के मुख्य अतिथि राज्य श्रम सलाहकार बोर्ड के उपाध्यक्ष जगदीश राज श्रीमाली थे। अध्यक्षता नानालाल नागदा ने की। विशिष्ट अतिथि चुन्नीलाल नागदा सोकड़ी (मुम्बई), विष्णु शर्मा हितैषी, मांगीलाल नागदा, देवीलाल नागदा, गणेश नागदा थे। इस अवसर पर प्रथम टूनामिंट की विजेता टीम के कप्तान नरेश नागदा व उपविजेता टीम के कप्तान हेमेन्द्र नागदा को खेल रत्न सम्मान प्रदान किया गया। टूर्नामेंट के कमेन्टेटर राजेश (मुम्बई) को भी विशेष सम्मान दिया गया।

सुखाड़िया महासचिव

उदयपुर। रोटरी डिस्ट्रिक्ट 3056 के वर्ष 2023-24 के प्रांतपाल डॉ. निर्मल कुमावत ने रोटरी क्लव हेरिटेज के पूर्वाध्यक्ष दीपक सुखाड़िया को प्रांत का महासचिव नियुक्त किया। इनका मनोनयन 1 जुलाई से प्रारंभ होगा।

कस्तूरबॉ मातृ मंदिर ने मनाया संस्थापक दिवस

उदयपुर। कस्तूर बॉ. मातृ मंदिर में मकर संक्रांति को संस्थापक दिवस मनाया गया। संस्थान अध्यक्ष तेज सिंह बान्सी ने संस्थापक डॉ. आत्म प्रकाश भाटी की 109वीं जयंती पर आयोजित कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए कहा कि डॉ. भाटी ने जन चेतना और मातृ तथा शिशु स्वास्थ्य की दिशा में उस समय अग्रणी कार्य किया जब इस क्षेत्र में सुविधाएं नगण्य थीं। सचिव डॉ. जयप्रकाश भाटी ने कहा कि वे बहुआयामी व्यक्तित्व थे। स्वतंत्रता संग्राम के दौरान उन्होंने जन चेतना और क्रांतिकारी साहित्य को घर-घर पहुंचाने का काम किया। इस अवसर पर राजस्थान साहित्य अकादमी के सदस्य किशन दाधीच, विष्णु शर्मा हितैषी, गोविंद माथुर, डॉ. उग्रसेन राव, डॉ. जगदीश भाटी, डॉ. लक्ष्मीलाल वर्मा, निर्मला सिंह ने भी विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम में डॉ.एल.एल. वर्मा, डॉ. गिरिराज गुंजन, डॉ. मनीष शर्मा भी उपस्थित थे। संयोजन डॉ. अंजना गुर्जरगौड़ ने किया। संस्थान के कार्यकर्ताओं ने संस्थापक भाटी की प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित की।

सीबीएसई वेस्ट जोन स्केटिंग प्रतियोगिता संपन्न

उदयपुर। न्यू भोपालपुरा स्थित सेंट्रल पब्लिक सीनियर सेकंडरी स्कूल में गत दिनों चार दिवसीय वेस्ट जोन स्केटिंग प्रतिस्पर्द्धा सम्पन्न हुई। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि जिला कलेक्टर ताराचंद मीणा व विशिष्ट अतिथि श्याम कपूर (सी.बी.एस.ई रीजनल ऑफिसर अजमेर), अलका शर्मा (चेयरपर्सन-सी.पी.एस व रॉकवुड्स स्कूल), योगेन्द्र खत्री (सचिव राजस्थान स्केट्स एसोसिएशन), चंद्र प्रकाश चतुर्वेदी (सी.बी.एस.ई ऑब्जर्वर), नियाज अहमद (सी.बी.एस.ई.तकनीकी प्रतिनिधि) पारूल शर्मा, कपिल सुराना (संयुक्त सचिव, राजस्थान स्केट्स एसोसिएशन) एवं अंजलि सुराणा थे। समारोह के दौरान अतिथियों ने सभी विजेताओं को पदक प्रदान किए। इस मौके पर अनिल शर्मा, दीपक शर्मा, विक्रम जीत सिंह शेखावत प्रशासक, सुनील बाबेल, प्राचार्य-पूनम राठौड व प्रधानाध्यापिका कृष्णा शक्तावत आदि उपस्थित थे।

जयपुर शिविर में 302 दिव्यांग लाभांवित

उदयपुर। नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर एवं अंतरराष्ट्रीय वैश्य महासम्मेलन, राजस्थान के संयुक्त तत्वावधान में जयपुर में गत दिनों निशुल्क दिव्यांग शल्य चिकित्सार्थ जांच एवं चयन, कृत्रिम अंग माप व सहायक उपकरण वितरण शिविर का आयोजन हुआ। शुभारंभ मुख्य अतिथि विधायक एवं पूर्व मंत्री कालीचरण सर्राफ, आईपीएस राजकुमार गुप्ता, नारायण सेवा संस्थान की निदेशक वंदना अग्रवाल, ट्रस्टी देवेंद्र चौबीसा, अंतरराष्ट्रीय वैश्य महासम्मेलन के कार्यकारी अध्यक्ष ध्रुवदास अग्रवाल, प्रदेश अध्यक्ष एनके गुप्ता, महामंत्री गोपाल गुप्ता, समाजसेवी कन्हैयालाल श्याममुखा व वैश्य सम्मेलन के संभागीय अध्यक्ष एवं शिविर के मुख्य संयोजक मनोहर लाल गुप्ता ने किया। शिविर में 302 दिव्यांगजन का रजिस्ट्रेशन हुआ। जिसमें ऑपरेशन चयन 27, कृत्रिम अंग व कैलिपर माप 108, ट्राईसाइकिल 37, व्हीलचेयर 20, बैसाखी 30 व 80 श्रवण यंत्र का वितरण किया गया। भामाशाहों को सम्मानित भी किया गया। संयोजन महिम जैन ने व हरिप्रसाद लड्ढा ने आभार व्यक्त किया।

वृद्धाश्रम में दिखा संयुक्त भारत

उदयपुर। तारा संस्थान द्वारा संचालित श्रीमती कृष्णा शर्मा आनंद वृद्धाश्रम में प्रदेश अध्यक्ष (इंटक) राज्यमंत्री जगदीश राज श्रीमाली पहुंचे। उन्होंने कहा कि मै भाग्यशाली हूं कि यहां मुझे इतने माता-पिताओं के दर्शन हुए। आज मेरे माता-पिता इस दुनिया में नहीं हैं किन्तु आप सभी को देखकर मुझे मेरे माता-पिता की याद आ गई। इस वृद्धाश्रम में संयुक्त भारत दिखाई दे रहा है। तारा संस्थान की अध्यक्ष एवं संस्थापक कल्पना गोयल व मुख्यकारी अधिकारी दीपेश मित्तल ने वृद्धाश्रम एवं संस्थान द्वारा चलाई जा रही विभिन्न गतिविधियों से अवगत कराया।

नए परिसर में शांतिराज हॉस्पिटल

उदयपुर। शांतिराज हॉस्पिटल को अब नए परिसर में शिफ्ट कर दिया गया है। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि डॉ. आनंद गुप्ता ने फीता काटकर शुभारंभ किया। शांतिराज हॉस्पिटल में 37 वर्षों की गरिमामयी राजकीय सेवा के बाद वरिष्ठ फिजिशियन डॉ. डीपी सिंह की सेवाएं भी यहां मिलेगी। निदेशक नरेश शर्मा ने बताया कि हॉस्पिटल में अब वरिष्ठ लेप्रोस्कोपिक व बेरियाट्रिक सर्जन डॉ. सपन जैन के नेतृत्व में सर्जरी, क्रिटिकल केयर, आईवीएफ, न्यूरो सर्जरी, पीडियाट्रिक मेस्ट्रो आईसीयू व अन्य सुविधाएं उपलब्ध रहेंगी।

हिंदुस्तान जिंक पुनः कंपनी विद ग्रेट मैनेजर्स से पुरस्कृत

उदयपुर। हिंदुस्तान जिंक को लगातार तीसरे वर्ष ग्रेट मैनेजर अवार्ड्स 2022 में कंपनी विद ग्रेट मैनेजर्स का खिताब दिया गया। तीन व्यक्तिगत पुरस्कार भी जीते। ग्रेट मैनेजर अवार्ड पीपल बिजनेस और इकोनॉमिक टाइम्स की संयुक्त पहल है। द इकोनॉमिक टाइम्स और पीपल बिजनेस ने हिन्दुस्तान जिंक के मनमीत सिंह, पराग जैन और मोहम्मद अली को शीर्ष 100 ग्रेट मैनेजर्स में शामिल किया है। इसके अलावा शीर्ष 300 में से हिन्दुस्तान जिंक के 12 मैनेजर्स में नामित किया गया है। हिंदुस्तान जिंक के मुख्य कार्यकारी अधिकारी अरूण मिश्रा ने कहा कि इकोनॉमिक टाइम्स और पीपल बिजनेस द्वारा लगातार तीसरे वर्ष टॉप 100 ग्रेट मैनेजर्स की सूची में ग्रेट मैनेजर अवार्ड से हिंदुस्तान जिंक गौरवान्वित और सम्मानित है।

फिजियोथैरेपी कॉलेज का उद्घाटन

उदयपुर। सनराइज ग्रुप के उदयपुर फिजियोथैरेपी कॉलेज की नई बिल्डिंग का उदयपुर जिला कलेक्टर ताराचंद मीणा, उदयपुर सीएम एचओ डॉ. शंकर बामनिया, उदयपुर के आईएमए के अध्यक्ष डॉ. आनंद गुप्ता ने उद्घाटन किया। चैयरमैन हरीश राजानी ने बताया कि उदयपुर में पहला फिजियोथैरेपी कॉलेज है जो राजस्थान यूनिवर्सिटी ऑफ हेल्थ साइंस से मान्यता प्राप्त है।

कल्याण सिंह पुनः महामंत्री बने

उदयपुर। पुरी (उड़ीसा) में आयोजित राष्ट्रीय खान मजदूर फेडरेशन के अधिवेशन में राष्ट्रीय कार्यकारिणी के चुनाव हुए। इसमें कल्याण सिंह शक्तावत पुनः महामंत्री चुने गए।

शराफत बने वाइस चेयरमैन

उदयपुर। राजस्थान बोर्ड ऑफ मुस्लिम वक्फ कमेटी के चेयरमैन डॉ. खानू खान बधुवाली की अनुशंसा पर उदयपुर जिला वक्फ कमेटी के चेयरमैन मोहम्मद सलीम शेख ने शराफत खान को उदयपुर जिला वक्फ कमेटी का वाइस चेयरमैन नियुक्त किया है।

बाल मित्र पंचायत राज्यस्तरीय कार्यशाला

उदयपुर। राजस्थान एससी विकास एवं वित्त आयोग के अध्यक्ष (राज्यमंत्री) डॉ. शंकर यादव ने कहा कि बच्चों के साथ शोषण की घटनाएं रोकने के लिए ग्राम एवं पंचायत स्तर तक की बाल सरंक्षण समितियां सशक्त हो। डॉ. यादव जिला प्रशासन, यूनिसेफ और गायत्री सेवा संस्थान की ओर से आयोजित राज्यस्तरीय कार्यशाला में बतौर मुख्य अतिथि बोल रहे थे। कलक्टर ताराचन्द मीणा ने कहा कि बाल मित्र पंचायत बनाने में प्रशासन एवं स्थानीय स्वयंसेवी संस्थाओं की अहम भूमिका है। कार्याशाला संयोजक डॉ. शैलेन्द्र पण्ड्या ने उद्देश्यों पर प्रकाश डाला। प्रमुख वक्ता पद्मश्री डॉ. श्याम सुन्दर पालीवाल, डॉ. सुमतीलाल बोहरा, डॉ. महावीर जैन, राजस्थान जनजाति परामर्शदात्री एवं राजस्थान बीस सूत्री कार्यक्रम सदस्य लक्ष्मीनारायण पण्ड्या, यूनिसेफ राजस्थान के बाल अधिकार विशेषज्ञ संजय कुमार निराला थे।

खादी मेले में 2.30 करोड़ की बिक्री

उदयपुर। राजस्थान खादी तथा ग्रोमोद्योग बोर्ड जयपुर एवं जिला उद्योग व वाणिज्य केन्द्र उदयपुर के संयुक्त तत्वावधान में टाउन हॉल में आयोजित 17 दिवसीय संभाग स्तरीय खादी ग्रामोद्योग प्रदर्शनी के समापन में मुख्य अतिथि राजस्थान खादी ग्रामोद्योग बोर्ड के अध्यक्ष बृजकिशोर शर्मा, विशिष्ट अतिथि लक्ष्मीनारायण पंड्या व शारदा रोत थी। अध्यक्षता पूर्व सांसद रघुवीर मीणा ने की। प्रदर्शनी संयोजक गुलाब सिंह गरासिया ने कहा कि इस वर्ष लक्ष्य से अधिक 2 करोड़ तीस लाख की बिक्री कर एक कीर्तिमान स्थापित किया गया है। समापन समारोह में 17दिनों में सर्वाधिक बिक्री करने वाली संस्थाओं को पुरस्कृत किया गया। संचालन राजेन्द्र सेन ने किया। इसका उद्घाटन संभागीय आयुक्त राजेन्द्र भट्ट, लक्ष्मी नारायण पण्ड्या व पंकज कुमार शर्मा ने किया था।

कला आश्रम में फ्रेशर पार्टी

उदयपुर। कला आश्रम आयुर्वेद मेडिकल कॉलेज एंड हॉस्पिटल गोगुंदा में फ्रेशर पार्टी समारोह 2022 हुई। शुभारंभ मुख्य अतिथि कला आश्रम फाउण्डेशन के मुख्य प्रबंधक न्यासी डॉ. दिनेश खत्री एवं सरंक्षक न्यासी डॉ. सरोज शर्मा ने किया। मिस्टर फ्रेशर गौरव मेहरा एवं मिस फ्रेशर रश्मि व्यास एवं मिस रनरअप में चारू एवं मिस्टर रनरअप शोएब रहे।

क्लासिकल डांस एंड म्यूजिक फेस्टिवल के पोस्टर का विमोचन

उदयपुर। कथक आश्रम उदयपुर और ऑल इंडिया डांसर्स एसोसिएशन की ओर से 6 से 8 जनवरी तक सुखाड़िया रंगमंच में हुए 5वें अंतरराष्ट्रीय क्लासिक डांस एंड म्यूजिक फेस्टिवल के पोस्टर का विमोचन लक्ष्यराज सिंह मेवाड़ ने किया। इस दौरान फेस्टिवल आयोजक कथक आश्रम की डायरेक्टर चंद्रकला चौधरी फेस्टिवल के सह-आयोजक बी.बी. क्रिएटिव वर्ल्ड के निदेशक विकास जोशी सहित आयोजन से जुड़े प्रतिनिधि मौजूद रहे।

शपथ ग्रहण एवं कैलेंडर का विमोचन

उदयपुर। नेमिनाथ दिगंबर जैन मंदिर नोखा रोड, सेक्टर 3 में श्री दिगम्बर जैन बीसा नरसिंहपुरा तेरापंथ समाज की नव गठित कार्यकारिणी का शपथ ग्रहण एवं कैलेंडर विमोचन कार्यक्रम हुआ। मुख्य अतिथि नेता प्रतिपक्ष विधानसभा गुलाबचंद कटारिया थे। अध्यक्षता प्रमोद सामर ने की। विशिष्ट अतिथि कुंथु कुमार गणपतोत, शांतिलाल वेलावत, दिनेश सोनी, ऋषभ जसीगोत, विनोद फान्दोत थे। अतिथियों ने आचार्य विद्या सागर की तस्वीर पर दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम की शुरूआत की। प्रचार मंत्री गीतेश दामावत ने बताया कि मुख्य अतिथि कटारिया ने नई कार्यकारिणी को शपथ ग्रहण करवाई। नवनिर्वाचित संरक्षक महेंद्र टाया, अध्यक्ष पारस सिंघवी, महामंत्री राजेंद्र, अखावत एवं कार्यकारिणी ने शपथ ली।

कैलेण्डर विमोचन व चिकित्सा जांच शिविर

उदयपुर। उदयपुर मार्बल एसोसिएशन की ओर से एसोसिएशन परिसर में कैलेण्डर विमोचन व अपोलो हॉस्पीटल अहमदाबाद के साथ नि:शुल्क सुपर स्पेशलिटी एवं स्वास्थ्य परिचर्चा शिविर का आयोजन किया गया। मार्बल एसोसिएशन अध्यक्ष पंकज कुमार गंगावत ने बताया कि शिविर में कोरोना महामारी से सावधानी के बारे मे सुझाव व मार्गदर्शन दिया गया।

उप तहसीलदार नागदा का अभिनंदन

उदयपुर। सराड़ा तहसील की जयसमंद उप तहसील के उप तहसीलदार लहरीलाल नागदा, गायफल का गत दिनों उनकी 39 वर्षीय उपलब्धि मूलक सेवाओं के लिए गातोड़ मंदिर में सर्कल के सभी पटवारियों, भू. अभिलेख निरीक्षकों, उपतहसीलदारों व सरपंचों की उपस्थिति में अभिनंदन किया गया। मुख्य अतिथि तहसीलदार सराड़ा श्रीमती कीर्ति भारद्धाज थीं। अध्यक्षता प्रधान गंगाराम मीणा ने की। विशिष्ट अतिथि सेमारी तहसीलदार पीरूलाल जीनगर थे। इस अवसर पर बड़ी संख्या में क्षेत्र के गणमान्य नागरिक, परिजन व कृषक भी मौजूद थे।

एमपी के राज्यपाल से अरूण जोशी सम्मानित

जयपुर। मध्यप्रदेश के राज्यपाल मंगुभाई पटेल ने राजस्थान सरकार द्वारा डिजिटल मीडिया के क्षेत्र में जनकल्याणकारी योजनाओं को आमजन एवं लाभार्थियों तक पहुंचाने के लिए इफेक्टिव गवर्नमेंट कम्युनिकेशन अवार्ड प्रदान किया है। सूचना एवं जनसंपर्क विभाग के अतिरिक्त निदेशक अरूण जोशी ने पीआरएसआई द्वारा भोपाल में आयोजित 44वें वार्षिक अधिवेशन में उक्त पुरस्कार ग्रहण किया। इस अवसर पर सांसद राव उदय सिंह, पीआरएसआई के राष्ट्रीय अध्यक्ष अजीत पाठक सहित विभिन्न राज्यों से जनसंपर्क प्रोफेशनल उपस्थित थे।

तरूण दाधीच को बाल साहित्यकार सम्मान

उदयपुर। साहित्य मंडल नाथद्वारा की मेजबानी में सम्पन्न भगवती प्रसाद देवपुरा स्मृति एवं राष्ट्रीय बाल साहित्य समारोह में तरूण कुमार दाधीच को बाल साहित्य के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए सम्मानित किया गया।

दिव्या बनी सी.ए.

उदयपुर। सेक्टर 14 निवासी दिव्या शर्मा को सीए की डिग्री प्रदान की गई है। दिव्या ने इसका श्रेय माता-पिता श्रीमती लक्ष्मी-दिनेश शर्मा (नागदा) व दादा-दादी स्व. वैद्य भगवान लाल शर्मा-कमला शर्मा को दिया है।

झगड़ावत अध्यक्ष एवं भंडारी महामंत्री

उदयपुर। श्री पुष्कर गुरू साधना केंद्र सेक्टर-3 कार्यकारिणी के संपन्न चुनाव में श्याम झगड़ावत अध्यक्ष एवं संजय भंडारी को महामंत्री नियुक्त किया गया। महासाध्वी विनय प्रभाजी के सानिध्य में सम्पन्न हुई बैठक में महा साध्वी राजश्री ने यह घोषणा की।

शॉपर्स स्टॉप स्टोर का शुभारंभ

उदयपुर। भारत में फैशन एंड ब्यूटी के सबसे बड़े डेस्टीनेशन, शॉपर्स स्टॉप ने उदयपुर में अपने स्टोर का शुभारंभ अर्बन स्क्वायर मॉल, उद्योग विहार में किया। फैशन को पसंद करने वाले लोगों की मांग को पूरा करने हेतु इसे शुरू किया गया है। शॉपर्स स्टॉप के वेणु नायर, कस्टमर केयर एसोसिएशन, एमडी एवं सीइओ ने कहा कि हमें खुशी है कि उदयपुर में पहले स्टोर के लॉन्च के साथ हमने प्रदेश में कदम रखा है।

जिला कलक्टर को नव वर्ष स्टीकर भेंट

उदयपुर। सूक्ष्म कृति शिल्पकार चन्द्रप्रकाश चित्तौड़ा ने जिला कलक्टर ताराचंद मीणा को नववर्ष-2023 की शुभकामनाओं का हस्त निर्मित सूक्ष्म स्टीकर प्रदान करते हुए उदयपुर के विकास में उनके अप्रतिम योगदान के लिए आभार व्यक्त किया और उन्हें एशिया के इस सुन्दरतम शहर को इसी तरह विकास के पायदान चढ़ाते रहने की कामना की।

भीमसिंह की केबिनेट मंत्री से भेंट

उदयपुर। समाजसेवी भीमसिंह चुण्डावत ने गत दिनों जयपुर में पंचायती राज मंत्री रमेश मीना से मुलाकात की। इस दौरान चुण्डावत ने उन्हें उदयपुर जिले में हो रहे विकास कार्यों के संबंध में जानकारी दी और ग्रामीण विकास से संबंधित कुछ आवश्यकताओं के बारे में अवगत कराया।

सांसद द्वारा 'लोटस स्टार' लोगों का विमोचन

उदयपुर। राज्यसभा सांसद रामचन्द्र जांगड़ा ने उदयपुर के युवा उद्यमी प्रवीण सुथार से मुलाकात की और उनकी कम्पनी लोट्स हाईटेक इंडस्ट्रीज का अवलोकन किया। उन्होंने लोटस की प्रीमियम प्री इंजीनियर्ड बिल्डिंग ब्रांड लोटस स्टार का लोगों भी लांच किया। इस अवसर पर संस्थापक प्रवीण सुथार, गीतेश जांगिड़, मनीष भाणावत, भानुप्रिया जैन, संजय गोयल, मुकेश सुथार आदि उपस्थित थे।

संवेदना/श्रद्धांजलि

उदयपुर। श्री गोवर्धनलाल जी पालीवाल सुपुत्र स्व. धनराजजी पालीवाल का 18 जनवरी को मावली-साकरोदा में देवलोकगमन हो गया। वे अपने पीछे शोकमग्न धर्मपत्नी श्रीमती विमला देवी, पुत्र उदयलाल (डीन एंड डायरेक्टर, इंस्टी. ऑफ कॉमर्स, निरमा यूनिवर्सिटी, अहमदाबाद), रामेश्वर, पुत्री श्रीमती सज्जन, श्रीमती कला, श्रीमती भगवती, श्रीमती गीता व श्रीमती मंजुला सहित पौत्र-पौत्रियों, दोहित्र-दोहित्रियों का समृद्ध परिवार छोड़ गए हैं।

उदयपुर। श्रीमती चन्द्रबाई धर्मपत्नी स्व. शांतिलाल जी चित्तौड़ा (तितरड़िया) का 1 जनवरी को निधन हो गया। वे अपने पीछे व्यथित हृदय पुत्र ललित प्रकाश, ओमप्रकाश, सुभाष व पुत्रवधू डॉ. प्रमिला (स्व.) नरेश चित्तौड़ा, पौत्र-पौत्रियों व दोहित्रियों तथा पुत्री श्रीमती शंकुलता गुड़िया व स्व. अंजना का भरापूरा परिवार छोड़ गई हैं।

उदयपुर। श्री शिवदयालजी मंगल का 30 दिसम्बर 22 को आकस्मिक निधन हो गया। वे अपने पीछे शोक संतप्त धर्मपत्नी श्रीमती दयावती, पुत्र महेश मंगल, डॉ. रविन्द्र मंगल, पुत्रियां डॉ. कुसुम चौधरी, कमलेश गुप्ता व ललिता गर्ग सहित पौत्र-पौत्रियों व दोहित्र-दोहित्रियों का संपन्न व समृद्ध परिवार छोड़ गए हैं।

उदयपुर। श्रीमती तीजीबाई (शतायु) धर्मपत्नी स्व. भंवरलाल जी बापना का 2 जनवरी को देहावसान हो गया। वे अपने पीछे शोकाकुल पुत्र नंदलाल, अमरसिंह, छगनलाल, जितेन्द्र मांगीलाल, बसंती लाल, तेजसिंह व देवीलाल तथा पुत्री श्रीमती मोहनबाई सहित पड़पौत्र-पौत्रियों, पड़दोहित्र-दोहित्रियों का भरापूरा परिवार छोड़ गई हैं।

उदयपुर। संगीतज्ञ एवं समाजसेवी श्री सुधाकर पीयूष सुपुत्र स्व. पन्नालाल जी पीयूष (स्वतंत्रता सेनानी) का 5 जनवरी को आकस्मिक निधन हो गया। वे अपने पीछे व्यथित हृदय धर्मपत्नी श्रीमती रेखा देवी, पुत्रियां, श्रीमती ऋचा शर्मा व मेघा सर्वा तथा भाई-भतीजों, दोहित्र-दोहित्रियों का भरापूरा परिवार छोड़ गए हैं।

उदयपुर। श्री तुलसीदास जी वैष्णव का 24 दिसम्बर 22 को स्वर्गवास हो गया। वे अपने पीछे शोक संतप्त पुत्र छगनलाल व लक्ष्मीकांत, पुत्रियां श्रीमती विमला व श्रीमती ललिता व पड़पौत्र-पौत्रियों, दोहित्र-दोहित्रियों का संपन्न परिवार छोड़ गए हैं।

उदयपुर। वरिष्ठ पत्रकार श्री हरिशंकर उपाध्याय का 22 दिसम्बर 22 को निधन हो गया। वे अपने पीछे व्यथित हृदय धर्मपत्नी श्रीमती मालती देवी, पुत्र भारत प्रकाश उपाध्याय, पुत्रियां श्रीमती चन्द्रमणि शर्मा व श्रीमती मणी पांडे तथा पौत्र-पौत्रियों व दोहित्र-दोहित्रियों का भरापूरा परिवार छोड़ गए हैं। उनके निधन पर वरिष्ठ पत्रकार विष्णु शर्मा हितैषी, शैलेश व्यास, उग्रसेन राव, बृजमोहन गोयल, राजेश वर्मा, सुभाष शर्मा, अजय आचार्य, प्रमोद खाब्या सहित विभिन्न राजनैतिक दलों व पत्रकार संगठनों ने दु:ख व्यक्त किया है।

उदयपुर। श्री भीम शंकर जी नागदा सुपुत्र स्व. किशनलाल जी (मिस्त्री) नागदा का 3 जनवरी को देहावसान हो गया। वे 83 वर्ष के थे। वे अपने पीछे शोकमग्न धर्मपत्नी श्रीमती तुलसीदेवी, पुत्र बाल मुकुन्द, दामोदर व कांतिलाल नागदा, पुत्री केसर नागदा (पूर्व पार्षद), पौत्र-पौत्रियों, दोहित्र-दोहित्रियों व भाई-भतीजों का विशाल नागदा-चान्द्रायण परिवार छोड़ गए हैं।

उदयपुर। श्री शंकरलाल जी भोजन-जैन (ज्योति स्टोर) का आकस्मिक स्वर्गवास 21 दिसम्बर 22 को हो गया। वे अपने पीछे व्यथित हृदय धर्मपत्नी श्रीमती केसरदेवी, पुत्र ज्योति प्रकाश व चेतनप्रकाश, पुत्रियां श्रीमती भारती रांटिया, श्रीमती जागृति मेहता व पौत्र-पौत्रियां, दोहित्र-दोहित्रियों तथा भाई-भतीजों का संपन्न परिवार छोड़ गए हैं।

उदयपुर। श्रीमती सावित्री देवी जी सेठिया (धर्मपत्नी स्व. रामस्वरूपजी) का देवलोकगमन हो गया। वे अपने शोकाकुल पुत्र राजीव रामरतन (चेतन) सेठिया, पुत्री श्रीमती मधु लढ्ढा व अनुराधा, ईनाणी, पौत्र-पौत्रियों, दोहित्र-दोहित्रियों का संपन्न परिवार छोड़ गई हैं।

उदयपुर। एडवोकेट श्री रघुनंदन जी शर्मा का 8 जनवरी को देवलोकगमन हो गया। वे अपने पीछे शोक संतप्त पुत्र एडवोकेट अनुराग शर्मा, पुत्री डॉ. श्वेता शर्मा व पौत्र-पौत्री, दोहित्र-दोहित्री सहित भरापूरा शर्मा-त्रिपाठी परिवार छोड़ गए हैं।

उदयपुर। उपमहापौर पारस सिंघवी की मातुश्री श्रीमती सुंगधदेवी (धर्मपत्नी स्व. जियालालजी सिंघवी) का 16 जनवरी को देहावसान हो गया। वे अपने पीछे व्यथित हृदय पुत्र पारस सिंघवी सहित प्रपौत्र-प्रपौत्रियों का समृद्ध व संपन्न परिवार छोड़ गई। उनके निधन पर विधानसभा में प्रतिपक्ष नेता गुलाबचंद कटारिया भाजपा शहर व देहात के अध्यक्ष क्रमश: रवीन्द्र श्रीमाली, चन्द्रगुप्त सिंह चौहान, महापौर जी.एस. टांक, कांग्रेस नेता गोपाल कृष्ण शर्मा, त्रिलोक पूर्बिया, लालसिंह झाला सहित अन्य राजनैतिक व सामाजिक संगठनों ने गहरा शोक व्यक्त किया है।

उदयपुर। वरिष्ठ पत्रकार श्री राजेश जी वैष्णव का 8 जनवरी को देहावसान हो गया। वे अपने पीछे शोक संतप्त पिता श्री शंकरलाल जी, पुत्री हिमांशी व भाई-भतीजों का समृद्ध परिवार छोड़ गए हैं। विभिन्न पत्रकार संगठनों ने उनके निधन पर दु:ख व्यक्त करते हुए श्रद्धा सुमन अर्पित किए।

The Icon to Luxuriate

SHIVA export company

8, Bhatt Ji ki Bari, Udaipur-313001, Rajasthan, INDIA
Tel. : +91-294-2418228, Fax : +91-294-2414643
Cell : +91 99280 37747, 96800 02120
E-mail : shivaexport@gmail.com | Website : www.shivaexport.in

Hotel Yois

A unit of bhmpl

Elegant

Multi-Functional Hall

The Occasion

Wedding & Special Events

Silver Spoon

Multi-cuisine Restaurant ■ Pure Veg.

The Regal

Multi-Functional Garden

Plot No.8 Nr. Mahila Police Thana, 100 FEET Road, Roop Nagar Bhuwana,
Opp. The Occasion Wedding & Special Event Garden,
Udaipur 313001 Rajasthan, India.
Contact : 8239366888, 8239466888, 9828596555
email: gm@hotelyois.com reservations@hotelyois.com

राजस्थान जनजाति क्षेत्रीय विकास सहकारी संघ लि.
"जनजाति विकास भवन" प्रतापनगर, उदयपुर (राज.)
सहकारिता के आधार पर जलाशय मत्स्य पालन एवं मत्स्याखेट – रोजगार का अतिरिक्त साधन

राजस्थान राजपत्र विशेषांक फरवरी 5,2021 के भाग –3 (ख) में प्रकाशित मत्स्य विभाग की अधिसूचना दिनांक जनवरी 13,2021 के अनुसार नगरपालिका द्वारा प्रशासित क्षैत्रो को छोडकर राजस्थान के अनुसूचित क्षैत्रो में स्थित जलाशयों को, रजिस्ट्रीकृत जनजाति मछुआरा सहकारी सोसाइटी को नियम 5 के उप–नियम (5) के खण्ड (1) के उपखण्ड (ख) के अधीन अवधारित आरक्षित कीमत पर आवंटन करने के प्रावधान किये गये है। "ख" प्रवर्ग के जलाशय का जिला परिषद द्वारा तथा "ग" और "घ" प्रवर्ग के जलाशय का पंचायत समिति द्वारा आवंटन किया जावेगा।

ग्राम सभा से अनुमोदित लाभान्वित समूह के द्वारा सहकारिता विभाग में प्रस्तावित जनजाति मत्स्य सहकारी समिति का पंजीकरण करने के लिये ऑन–लाईन आवेदन प्रेषित करना होगा।

आवेदन प्रस्ताव के क्रम में संबधित पंचायती राज सस्थाओं के द्वारा मत्स्याखेट हेतु जलाशय आवंटन होने की स्थिति में राजससंघ के द्वारा मत्स्य प्रशिक्षण, प्रथम वर्ष हेतु शत प्रतिशत अनुदान व तत् पश्चात आगामी वर्षो के लिये पचास प्रतिशत अनुदान पर मत्स्य बीज संचय सहायता, एवं नाव जाल सहायता इत्यादि उपलब्ध कराये जाने का प्रावधान है।

स्थानीय जनजातियों के समूह द्वारा संबंधित ग्राम पंचायत की ग्राम सभा से स्थानीय जलाशय पर सहकारिता के आधार पर मत्स्य पालन व मत्स्याखेट के माध्यम से रोजगार का साधन प्राप्त करने के लिये लाभान्वित सदस्यों के समूह का प्रस्तावित समिति गठन प्रस्ताव के अनुमोदन की प्राप्ति के लिये कम से कम 16 जनजाति लाभान्वित सदस्यों का समूह तथा 16 हेक्टर औसतन जल फैलाव क्षैत्र का बारहमासी जलाशय होना चाहिये

स्थानीय जनजाति समूह की जनजाति मत्स्य सहकारी समिति का पंजीकरण होने की स्थिति में राजस्थान मत्स्य (संशोधन) नियम 2021 के प्रावधान के अनुरूप स्थानीय जलाशयों को पंजीकृत जनजाति मछुआरा सहकारी सोसाइटी के नियम 5 के उपनियम (5) के खण्ड (1) उपखण्ड (ख) के अधीन अवधारित आरक्षित कीमत पर आवंटित किये जाने के लिये राजससंघ के माध्यम से संबधित पंचायती राज संस्थाओं को आवेदन प्रस्ताव प्रेषित किया जाना होगा।

विस्तृत जानकारी के लिये संपर्क करे –

मत्स्य विपणन अधिकारी, राजससंघ लि0, उदयपुर
(दूरभाष 0294–2491740)
सहायक मत्स्य विकास अधिकारी, राजससंघ लि0, बांसवाडा
(दूरभाष 02962–254268)
सहायक मत्स्य विकास अधिकारी, राजससंघ लि0, डूंगरपुर
(दूरभाष 02964–232290)
स.म.वि अधिकारी, राजससंघ लि0, प्रतापगढ़ (दूरभाष 01478–222132)

प्रकाशन की तिथि प्रत्येक माह की 23 तारीख वर्ष 20 अंक 10, Postal Registration No. RJ/UD/29-62/2021-23 Posting Date: 27th-28th of Every Month RNI No. RAJHIN/2003/9297 Posting Office: Chetak Circle, Udaipur

'प्रत्यूष' पत्रिका डिलिवर्ड न होने की स्थिति में इस पते पर लौटाएं: पंकज कुमार शर्मा, 2, रक्षाबंधन, मेहतों का पाड़ा, धानमण्डी, उदयपुर (राज.) 313 001

MARUTI SUZUKI

भारत का नं. 1 डिलर टेक्नॉय मोटर्स

सभी सुविधाएं एक छत के नीचे :-

- नई कार का डिसप्ले
- पूरा ऑटोमेटिक और नई टेक्नोलॉजी के साथ नया सर्विस सेन्टर
- नई कार की डिलीवरी
- तुरन्त फाईनेन्स
- एक्सिडेन्टल क्लेम रिपेयर
- बॉडी रिपेयर
- मारुति जीनाइन एसेसरीज

और भी बहुत कुछ.....

TECHNOY MOTORS INDIA PVT LTD

(SINCE 1996)

UDAIPUR I SAGWARA I FATEHNAGAR I BHINDER I REODAR I KHERWARA I CHITTORGARH I JHADOL

MARUTI SUZUKI ARENA NEXA MARUTI SUZUKI COMMERCIAL TRUE VALUE